विजय सिद्धि विशेषांक
सितम्बर-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 12
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
नवरात्रि साधना
क्षेत्रपाल साधना
अनन्त साधना
पितृ मुक्ति साधना

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है। परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- → हनुमान यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्चा) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/- → लक्ष्मी यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्चा) = 450

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

मनोवांछित कार्य सम्पन्न करने में सहायक : अप्सरा साधना

कष्टों का पूर्ण रूपेण निवारण हेतु : नवरात्रि साधना

पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु : श्राद्ध विधान

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

शिष्य धर्म 34

गुरुवाणी 35

नक्षत्रों की वाणी 46

मैं समय हूँ 48

वराहमिहिर 49

एक दृष्टि में 66

इस मास दीक्षा 67

साधनाएँ

लक्ष्मी विनायक साधना 20

अनन्त साधना 21

धनप्रदाता अप्सरा सा. 25

नवरात्रि साधना सिद्धि 36

पितृमुक्ति श्राद्ध विधान 41

ज्वालामालिनी साधना 50

विजय दशमी- क्षेत्रपाल साधना 51

पापांकुशा एकादशी पाप शमन प्रयोग 53

कर्ण पिशाचिनी प्रयोग 54

ENGLISH

Dhanada Yakshini Sadhana 64

Medha Sadhana 65

विशेष

मन पर नियंत्रण 27

राधा-कृष्ण चरण चिह्न 29

मृत्यु कैसे होती है 32

लोभ एवं कामनाओं पर विजय 44

आयुर्वेद

आवाज को सुरीला 24

योग

वज्रासन 28

सरस्वती पूजन दिवस

सरस्वती दीक्षा एवं ज्ञान दीक्षा 57

ज्योतिष

सूर्य रेखा 60

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

शिवत्वं सदा सर्व कल्याण रूपं;
जरा मृत्यु रोगं क्लेश कष्टं हरेण्यं।
शिवः गुरु र्न भेदो एक स्वरूपं;
तस्मै नमः गुरु पूर्णं शिवत्व रूपं।।

भगवान शिव हमेशा कल्याणकारी समस्त प्राणियों के दुःख, कष्ट, बुढ़ापा, रोग आदि दूर करने वाले औढरदानी कृपामय हैं, शास्त्रों के अनुसार गुरु और शिष्य में कोई भेद नहीं है, एक ही स्वरूप हैं, इसलिए मैं शिवमय गुरुदेव को भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ।

समर्पण

कथा महाभारत युद्ध की है। अश्वत्थामा ने अपने पिता की छलपूर्ण हत्या से कुंठित होकर 'नारायणास्त्र' का प्रयोग कर दिया। स्थिति बड़ी अजीब पैदा हो गई। एक तरफ नारायणास्त्र और दूसरी तरफ साक्षात् नारायण। अस्त्र का संधान होते ही भगवान ने अर्जुन से कहा–'गांडीव को रथ में रखकर नीचे उतर जाओ और हाथ जोड़कर नमन की मुद्रा में खड़े हो जाओ'...। अर्जुन ने न चाहते हुए भी ऐसा ही किया और श्रीकृष्ण ने भी स्वयं ऐसा ही किया। नारायणास्त्र बिना किसी प्रकार का अहित किए वापस लौट गया, उसने प्रहार नहीं किया; लेकिन भीम तो वीर था, उसे अस्त्र के समक्ष समर्पण करना अपमान सा लगा। वह युद्धरत था, उसे छोड़कर सभी नारायणास्त्र के समक्ष नमन मुद्रा में खड़े थे। नारायणास्त्र पूरे वेग से भीम पर केन्द्रित हो गया। मगर इससे पहले कि भीम का कुछ अहित हो, नारायण स्वयं दौड़े और भीम से कहा–'मूर्खता न कर! इस अस्त्र की एक ही काट है, इसके समक्ष हाथ जोड़कर समर्पण कर, अन्यथा तेरा विध्वंस हो जायेगा।'

भीम ने रथ से नीचे उतर कर ऐसा ही किया और नारायणास्त्र शांत होकर वापस लौट गया, अश्वत्थामा का वार खाली गया।

यह प्रसंग छोटा सा है, पर अपने अन्दर गूढ़ रहस्य छिपाये हुये है... जब नारायण स्वयं गुरु रूप में हों, तो विपदा आ ही नहीं सकती, जो विपदा आती है, वह स्वयं उनके तरफ से आती है, इसलिए कि वह अपने शिष्यों को कसौटी पर कसते हैं... कई बार विकट परिस्थितियाँ आती हैं और शिष्य टूट सा जाता है, उससे लड़ते-लड़ते। उस समय परिस्थिति पर हावी होने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता रहता है समर्पण का... वह गुरुदेव के चित्र के समक्ष नतमस्तक होकर खड़ा हो जाए और भक्तिभाव से अपने आपको गुरु-चरणों में समर्पित कर दे और पूर्ण निश्चिंत हो जाए... धीरे-धीरे वह विपरीत परिस्थित स्वयं ही शांत हो जायेगी... और फिर उसके जीवन में प्रसन्नता आ जायेगी।

**प्रथम प्रभुतं प्रणमेव रूपं गुरुवै सहम्यं सहदेव नित्यं
अचित्यं रूपं मपर वदैव दव्यं परेशा प्रणनं परेशं।।**

सद्‌गुरुदेव द्वारा दिये गये प्रवचन शाश्वत सत्य हैं जो पूरे मन-मस्तिष्क को हिलाकर रख देते हैं, इस प्रवचन में एक ऐसा ही आहवान है जिसे सुनकर-पढ़कर एक-एक रक्त कण स्पन्दित होने लगता है-

शास्त्रों में सैकड़ों ग्रंथ, हजारों ग्रंथ लिखे गए हैं, कोई एक या दो ग्रंथ नहीं, जब चारों वेदों की रचना हुई तो उन चारों वेदों को समझने क लिए उपनिषदों की रचना हुई। उपनिषद लिखे गए और 108 उपनिषदों में भी ऋषि अपनी पूरी बात नहीं कह पाए। उन 108 उपनिषदों की वजह से हमारी माला के मनके 108 होते हें। इसीलिए 108 की संख्या हम शुभ मानते हैं।

और इसीलिए उन 108 उपनिषदों में गुरु उपनिषद सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि वशिष्ठ ने यह कहा कि-

उपनिषदों वै गुरुर्वै सतांम्यो

कबीरा यह घर प्रेम का

अगर सब कुछ प्राप्त करना है तो गुरु उपनिषद के अलावा कोई ग्रंथ प्रामाणिक नहीं है। विश्वामित्र ने इसी प्रकार की बात कही है, अत्रि ने इसी प्रकार की बात कही है। यहां तक शंकराचार्य ने यह कहा कि मैंने अपने जीवन में समस्त ग्रंथों को निचोड़ा है, अनभुव किया है और मैं दावे के साथ यह कह सकता हूँ कि गुरु उपनिषद से बड़ा कोई ग्रंथ नहीं है–चाहे ऋग्वेद हो, चाहे यजुर्वेद हो, चाहे सामवेद हो, चाहे अथर्वेद हो। इसलिए नहीं है कि उन वेदों को समझने के लिए गुरु की ही आवश्यकता होती है। वही समझा सकता है कि वेद क्या है, वही समझा सकता है उपनिषद क्या है, वही समझा सकता है कि जीवन क्या है, वही समझा सकता है कि पूर्णता क्या है।

और मैंने जो श्लोक दिया है, वह गुरु उपनिषद का श्लोक है और इस श्लोक में बहुत ही उत्तम कोटि की बात कही गई है, उत्तम कोटि की बात इसलिए कि ठीक इसी श्लोक को शंकराचार्य ने भी कहा अपने शंकरभाष्य में जो कि उनका सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है और जिसका आज पूरे संसार में अनुवाद हुआ है, फ्रेंच में अनुवाद हुआ है, उसका सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है, उसका इंग्लिश में अनुवाद हुआ है। कठिन ग्रंथ है फिर भी इस बात को स्वीकार किया है अंग्रेज विद्वानों ने अमेरिकियों ने, फ्रांस के, जापान के, जर्मनी के विद्वानों ने कि इसमें जो भी तथ्य है वह अपने आप में अद्वितीय हैं।

और वही भाव शंकराचार्य ने अपने श्लोक में कहे हैं कि-

सदावै परेशं
गुरुर्वै पदे पूर्ण मदेव नित्यं
अचित्यं रूपं सहितं सदैवः
आत्मानुभूति परम परसं परैव।

उस श्लोक का अर्थ और इस श्लोक का अर्थ एक ही है। पर वह श्लोक लिखा गया आज से 3000 साल पहले। इसलिए हजारों सालों तक यह विचार हमारे शास्त्रों में मंथन करता रहा कि यही जीवन का सार है, यही जीवन का आधार है, यही जीवन की पूर्णता है।

ऐसा इस श्लोक में क्या है?

क्यों इस श्लोक में इतनी महत्ता दी गई है?

इस श्लोक में यह बताया गया है कि व्यक्ति अपने आप में पूर्ण है ही नहीं। पूर्ण तो प्रभु पैदा करता है। जब एक गर्भ में बालक होता है तो वह पूर्ण होता है। इसलिए पूर्ण होता है कि बहुत अच्छा उसको भीतर

अनुभव होता है।

इस श्लोक के भाष्य की बात कर रहा हूँ मैं, श्लोक का अर्थ तो बाद में करूँगा। इस श्लोक का भी भाष्य किया गया, इसका सरलार्थ किया गया, उस सरलार्थ का भी सरल अर्थ किया गया तब लोगों को कुछ समझ में आया।

उसने कहा कि बालक जब गर्भ में होता है तो उसे वैसी ही सुख-सुविधा होती है जैसी किसी करोड़पति को अपने ड्राइंग रूम में बैठने पर होती है। वहां न सर्दी लगती है न गर्मी लगती है क्योंकि एयर कंडीशन होता है, हीटर लगा होता है, एक सोफा लगा होता है बहुत अच्छा, उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती है और भोजन की चिंता नहीं होती, खाने-कमाने की चिंता नहीं होती। सब कुछ सुविधाएँ होती हैं।

ठीक वैसी ही सुविधाएं उस गर्भ के बालक को होती हैं। कोई तकलीफ नहीं होती, न सर्दी, न गरर्मी, न बरसात, न चिंता, न परेशानी, न तनाव और इसके बावजूद भी वह उन सब सूखों को लात मार करके जन्म ले लेता है। इसलिए उसको पूर्ण माना गया है। इतनी सुख-सुविधाओं को लात मार करके उस कोलाहल भरे विश्व में वह आ जाता है क्योंकि जन्म होते ही सैकड़ों बंधन उसके गले में पड़ जाते हैं, जिस मिनट में पैदा हुआ, अगर सात बजकर इक्तालिसवें मिनट में पैदा हुआ तो इक्तालिसवें मिनट में ही उसके 200 बंधन पड़ गए। किसी ने कहा मैं तुम्हारा चाचा हूँ, यह एक बंधन, दूसरे ने कहा कि मैं तुम्हारा पिता हूँ, तीसरे ने कहा मैं तुम्हारी माँ हूँ, चौथी ने कहा मैं तुम्हारी दादी हूँ, पांचवीं ने कहा मैं तुम्हारी नानी हूं। बस बंधन ही बंधन।

एक सैकंड नहीं हुआ है और इतने बंधन उसके गले में पड़ गए और ज्यों-ज्यों जन्म लेकर बड़ा होता रहता है त्यों-त्यों और बंधन उसके शरीर को जकड़ते रहते हैं। कोई कहता है मैं तेरी प्रेमिका हूँ, कोई कहती है मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। अंतिम क्षणों तक उन बंधनों में जकड़ा हुआ वह चिता पर जाकर सो जाता है।

जन्म से पहले वह ब्रह्म है, जन्म से पहले निर्विकल्प है, जन्म से पहले उसको किसी प्रकार का मोह नहीं है। मोह नहीं है इसलिए उस सुख-सुविधा को उस आनंद को वह छोड़कर जन्म ले लेता है।

इसलिए गर्भ के बालक को ब्रह्म कहा है और गर्भ से जन्म लेने के बाद उसको मनुष्य कहा गया है।

उस क्षण जब जन्म लेता है एक क्षण में उस वातावरण से इस वातावरण में आता है, उन्मुक्त भाव से उस बंधन के भाव में आता है तो वह बहुत व्यथित होता है, रोता है, बहुत दुःखी होता है, रोने-चिल्लाने लग जाता है।

और फिर वह दास गुलाम सा बन जाता है। एक जंगल के शेर को पकड़ कर लाएं और पिंजरे में डालें
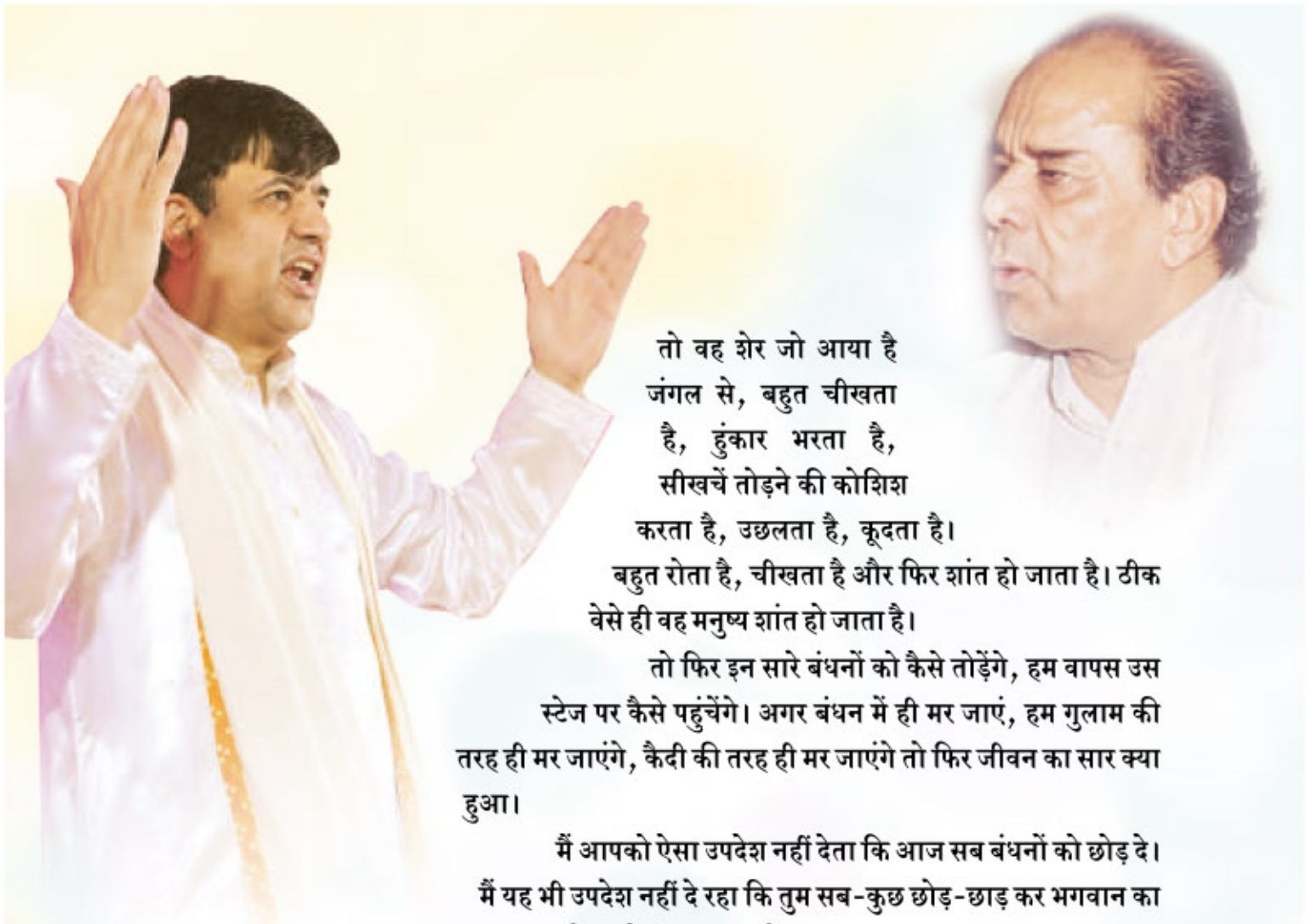
तो वह शेर जो आया है
जंगल से, बहुत चीखता
है, हुंकार भरता है,
सीखचें तोड़ने की कोशिश
करता है, उछलता है, कूदता है।

बहुत रोता है, चीखता है और फिर शांत हो जाता है। ठीक वेसे ही वह मनुष्य शांत हो जाता है।

तो फिर इन सारे बंधनों को कैसे तोड़ेंगे, हम वापस उस स्टेज पर कैसे पहुंचेंगे। अगर बंधन में ही मर जाएं, हम गुलाम की तरह ही मर जाएंगे, कैदी की तरह ही मर जाएंगे तो फिर जीवन का सार क्या हुआ।

मैं आपको ऐसा उपदेश नहीं देता कि आज सब बंधनों को छोड़ दे। मैं यह भी उपदेश नहीं दे रहा कि तुम सब-कुछ छोड़-छाड़ कर भगवान का भजन करो उससे ही सब कुछ हो जाएगा।

शंकराचार्य कहते हैं कि यों कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। अगर पूर्णता प्राप्त ही नहीं हुई तो जीवन का अर्थ क्या हुआ, जीवन का मर्म क्या हुआ जीवन का सार क्या हुआ। जीवन का आनंद क्या है फिर?

अगर तुम यह सोच रहे हो कि तुम जीवन का आनंद प्राप्त कर रहे हो तो यह तुम्हारी मृग तृष्णा है। यही तुम्हारी भूल है। हम सब अपने आप में एडजस्ट होने की कोशिश करते हैं कि हम बहुत सुखी हैं।

मगर सुखी आप इसलिए है। कि उस सुख को आपने देखा नहीं तो आप इसको सुख मान रहे हो। तुमने उस आनंद को देखा ही नहीं तो तुम कैसे कह सकते हो कि यह पूर्ण आनंद है। तुम्हारी जगह तुम्हारे मकान में जहां तुम रहते हो वहां किसी करोड़पति को रख दे तो वह कहेगा दो कमरों के मकान में कैसे रहेंगे, यहां नहीं रह सकते, बहुत गड़बड़ है, कोई सुख-कोई सुविधा नहीं है।

वह दुखी अनुभव कर रहा है और आप सुखी अनुभव कर रहे हैं। इसलिए कि आपने उस जीवन को नहीं देखा, भौतिक दृष्टि से। जिसने जीवन का आनन्द लिया ही नहीं, जिसने जीवन में परमहंस अवस्था को प्राप्त नहीं किया, जिसने अपने जीवन में साधना की नहीं, जो अपने जीवन में ध्यान में मेडिटेशन में गया ही नहीं वह कैसे समझेगा कि मेडिटेशन क्या है, ध्यान का आनंद क्या है?

जब तुमने कोई चीज खाई ही नहीं तो उस चीज का आनंद भी आप कैसे अनुभव कर सकते हैं, कैसे उसका वर्णन कर सकते हैं। जिसने मिठाई नहीं खाई वह मिठाई का वर्णन नहीं कर सकता। खाने के बाद ही वह

कह सकता है अच्छी है, बुरी है।

इस श्लोक के पहले अर्थ में कहा गया है यह सार तथ्य है क्योंकि उस बंधन से उस आनंद तक पहुंचने की जो क्रिया है अगर वह प्राप्त नहीं हुई तो फिर जीवन व्यर्थ है। फिर तो कीड़े-मकोड़ों वाला जीवन है।। वह तो हरेक जी लेता है। तुम जीवन जी नहीं रहे हो तुम भोग रहे हो। दोनों में अंतर है। मैं जीवन जी रहा हूँ, तुम भोग रहे हो। यह डिफरेंस है।

भोगने और जीने में अंतर यह है कि तुम हर हालत में दुखी होते रहते हो। नौकरी में चार दिन नहीं गए तो घबराहट कि –क्या कहेगा अफसर। पत्नी जोर से बोली तो घबराहट, दो दिन पत्नी नहीं बोले तो भी घबराहट, कि क्या हो गया इसको। हम पूछे कि भई तकलीफ क्या है तुझको, क्यों नहीं बोल रही है, काहे को गुस्सा हो गई है।

बोले तो तकलीफ, न बोले तो तकलीफ। संतान हो तो तकलीफ, संतान नहीं हो तो तकलीफ। बूढे मां-बाप घर में हों तो तकलीफ, नहीं हो तो तकलीफ। पैसा ज्यादा आए तो तकलीफ कि इन्कम टैक्स वाले आ जाएंगे, चोर आ जाएंगे और नहीं हो तो तकलीफ।

और तुम उस तकलीफ में सांस लेते रहते हो और बहुत सुखी महसूस करते हो कि मैं बहुत सुखी हूँ।

वह कुत्ता जिसके गले में पट्टा बंधा होता है बहुत अपने आप गर्व से ऊँचा उठकर चलता है कि इस गली के कुत्ते में कुछ नहीं है मैं बहुत बड़ा हूँ मेरे गले में पट्टा है। वह भी अकड़ कर चलता है। यह नहीं सोचता कि तेरे गले में पट्टा बंधा हुआ है, जंजीर लिए हुए वह साथ में चल रहा है।

मगर वह अकड़ कर चलता है और ज्योंहि वह गली का कुत्ता भौंकता है वह फट् से उसके पांव में आकर खड़ा हो जाता है। अगर पट्टा बांधे होने से ही जीवन में आनंद आता हो तो भी उसको कुत्ता ही कहते हैं, शेर नहीं कहते हैं। शेर के गले में पट्टा नहीं होता।

जीवन में अगर तुम आकाश में उड़े ही नहीं तो आप आकाश का आनन्द भी नहीं ले सकते हैं कि आकाश का आनंद क्या है। एक तोते को पकड़ा बहेलिये ने और पिंजरे में डाल दिया। अब पिंजरे के तोते में बड़ा गुरूर कि उसको कोई तकलीफ नहीं है, तकलीफ इसलिए नहीं कि उसके पांवों में पैंजनिया पहना दी उस मालिक ने उसे हरी मिर्च खाने को मिलती है, अनार के दाने खाने को मिलते हैं और बिल्ली उस पर झपटा मार नहीं सकती क्योंकि पिंजरे में बंद है और वह बहुत खुश है कि पिंजरे में बंद है। अब उसका छः-महीने या साल भर पिंजरे में रहने दीजिए और फिर बाहर निकालिए आप छोड़ दीजिए, वह उड़ ही नहीं सकता, उड़ना भूल गया वो, वो थोड़ा पंख फड़फड़ा कर थोड़ा ऊपर उड़ेगा और धम्म से नीचे जमीन पर गिर जाएगा और मालिक

को मालूम है कि बाहर बैठा रहने दें तो भी कहाँ जाएगा क्योंकि उड़ नहीं सकता। तुम्हारी हालत भी वैसी ही हो गई है पिंजरे में बैठे हो और पिंजरे के सींखचे एक पत्नी है, बेटे हैं, आसपास के लोग हैं, चाचा है, चाची है। चारों तरफ तीलियां बांधी हुई हैं और तुम बहुत खुश हो, कभी अनार के दाने खाने को मिल जाते हैं, कभी हरी मिर्च खाने को मिल जाती है और तुम बड़े खुश हो, पैरों में पैंजनिया बांधी है, पैंजनिया बजाते रहते हो।

बाहर निकलते हो थोड़ा पंख फड़फड़ाने की कोशिश करते हो धम्म से बैठ जाते हो और वापस पिंजरे में घुस जाते हो। पिंजरे में बहुत सुख है, बहुत आनन्द है वहां कोई डर नहीं है। यह सब तो सही है। मगर उस आकाश में उड़ने वाले तोते से तुम तुलना नहीं कर सकते, वह आनन्द कुछ और है जो पंख फैला कर एक मील तक उड़ कर चला जाता है, उस आनंद को तुम ले ही नहीं सकते, उस आनंद को तुमने देखा ही नहीं, उस आनन्द को तुम्हें बताएगा कौन कि आकाश में उड़ने में यह आनन्द है।

और अगर उस आंनद को देखा नहीं तो उस पिंजरे में पड़े-पड़े तुम मर जाओगे। उसमें तो कुछ बहादुरी है ही नहीं क्योंकि तुम्हें उन्होंने पिंजरे में डाल दिया और पिंजरे में डाला तुम्हारे बाप ने, मां ने, दादा ने, दादी ने कि हम दुखी हैं तो यह सुखी नहीं रहना चाहिए।

यह क्यों सुखी है, इसकी भी शादी करो। वे कहते हैं–बेटा शादी कर ले, बेटा शादी कर ले। वह कहता है कि मैं नहीं करना चाहता तो दादी रोती है कि पोते का मुंह नहीं देख कर मरूंगी तो नरक में जाऊंगी, बेटा एक बार पोते का मुंह दिखा दे और बेटा बहुत बहादुरी से खड़ा होता है कि लाओ शादी कर लेते हैं, अभी पोते का मुंह दिखाता हूँ और साल भर में सारे काम-धाम छोड़ कर पोते का मुंह दिखा देता है और वह सोचता है बहुत बहादुर है, बहुत खुश होता है और घर में ढोल इसलिए बजते हैं कि साला ठीक फंसा। हम तो फंसे हुए हैं

ही, अब यह भी फंसा जिंदगी भर रो, कमाता रह और खिलाता रह। पिंजरे का तोता है अब फड़फड़ाता रह, जाएगा ही कहाँ?

अभी तक तो चिंता थी कि कोई गुरु मिल गया बीच में और उड़ा कर ले गया तो क्या करेंगे पर अब वे निश्चिंत हैं कि यह कहीं नहीं जाएगा।

और वह सोचता है कि घर से बाहर रहूंगा तो पत्नी मर जाएगी मेरे बिना। शाम को बेचारी पांच बजे इंतजार करती रहती है और तुम चिता पर जाकर सो जाओ तो वह इंतजार कुछ नहीं करेगी, दूसरे दिन से खाना खाने लगेगी, पांचवे दिन तो खाना खाएगी ही खाएगी। गारंटी के साथ खाएगी। तुम्हारा यह एहसास है कि वह मर जाएगी।

तुमने उस आनंद को देखा नहीं। शंकराचार्य कह रहे हैं कि आनंद को नहीं देखा। आकाश में उड़ने के आनंद को नहीं देखा तो फिर जीवन का क्या महत्व है? पिंजरे में पड़े रहने में आनंद नहीं है ? कौन समझाएगा, तुम्हारे जो पंख मर गए हैं, उनको ताकत कौन देगा? कैसे मिलेगी ताकत? तुम्हारे पास तो ताकत की विद्या नहीं है और तुमने अगर नल के पानी को ही पीकर ही जिंदगी पार कर ली, कुएं के पानी को पीकर के, तालाब के पानी को पीकर के और ज्यादा जोश होगा तो गंगा का पानी पी लेंगे तो क्या वह आनंद प्राप्त हो जाएगा। मानसरोवर का पानी कभी पिया नहीं तुमने। स्वच्छ और एकदम शीतल पचहत्तर मील लंबी झील, एक दो मील नहीं पचहत्तर मील की कल्पना करिए।

इतनी लंबी, इतनी चौड़ी, इतनी गहरी कि ढाई सौ फिट गहरी और इतना साफ पानी कि आप एक सिक्का डाल दीजिए पानी के अंदर तो ढाई सौ फीट नीचे भी उसके अक्षर पढ़ लीजिए कि उसमें 1975 लिखा हुआ है। इतना साफ पानी आपने जिन्दगी में देखा नहीं। ऐसी झील भी आपने देखी नहीं।

इसलिए नहीं देखी कि आप हंस बने ही नहीं। हंस नहीं बने तो मानसरोवर जा नहीं सकते। कौए बन सकते हो, बगुले बन सकते हो और तुम बगुले हो।

हंस के भी सफेद पंख होते हैं तुम्हारे भी सफेद पंख हैं और एक बार बगुले ने सोचा कि हंस उड़ता है हम भी उड़ें। हमे में फर्क क्या है उसके भी चोंच है, मेरे भी चोच है। इसके सफेद पंख हैं और मेरे भी सफेद पंख है। यह पक्षी है, मैं भी पक्षी हूँ। इसमें कौन सी बड़ी बहादुरी है।

हंस उड़ा और बगुला भी उड़ा। आधा किलोमीटर जाते ही बगुला नीचे थककर गिर पड़ा और हंस उड़ता चला गया आकाश में 200 मील उड़कर वापस भी आ गया।

और हंस ने डुबकी लगाई मानसरोवर में तो पांच किलोमीटर दूर जाकर बाहर निकला। जब तुमने

मानसरोवर को देखा नहीं तो उस आनंद को नहीं देख पाओगे। उस ताल-तलैया के पानी में वो आनन्द नहीं है जो मानसरोवर के पानी में है। जब तुमने देखा ही नहीं तो कौन दिखाएगा तुम्हें? और घर वाले तुम्हें देखने देंगे नहीं क्योंकि वे तो एक ही बात सोचेंगे कि, इसे जाना नहीं चाहिए कहीं भी और इसके लिए सौ प्रकार के नाटक होंगे। पत्नी रोएगी, चीखेगी, चिल्लाएगी। पूछेगी–कहाँ जाते हो, उन गुरुओं के पास कुछ नहीं है, तुम घर में क्यों नहीं रहते।

चाचा कहेगा, दिमाग खराब है तुम्हारा। कुछ नहीं है, वे तुम्हें ठग रहे हैं, मूर्ख बना रहे हैं। हम तो नहीं गए तो हमारा क्या बिगड़ गया, हम कौन से मर गए? तुम भी नहीं मरोगे। तुम कहाँ जा रहे हो? तुम भी सोचते हो कि क्या करें और बेचारे मन मारकर बैठ जाते हो और फिर भी जाने लग जाओ तो पत्नी भूखी रह जाएगी। मरने लगेगी, बेहोश होने लगेगी, नाटक करेगी।

और तुम मन मान कर रह जाओगे, तुम सोचोगे इस बार नहीं अगली बार जाएंगे और हर बार यही सोचोगे, अगली बार जाएंगे, अगली बार जाएंगे और फिर बहुत सुंदर स्त्री जिसका नाम मृत्यु है वह आपको थपकी देकर सुला देगी।

इस जिंदगी में फिर गुरु नहीं मिलेगा, इसलिए नहीं मिलेंगे कि तुममें वह ताकत नहीं, हौसला नहीं। जब डुबकी लगाने की ताकत आएगी नहीं तो देख भी नहीं सकोगे तुम।

उस समुद्र के किनारे बैठ जाइए तो लहर आएगी, वह कुछ घोंघे लाएगी, कुछ सीपी लाएगी। उनसे झोली भरकर चले जाओगे घर। मोती नहीं ला सकते। तुमने मोती का आनंद लिया ही नहीं। एक चमकदार शुभ्र मोती नहीं मिलेगा यदि समुद्र में छलांग लगाने की ताकत नहीं है। इसलिए नहीं है कि तुम्हारे पंखों को मार दिया गया है, तुम्हारे घर वालों ने तुम्हारी ताकत को खत्म कर दिया है।

और कभी मैं उत्तेजित करता भी हूँ कि तुम चिंता मत करो। तोता बन कर देख लिया अब हंस बन कर देखो और फिर दोनों में से जो अच्छा लगे वह मानिए। यह कहता हूँ मैं। मगर तुम उड़ने की कोशिश करते हो, दो-तीन बार फड़-फड़ करते हो और फिर जमीन पर टिक जाते हो।

मैं पूछता हूँ कि क्या हुआ? तुम कहते हो कि गुरु जी घरवाली बहुत दुखी थी। घर से निकला, आपके यहाँ आ रहा था, मगर वह बीमार हो गई गुरुजी और उसने खाना नहीं खाया। रोने लगी गुरुजी, आप बात मानिए।

मैं तो मान रहा हूँ। तुमने एक सींखचा और ज्यादा बढ़ाया हुआ है। दूसरों के 18 तीलियां हैं, तुम्हारे 19 तीलियां हैं।

तुम मानसरोवर नहीं जा सकते, तुम आकाश में उड़ भी नहीं सकते। तुम उस आकाश का आनंद नहीं ले सकते क्योंकि आकाश में उड़ने की क्या क्षमता है, पंखों को फैलाकर ऊंचा उठने की क्या क्षमता है, मानसरोवर में डुबकी लगाने का क्या आनंद है, तुम अनुभव नहीं कर सकते।

और शंकराचार्य कह रहे हैं, कौन समझाएगा तुम्हें कि यह आनंद और है, कौन तीन सौ मील तक तुम्हें उड़ा कर ले जाएगा?

कौन ले जाएगा?

चाचा, चाची, मां, बाप, भाई, बहन?

उनके खुद के पंख मरे हुए हैं। वो तुम्हें कहां से उड़ाएंगे। जो मुर्दे हैं, वे तुम्हें कहां से जीवन दान देंगे? जिनमें खुद क्षमता नहीं वे तुम्हें क्या समझाएंगे।

मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि तुम पत्नी को छोड़ दो, मैं ऐसा भी नहीं कह रहा हूँ तुम अपने चाचाजी को छोड़ दो, मैं नहीं कहता अपने मां-बाप को छोड़ दो। मैं कह रहा हूँ कि उनके बीच रहकर भी अपने पंखों को फैलाकर आकाश में उड़ने की कला सीखिए। उनके बीच रहकर के।

आप पूछेंगे गुरुजी ऐसा कैसे हो सकता है। तो उदाहरण अपना खुद का प्रस्तुत करता हूँ कि मेरी भी पत्नी है, पुत्र हैं, पोते-पोतियाँ हैं, भाई हैं, बहन हैं, संबंधी, रिश्तेदार हैं और तुम से ज्यादा बड़ा कुनबा है, पूरे विश्व में अस्सी लाख शिष्य हैं, इतना बड़ा कुनबा है, उन सबकी तकलीफें सुनता हूं, उन सबकी परेशानियां सुनता हूं और फिर भी मुस्कराता रहता हूँ। आकाश में उड़ता भी हूं और डुबकी लगाता भी हूं। अगर मैं इतना सब कुछ होते भी उड़ सकता हूं तो मैं उदाहरण दे के समझा रहा हूं कि आप भी कर सकते हैं।

मैं कोई भगवा कपड़े पहने संन्यासी या साधु नहीं हूं। तुम्हारी तरह सारी जिम्मेदारियों को भी झेलते हुए उस आनन्द को प्राप्त कर सकता हूं। इसलिए चिंता मुझमें व्याप्त होती नहीं, तनाव होता नहीं। इसलिए रात को सोते ही मुझे नींद आ जाती है। इसलिए चेहरे पर एक ओज है, एक मस्ती है और मैं तुम्हारे चेहरे पर भी वैसी ही चाहता हूँ।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि यह सब कुछ तुम्हें गुरु ही समझा सकता है, तब जब तुम अपने आप को गुरु में पूरी तरह स्थापित कर दो। गुरु को पूर्ण रूप से अपने आप में समाहित कर दो और गुरु को पूर्ण रूप से समाहित करने का तात्पर्य क्या है? कैसे स्थापित कर दें, कैसे समाहित कर दें। समाहित कर अर्थ है अपने आपमें मिला देना जैसे पानी से पानी मिलता है, दूध से दूध मिलता है और तुम्हारे अंदर गुरु समाहित हो सकता है, बहुत सरल कला है। और प्रत्यक्ष समाहित होने से कितना फायदा होगा? जो कुछ

ज्ञान तुमने प्राप्त किया ही नहीं वह ज्ञान अपने आप मिल जाएगा। आपको मिलेगा क्यों नहीं, वह ज्ञान को लेकर आपके अंदर समाहित हो जाएगा।

एक गरीब घर की लड़की जिसके घर में खाने को रोटी नहीं और एक लखपति से शादी कर ले तो लखपति से शादी करते ही वह भी लखपति बन जाती है। आधा सेकेण्ड लगता है, ज्योंहि शादी हुई वह भी लखपति बन जाती है। ज्योंहि आपकी-मेरी शादी हो जाएगी, तो जो भी मेरा ज्ञान है, आनंद है वह सब कुछ तुम्हें प्राप्त हो जाएगा। क्योंकि तुमने मेरे साथ शादी की है इसलिए कबीर ने कहा है।
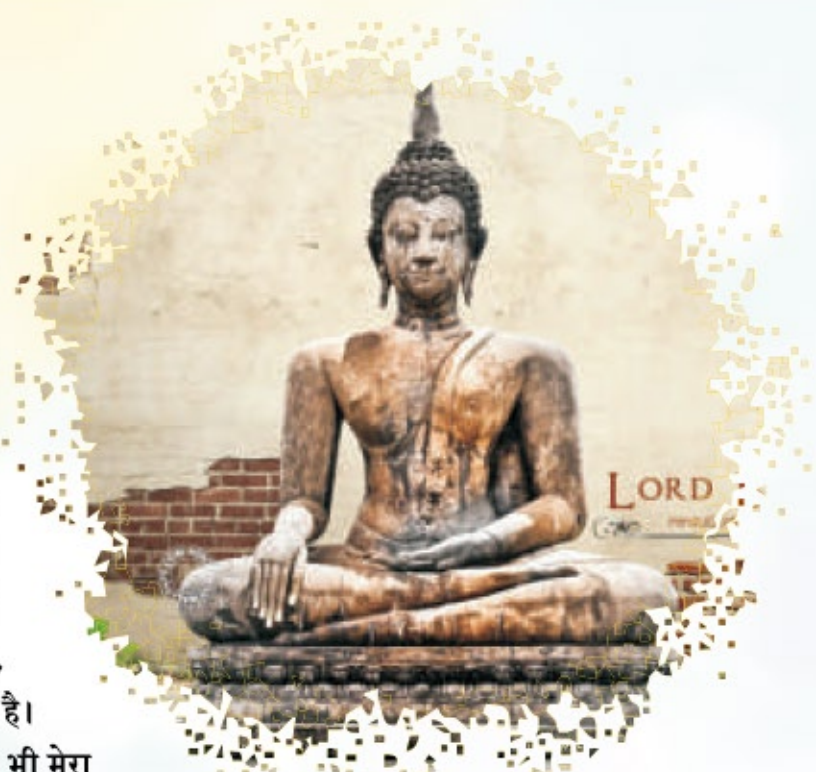
मैं तो राम की बहुरिया।

वह कह रहा है मैं राम की बहू हूं क्योंकि जब राम मेरे अंदर व्याप्त हो जाएंगे तो वह सब कुछ मुझे प्राप्त हो जाएगा जो राम के पास है।

फिर भी वह कह रहा है–

गुरु गोबिंद दोनों खड़े
काके लागूं पाय
बलिहारी गुरु आपने
गोबिन्द दियो बताए।।

वह गुरु को कह रहा है कि आपकी बलिहारी, आपकी कृपा है। आपकी वजह से मैं गोविन्द को देख सका हूँ।

मगर कबीर यह भी कह रहा है–

कबीरा यह घर प्रेम का।

गुरु का जो घर है वह प्रेम का घर है, पैसे देने से गुरु का घर नहीं मिल सकता।

कबीरा यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं
सीस उतारे भू घरे
वो पयसे घर माहि।

खाला का अर्थ है–मौसी, मां की बहन। इस गुरु के घर में, गुरु के हृदय में वो प्रवेश कर सकता है जो पहले अपना सिर उतार दे। एकदम अपने-आपको न्यौछावर कर दे कि देखा जाएगा, चैलेंज, वही इस घर में

घुस सकता है। जुआरी घुस सकता हो क्योंकि वह लगा देगा दांव पर। अपनी पूरी जिंदगी दांव पर लगा देता है, पांच लाख भी लगा देता है। वो या तो डूब जाएगा या उस पार चला जाएगा।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि–ऐसा समर्पण जब मानस में आएगा और जब सिर को उतारेगा तो गुरु तक पहुंचेगा।

सिर को उतारने के दो अर्थ हुए। सिर का अर्थ है–घमण्ड, बुद्धि। तुम्हारे पिता की बुद्धि है कि यह गुरुजी नया क्या करते हैं, ये तो खुद घर में बैठे हैं, मेरा बेटा बिगड़ जाएगा, मेरे घर से भी जाएगा। उनकी चिंता यह नहीं कि कुछ सीख लेगा। उनको चिंता यह है कि घर से चला जाएगा। यह गुरु जी के घर में बैठा रहेगा। नौकरी नहीं करेगा। चार दिन तो तनख्वाह कट जाएगी। उनका रोना, अपने खुद के स्वार्थ का है। तुम्हारे लिए रोना नहीं है। तुम्हारे लिए परेशान नहीं हैं, होते तो जैसे ही तुम मरते, तुम्हारे पीछे वे भी मरते। तुम चिंता में जाते तो वो भी आग में जाकर कूद जाते। लेकिन एक भी ऐसे मरा नहीं। पिछले इतिहास में तो मुझे मिला नहीं कि कोई मरा और उसकी पत्नी भी मर गई। रोती है, चीखती है, नहीं रोती तो लोग कहते हैं इसे दुख नहीं है क्या? पति मर गया क्यों नहीं रोती? इसलिए वह रोती है, चीखती है जोर-जोर से। अरे! तुम चले गए, तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा। मेरा क्या होगा और दूसरे दिन खाना खा लेती है। कहती है–खाना गले से उतर नहीं रहा है पर क्या करें खाना पड़ेगा।

और तुम अहंकार में डूबे हुए थे कि मेरे बिना पत्नी का क्या होगा, बच्चों का क्या होगा, गुजारा कैसे होगा। यह अहं, इसको सिर कहते हैं, घमण्ड को सिर कहते हैं कि मेरे बिना इसका क्या होगा। इसको उतारें पहले।

सीस उतारे भू घरें।

जो छोड़ दे उसको वह इस प्रेम के घर में पहुंच सकता है। यह समर्पण का भाव है।

इसलिए शंकराचार्य ने कहा कि अपने आपमें पूर्णत संन्यासी बन जाएं। गृहस्थ रहते हुए भी संन्यासी बन जाएं। कोई चिंता नहीं करें। साल भर करके देख लें या तो साल भर में डूब जाएंगे, फिर जिंदगी भर कह देंगे कि कुछ नहीं गुरु के पास में, गुरु के पास जाने से कुछ फरक नहीं है। या तो यह चैलेंज के साथ कहेंगे।

और नहीं तो हंस बनकर घर आएंगे और बता देंगे कि हंस बनने का यह आनंद है। ये सब जो बगुले हैं, मेरे घर में उनकी अपेक्षा मेरे पंख ज्यादा शुभ्र हैं, ज्यादा ताकतवान हैं, उड़ने की मुझमें क्षमता है।

यह सब तुम अपने घर में रहकर प्राप्त नहीं कर सकते। उस घर में बैठ कर कर सकते हो और पैठने की क्रिया यह है कि जब तुम सब कुछ दे दोगे तो अपने आपमें गुरु को प्रत्यक्ष कर दोगे।

तुम्हारे अंदर तो गुरु को स्थापित करने की जगह ही नहीं है। अगर गुरु बेचारा चाहे भी तुम्हारे हृदय में

जाना तो तुम्हारे दिल में स्वार्थ, छल, झूठ, कपट, व्यभिचार, बदमाशी इतनी अधिक ठूस-ठूस कर भरी है। मैं खड़ा होऊं भी तो कहां होऊं? जगह है ही नहीं। और फिर उस पर बुद्धि इतनी होती है। पहले उसको थोड़ा साफ कर दीजिए।

पहले इतनी जगह बनाइए कि गुरु बैठ सके आकर के और वह तब हो सकता है जब चैलेंज के साथ आप गुरु के साथ हो जाएंगे और गुरु के साथ होने का तात्पर्य है कि जो गुरु के अनुकूल कार्य है वह करें।

मैं अपने स्वार्थ के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं गुरु हूँ इसलिए नहीं कह रहा हूँ। मैं तो उन शास्त्र की बात कर रहा हूँ, शंकराचार्य की बात कह रहा हूँ। तुम मेरे लिए कुछ कार्य करोगे तब भी मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा, नहीं करोगे तब भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

जब इतने साल तुमने मेरा कोई कार्य नहीं किया तो कौन सा डूब गया मेरा कुनबा? और तुम कर लोगे तो कौन सा मैं भगवान बन जाऊंगा और मुझे भगवान बनने की इच्छा है नहीं, जब मैं भगवान हूं तो मुझे भगवान बनने की ख्वाहिश नहीं है।

भगवान का तात्पर्य है कि जो पूर्ण ज्ञान को प्राप्त कर सके वह भगवान। कोई आकाश में टिमटिमाते हुए दीये को भगवान नहीं कहते। जहाँ पूर्णत्व प्राप्ति हो, जहां एकदम से किसी प्रकार का तनाव नहीं हो। चिंता नहीं हो और मैं चिंतामुक्त हूँ, तनावमुक्त हूँ, चिंता रखता ही नहीं। यह तनाव तो होता है कि वह शिष्य आया नहीं, क्या हुआ? तुम्हारे प्रति एक मोहग्रस्तता है कि तुम क्यों नहीं मिले। अगर तुम तकलीफ में हो तो मैं तकलीफ महसूस करता हूँ और तुम्हें

लाइन पर लाने के लिए चाबुक भी मारता हूँ। मारता हूं जरूर मारता हूं, महीने-महीने तुम से नहीं भी बोलता हूं। गुस्सा भी करता हूं और प्यार भी करता हूं। यह तो क्रियाकलाप है। कृष्ण को कहा कि बहुत अय्याशी था, बहुत प्रेम करने वाला था। कई लोगों ने कहा कि यह बिना गोपियों के रह नहीं सकता। वह ऐसा था, वह वैसा था, राधा के पीछे भटकता था, वह कर्दम्ब के वृक्ष पर चढ़ा, कपड़े चुरा लेता था, सब कुछ था और हमने माना कि वह बहुत ही प्रेमी जीव है। मगर जब अक्रूर उनको लेने को आए और रथ पर बैठा, रथ रवाना हुआ तो पीछे मुड़कर देखा ही नहीं कि गोपियां खड़ी हैं या नहीं खड़ी हैं। उन्मुक्त भाव से चला गया। मिला तब भी उसी भाव से और रवाना हुआ तो भी उसी भाव से। पीछे पलट कर नहीं देखा और हम कहीं जाए और पीछे पलटें तो पीछे उस पत्नी या प्रेमिका को कहते हैं कि तू चिंता मत करना, मैं वापस आऊंगा, तू क्या घबराती है, मैं तेरे साथ में हूँ, मैं लेटर लिखूंगा, तुम मुझे लेटर लिखना यह मेरा पता है, तेरे बिना कैसे रहूंगा, दो बार फिर वापस मुड़कर देखते हैं।

कृष्ण ने मुड़कर नहीं देखा। अनासक्त भाव था और जब यह अनासक्त भाव जीवन में आता है, तब प्रेम भी करते हैं तो अनासक्त भाव से मन में कुछ ऐसा स्वार्थ नहीं है। तुम्हारी आँख गंदी हो सकती है, मेरी आँख गंदी नहीं है। मेरा मस्तिष्क भी गंदा नहीं है। मेरे विचार भी गंदे नहीं हैं, क्योंकि मैं उस आकाश में उड़ने की क्षमता रखता हूँ। उस आकाश को नापा है मैंने। देखा है उसे और फिर नाप कर दिखा सकता हूँ।

मगर जब जमीन पर उतरना पड़ता है तो बगुलों के बीच खड़ा भी होना पड़ता है। क्योंकि यह मेरी इच्छा है कि मैं इन बगुलों को, हंस का रूप दे सकूं। तब मेरे जीवन की सार्थकता है। मैं इनको हंस बना सकूं, उड़ा के दिखा सकूं कि यह आनंद है, डुबकी लगवाकर दिखा सकूं कि यह आनंद है, बाकी गृहस्थ में आने का मुझे कोई आनंद था नहीं। मैं तो संन्यासी रहा हूं और अपने आपमें बहुत अद्वितीय संन्यासी रहा हूं जहां हिमालय का कण-कण इस बात का एहसास करता है कि संन्यासी रूप ऐसा होता है। क्या जरूरत थी मुझे गृहस्थ में आने की।

मगर मैं गृहस्थ नहीं बनता तो लोगों को समझा नहीं सकता था। संन्यासी गृहस्थ के लोगों को समझाए तो इफैक्ट पड़ता नहीं है। इसलिए तुम्हारे बीच आकर खड़ा होना पड़ेगा। मुझे, बात करनी पड़ेगी। मगर तुम इतने न्यून हो कि तुम समझ लेते हो कि गुरु जी वैसे ही हैं जैसे हम हैं।

यह तुम्हारा भ्रम है, तुम्हारी आँख का भ्रम है। तुम्हारी आंख में कमजोरी है तो जहां बगुले बैठे हैं, वहां हंस भी बैठे हैं, तुम समझोगे यह भी बगुला है। उसको इसकी चिंता नहीं है क्योंकि वह जानता है कि मैं हंस हूं। मुझे क्या है, लोग भले ही मुझे हंस कहें या बगुला कहें। उसमें क्या अंतर आ जाएगा। इसलिए शंकराचार्य इस श्लोक में कह रहे हैं कि जब कुछ क्षणों के लिए पूरे अनासक्त भाव से जुड़ जाओगे तो अपने आप तुम्हारे अंदर गुरु समाहित हो जाएंगे। समाहित तो होंगे ही पर एक्टीविटी से, क्रिया से, चिंतन से।

जीवन का प्रत्येक दिन पूर्णता से भरा है, तुम पूर्ण बनो यही मेरा आशीर्वाद है।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1. धूमावती यंत्र

आज के युग में शत्रु बाधा प्रत्येक के जीवन में व्याप्त है चाहे वह दृश्य शत्रु हो या पीठ पीछे वार करने वाले या तंत्र बाधा के रूप में। इस यंत्र को किसी भी शुक्रवार को स्थापित कर आप इन बाधाओं से मुक्त हो सकते हैं। नित्य 31 बार निम्न मंत्र का जप करते रहें।

मंत्र :

।। धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

2. सरस्वती यंत्र

आज के व्यस्त युग में आप अपने बच्चों को कम समय दे पाते हैं, जिससे बच्चों का चंचल मन इधर-उधर भटकता रहता है, सरस्वती जयंती पर सिद्ध किये गये यंत्र आप मंगवाकर अपने बच्चों को किसी भी सोमवार को धारण करायें, जिससे उसका मन स्थिर हो एवं पढ़ाई में आगे बढ़ सके। नित्य पांच मिनट निम्न मंत्र का का जप करवायें।

मंत्र :

।। ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नमः ।।

3. सौभाग्य लक्ष्मी यंत्र

अष्ट लक्ष्मी जयंती पर प्राण प्रतिष्ठा किया गया यह यंत्र अपने आप में लक्ष्मी का स्वरूप है इसे सिर्फ आपको अपने पूजा स्थान में बुधवार को प्रातः स्थापित कर निम्न मंत्र का 108 बार उच्चारण करना है। आप चाहें तो नित्य इस मंत्र का 21 बार उच्चारण कर अपनी धन सम्बन्धी समस्याओं को हल कर सकते हैं।

मंत्र :

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सर्व सौभाग्य महालक्ष्म्यै फट ।।

आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर उपरोक्त में से कोई एक उपहार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

लक्ष्मी विनायक
यंत्र साधना

जिस पर लक्ष्मी एवं श्री गणेश दोनों की कृपा हो जाए उसके तोअसंभव कार्य भी पूर्ण हो जाते हैं। उसे जीवन में आगे बढ़ने से फिर कौन रोक सकता है ?

28.09.21 को या किसी भी बुधवार को प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में एक पीला वस्त्र बिछायें फिर भोज पत्र पर निम्न यंत्र बनाकर स्थापित करें। घी का एक दीपक लगायें, साथ ही एक सुपारी पर मौली लपेटकर चावल की ढेरी पर स्थापित करें तथा कुंकुम, केसर, अबीर, गुलाल, अष्टगंध, पुष्प आदि से गणपति का पूजन करें। लड्डू का भोग लगायें। फिर बनाये गये यंत्र पर तावीज रूपी लक्ष्मी विनायक यंत्र स्थापित करें और उसका पूजन करें।

इस प्रकार पूजन करने के बाद निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप लक्ष्मी माला से करें।

मंत्र

|| ॐ श्रीं ग्लौं नमः ||

लक्ष्मी विनायक यंत्र

मंत्र जप पूरा होने के पश्चात् इस बनाये गये यंत्र को पूजा स्थान में ही रहने दें और तावीज रूपी यंत्र को अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें। इसके बाद गणेश जी एवं लक्ष्मी जी की आरती सम्पन्न करें। ध्यान रखें सूतक व पातक में इस यंत्र को उतार कर रख दें। बाद में पुनः धारण कर लें। नित्य पूजन क्रम में 1 माला मंत्र जप करें।

साधना सामग्री - 450/-

अनन्त चतुर्दशी • 19.09.21

यह साधना अनन्त इच्छाओं की पूर्ति में सहायक है
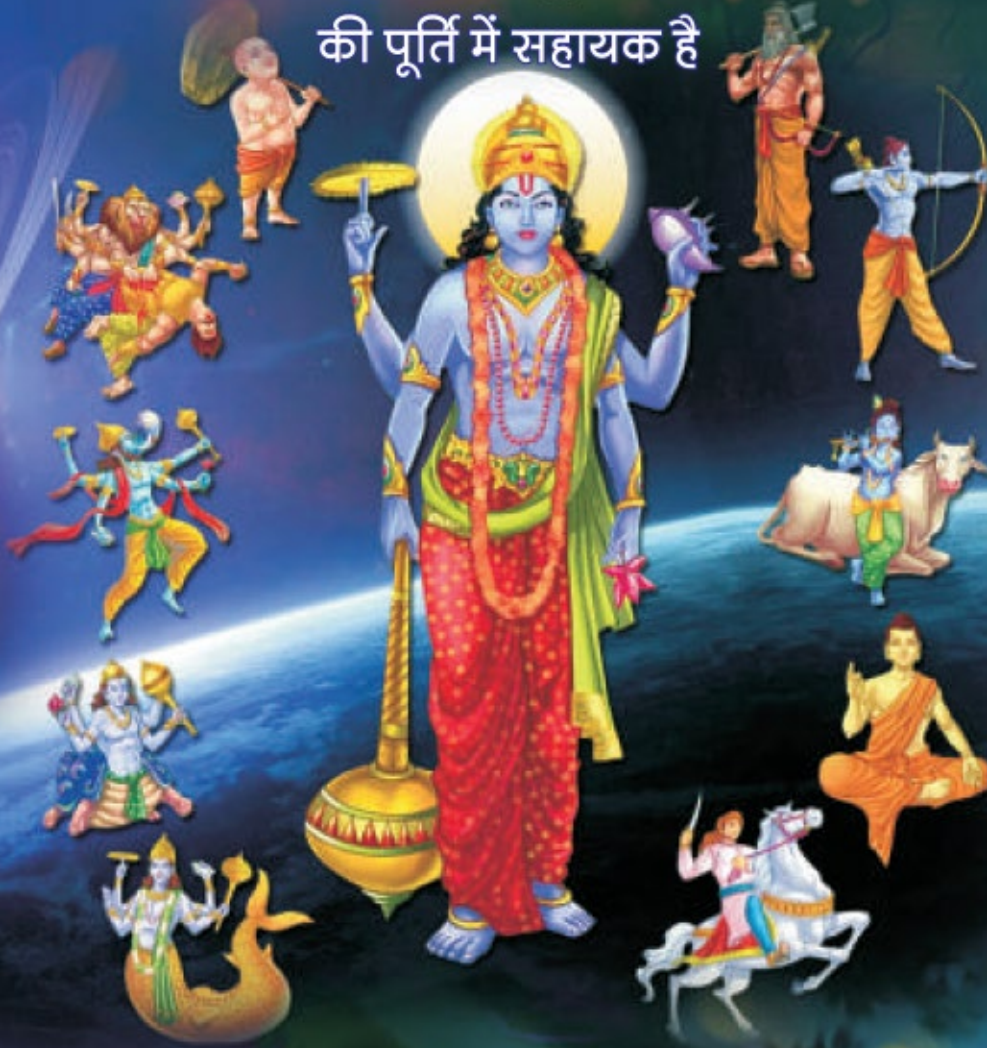
अनन्त संसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव।
अनन्तरूपे विनियोजितात्मा ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।।

हे विष्णु देव! इस अनन्त भव सागर में मैं डूब रहा हूं, मुझे आपके सिवाय कोई सहारा नहीं दिख रहा है, आप ही मेरा उद्धार करें तथा अपने अनन्त स्वरूप में मुझे समाहित कर लें। हे अनन्त स्वरूप ! मैं आपको बार-बार प्रणाम कर रहा हूं,आप मेरी समस्त न्यूनताओं और पापों का विनाश कर मेरी मनोकामनाओं को पूर्ण करें।

उदित होते हुए सैकड़ों सूर्य के समान तेजस्वी तप्त, स्वर्ण के समान जिनके अंग की कांति है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में निरन्तर रत हैं, जिन्होंने रत्न जड़ित आभूषण, पीताम्बर धारण कर रखा है तथा जिनके चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पदम सुशोभित हैं, ऐसे दिव्य स्वरूप वाले 'श्री अनन्त विष्णु' को मैं नमन करता हूँ।

जब हम मनुष्य है, तो इच्छाएं भी होंगी और अगर इच्छाएं नहीं हैं, तो फिर वह मनुष्य भी नहीं है, प्रत्येक मानव की यही इच्छा होती है, कि वह अच्छे-से-अच्छा खाए, अच्छे-से-अच्छा पहिने और भली प्रकार तथा व्यवस्थित ढंग से अपने जीवन का निर्वाह कर सके, जिसके लिए उसे पग-पग पर संघर्षशील बने रहना पड़ता है, किन्तु इतनी मेहनत और प्रयत्न करने पर भी वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में असफल ही रहता है.... अक्षम ही रहता है, और फिर इस प्रकार उसे एक अधूरा, एक निराशाजनक जीवन जीना पड़ता है.... क्योंकि उसकी इच्छाएं अनन्त हैं, असीमित हैं, और उन इच्छाओं की पूर्ति करना सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं है।

किन्तु यदि 'अनन्त चतुर्दशी' के दिन 'अनन्त साधना' सम्पन्न की जाय, तो व्यक्ति की मनेच्छाएं स्वत: ही पूर्ण होने लगती हैं, फिर उसके कार्य अधिक परिश्रम किये बिना ही सहज रूप से सम्पन्न होने लगते हैं, क्योंकि अनन्त साधना सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली, कल्याणकारी और सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली एकमात्र साधना है, जिसे भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को सम्पन्न किया जाना ज्यादा श्रेयस्कर है, ज्यादा हितकारी है, क्योंकि सही क्षणों को पकड़ना मानव-जीवन की सफलता का मूल रहस्य है।

भविष्य पुराण के अनुसार– भगवान् विष्णु अपने कृष्ण स्वरूप में युधिष्ठिर को इस दिन इस साधना का महत्त्व समझाते हुए कहते हैं–

> 'अनन्त मेरा ही नाम है, संसार का भार उतारने तथा दानवों का विनाश करने के लिए वसुदेव के कुल में मैं ही उत्पन्न हुआ हूं, अत: मेरे अनन्त रूप की साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति की समस्त इच्छाएं, कामनाएं स्वत: ही पूर्ण हो जाती हैं।'

अनन्त का अर्थ है–असीमित शक्ति। इस साधना के द्वारा व्यक्ति में वे सभी शक्तियाँ समाहित हो जाती हैं, जिसके द्वारा वह जीवन में आने वाले प्रत्येक उतार-चढ़ाव को धैर्य के साथ पार करने में सक्षम हो जाता है। साधनाएं अनेक हैं, किन्तु अनन्त साधना लघु परिश्रम से ही उस मंजिल तक पहुंचा देती है, जहां पर पहुंचना ही मनुष्य-जीवन की श्रेष्ठता मानी जाती है।

बुद्धिमानी इसी में है, कि इनका यथासमय लाभ उठाते रहना चाहिए, क्योंकि गृहस्थ जीवन समस्याओं का आगार है... और किस समय कौन-सी समस्या आ जाए, यह समझ पाना कठिन है, आने वाली इस प्रकार की समस्याओं के लिए तो, चाहे वे पुत्र से सम्बन्धित हों, स्त्री, धन-दौलत, स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित क्यों न हों, इनसे निपटने के लिए शक्ति के रूप में इनके आक्रमण से पूर्व इस तरह की साधनाओं को सम्पन्न कर शक्ति संचय करते रहना चाहिए।

साधना विधि–

सामग्री– जनार्दन यंत्र, सुदर्शन माल्य, सर्व मनोकामनापूर्ति गुटिका

दिवस– अनन्त चतुर्दशी 19.09.21 को या फिर किसी भी बृहस्पतिवार को।

समय– प्रात:काल 4 बजे से 8 बजे के मध्य।

दिशा– पूर्व या उत्तर।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व उपरोक्त सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवा लें या किसी प्रामाणिक स्थान से प्राप्त कर लें, किन्तु यह ध्यान रखें, कि इन सामग्रियों का चैतन्यीकरण भगवान् अनन्त के विशिष्ट तांत्रोक्त मंत्रों द्वारा ही होना चाहिए।

इसके अलावा पहले से ही आप पीले पुष्प और पीले पुष्पों की ही माला,

पीला वस्त्र, केसर तथा घर में शुद्धता के साथ बनाई हुई खीर तथा अन्य स्वादिष्ट व्यंजन भी एकत्र कर लें, साथ ही धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, चन्दन इत्यादि का प्रयोग नित्य पूजन क्रमानुसार ही करें।

अनन्त चतुर्दशी को प्रात:काल अपनी सुविधानुसार समय निर्धारित कर, स्नानादि से निवृत्त होकर, पूर्ण पवित्रता एवं श्रद्धा के भाव से युक्त होकर अपने आसन पर बैठ जायें, साधना के समय आप पीले वस्त्र ही धारण करें तथा पद्मासन, सुखासन या जिस आसन में बैठने का आपको अभ्यास हो, उस आसन में स्थिर भाव से बैठ जायें, तत्पश्चात् अपने सामने किसी बाजोट पर पीले वस्त्र को बिछाकर उसके ऊपर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर दें, इन पंखुड़ियों के ऊपर 'जनार्दन यंत्र' को स्थापित करें और केसर, चन्दन तथा पुष्प माला समर्पित करें। यंत्र के दाहिनी ओर 'सर्व मनोकामनापूर्ति गुटिका' को स्थापित करें तथा बाईं ओर 'सुदर्शन माल्य' को, इन दोनों का भी संक्षिप्त पूजन सम्पन्न करें।

पूजन करते समय किसी निर्धारित क्रम की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है, तो एकाग्रता एवं आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति-भावना की। यही वह क्रम है, जिसके माध्यम से भगवान अनन्त निश्चित रूप से पूर्ण साधना काल में उपस्थित होते ही हैं तथा साधक की इच्छाओं को पूर्ण करते ही हैं।

पूजन के बाद किसी पात्र में अक्षत अर्थात् ऐसे चावल के दाने लें, जो टूटे न हों, उन्हें हल्दी से रंग लें, तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए लगातार 15 मिनट तक बाएं, हाथ में रखे अक्षत को दाहिने हाथ से मनोकामनापूर्ति गुटिका पर डालते रहें।

मंत्र

ॐ ऐं सर्वकार्य सिद्धये नमः

15 मिनट तक मंत्र-जप करने के पश्चात् हाथ जोड़कर भगवान् अनन्त से क्षमा-याचना करें, कि यदि हमारे पूजन और साधना में कोई कमी रह गई हो, तो उसे क्षमा करें, हमें पूर्णता प्रदान करें तथा हमारी इच्छित कामनाओं को शीघ्र ही पूर्ण करें।

क्षमा-याचना के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करे-

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः।
पाहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव।।
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम्।

इसके पश्चात् 'सुदर्शन माल्य' को अपने गले में धारण कर लें, क्योंकि यह माल्य भगवान् अनन्त के आशीर्वाद से युक्त है। गुटिका पर चढाये गये अक्षत को अपने घर में विशेषकर भण्डारे में डाल दें, ऐसा करने से घर में अनाज की पूर्णता बनी रहती है। गुटिका और यंत्र दोनों को ही उसी दिन अथवा अगले दिन जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 570/-

क्या आवाज को सुरीला बनाया जा सकता है

आयुर्वेद में जो उपचार हैं, उसका प्रभाव स्थायी रहता है

और आयुर्वेदिक औषधियों के सेवन से किसी भी प्रकार का 'साइड इफेक्ट' भी नहीं रहता,

कुछ विशेष घरेलू उपचार 'चरक संहिता' से

वाणी, व्यक्तित्व का सबसे प्रधान अंग है, आवाज के माध्यम से ही किसी को प्रभावित किया जा सकता है। शरीर सुन्दर-स्वस्थ हो और आवाज मरी-मरी सी, तो कल्पना कीजिये उस व्यक्ति के प्रभाव का। स्त्री सुन्दर है और जैसे ही मुंह खोले तो लगे जैसे बम फूटा हो! तो क्या सारी सुन्दरता खाक में नहीं मिल जाती? वाणी तो मधुर, प्रभावपूर्ण एवं व्यक्तित्व के अनुरूप होनी चाहिए।

नीचे कुछ विशेष घरेलू नुस्खे दिये जा रहे हैं, जिन्हें अपना कर आप भी अपनी आवाज में मधुरता भर सकते हैं, सुरीला बना सकते हैं।

1. मुलहठी 15 ग्राम, आवंल सूखा 15 ग्राम, छोटी इलायची 3 ग्राम, आम का सूखा बोर 15 ग्राम तथा मिश्री 20 ग्राम लेकर इन सबको अच्छी तरह पीस कर कपड़े से छान करके चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को काले मुनक्कों के साथ सिल पर अच्छी तरह से पीस लें। इस मिश्रण की काले चने के बराबर गोलियां बना लें, आवाज खराब हो गई हो या गला खराब हो गया हो तो इन गोलियों को चूसें, इनसे खांसी नहीं आयेगी, गला साफ होगा और आवाज मधुर हो जाएगी।

2. यदि आपका गला बैठ गया हो तो कूजा मिश्री मुंह में रखकर धीरे-धीरे चूसें, मिश्री के प्रभाव से तुरन्त आपका बन्द गला खुल जाएगा व बैठा गला साफ हो जायेगा। यदि कूजा मिश्री न मिले तो उसके स्थान पर कबाब चीनी का प्रयोग करने से भी फायदा पहुंचता है।

3. काली मिर्च 10 ग्राम, मुलहठी 10 ग्राम व मिश्री 20 ग्राम, इस अनुपात में इन सबको लेकर इन्हें पीस लें और चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को किसी खुले मुँह वाली शीशी में रखें। प्रतिदिन सुबह-शाम इस चूर्ण की एक चुटकी शहद के साथ लें, कुछ दिनों बाद आपकी आवाज का सुरीलापन बढ़ जायेगा।

4. खरबूजा, तरबूज और ककड़ी—इन तीनों के बीज लीजिए। इन बीजों के छिलके उतार दीजिए, अब इन बिना छिलकों के बीजों को पीस लीजिए। कुछ दाने छोटी इलाचयी के व करीब 20 दाने काली मिर्च के भी इनमें पीस लीजिए। सबका चूर्ण बना लीजिए। दिन में तीन बार नियमित रूप से इस चूर्ण को बकरी के दूध के साथ सेवन करने से दिमाग और दिल की शक्ति बढ़ती है। स्मरण शक्ति तेज होती है तथा वाणी में मिठास का गुण उत्पन्न होता है।

5. अदरक की गांठ लेकर उसे अन्दर से खाली कर लीजिए। अब उसमें थोड़ी सी हींग व काला नमक भरकर धीमी आंच कर सेंक लीजिए। सुर्ख हो जाने पर उसको पीस लीजिए। दोनों वक्त खाने के बाद इसका सेवन कीजिए, इसके सेवन करने से बलगम और पुराना नजला बिल्कुल समाप्त हो जाता है। यह बहुत ही उपयोगी उपचार है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

रात अब बीत चली है

इसकी सूचना सुदूर पूर्व से आ रही हल्की लालिमा से मिल
चुकी थी और मेरे समक्ष बैठी मेरी साधना की सफलता को कहती,
उसे मूर्त रूप देती सुनयना की
उपस्थिति से भी, जिसके कपोल उत्तेजना से थरथरा रहे थे,
उन पर छायी लालिमा का प्रतिबिम्ब था, चेहरे पर स्वेद कण छलछला आए थे,
मानों रात जाते-जाते आज अपनी शबनम को क्यारी में न बिखेर
कर सुनयना के कपोलों और देह पर बिखेर गई हो,
यों भी सुनयना की कमनीय और नाजुक देहयष्टि किसी
फूलों की क्यारी से कम भी नहीं थी।

तन पर पड़े रंग-बिरंगे वस्त्रों की शोभा उसे जीती-जागती वाटिका में ही बदल रहे थे और उसकी देह से आती वह मादक गंध कि भंवरे भी एक बार मदमस्त होकर वास्तविक फूलों का रसपान करना भूल जाए या यों कहूं कि जानबूझ कर भुला दें। ऐसे पुष्प को पाकर भला कौन अपने को भाग्यशाली नहीं समझेगा।

धन प्रदाता अप्सरा साधना

जो साधक के मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती है

मैं भी तो एकटक उसकी ओर देखता हुआ उसके विलक्षण सौंदर्य का नेत्रों से रसपान करता ही जा रहा था। खूब बड़ी–बड़ी कजरारी आँखें अत्यन्त नर्म और रक्तिम ओंठ, सुडौल नासिका, हल्के भरे से कपोल और तन को ढकने या उभारने का कार्य करता उसका अधोवस्त्र उसकी सुगढ़ता की ही कथा...

और कथा से भी ज्यादा मीठी लोरी का काम कर रही थी, जिसकी थपकियों में अच्छे से अच्छे ऋषि–मुनियों को मोह निद्रा आ जाए। अद्‌भुत कशिश थी उसके चेहरे पर उस घने, नर्म और लम्बी केशराशि बिखराव से उसकी देह और भी निखर उठी थी, जिसकी सघन काली पृष्ठभूमि में सारी देह की रंगत और शुभ्रता विद्रोह सी करती, तड़प कर मेरी दृष्टि में चुभने सी लग गयी, मैं एक बार अपने–आसन पर संयम खोने लगा कि तभी...

...मानो कमरे में सूर्य की किरणें एकाएक जगमगा उठीं, मैं जो बेसुध हुआ जा रहा था वह अपने–आप में संयमित हो गया। अब अप्सरा साधना के अंतिम क्षण भी समाप्त होने को थे और इसी काल में मुझे अपना मनोवांछित प्राप्त कर लेना था जिसके लिए मैं सतर्क हो चेष्टारत हो उठा...

सुनयना अप्सरा की साधना का विवरण मुझे बहुत समय पूर्व एक संन्यासी से सुनने को मिला था और मैं तभी से इस साधना के रहस्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत था, किन्तु मनोवांछित सफलता तो दूर अधिकांश उच्चकोटि के साधक भी इस साधना से परिचित नहीं थे। छिटपुट बिखरी हुई जानकारियों को एकत्र करके मैंने केवल इतना ही समझा कि अवश्य ही किसी ऐसी षोडश वर्षीया अनिन्द्य सुंदरी की साधना है, जो सिद्ध होने पर साधक को मनोवांछित प्रदान करती ही है साथ ही अपनी विशिष्ट खेचरी विद्या के द्वारा उसे उसके अनेक मनोवांछित पदार्थ आदि लाकर भी प्रदान करती है। गृहस्थ साधक जहाँ इस साधना को मनोवांछित प्राप्ति हेतु सम्पन्न करते हैं वहीं संन्यासी साधक सुखद साहचर्य और खेचरी विद्या को प्राप्ति के लिए सम्पन्न करते हैं।

मुझे अपने शोध के मध्य यह भी ज्ञात हो चला था कि हो न हो इस साधना को वर्ष के किसी एक विशेष दिवस पर ही सिद्ध किया जाता है, इसी कारणवश इस साधना को सार्वजनिक रूप से लोग नहीं जान पाए। अंत में मुझे स्वामी चैतन्यानंद जी के मिलने पर ही इस साधना का पूर्ण विवरण ज्ञात हो सका। स्वामीजी की यह विशेषता है कि उन्होंने वे साधनाएँ ही सिद्ध की हैं जिन्हें आमतौर पर अन्य साधकों ने असफल होने पर छोड़ दिया हो। मेरी उनसे यूं ही भेंट हो गयी थी, किन्तु उनकी इस विशेषता को जान मैंने विधिवत् उनका शिष्यत्व स्वीकार किया और अपने मन की बात को भी ज्यों का त्यों रख दिया।

मेरी स्पष्टवादिता से प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे अपना शिष्य तो बना लिया किन्तु दो वर्ष तक इस साधना के विषय में कोई चर्चा नहीं की। बस आज्ञा पालन एवं सौंपे गये किसी भी कार्य को पूरे मन से निष्पादित करना ही मेरे उस समय के जीवन की दिनचर्या थी और मैंने उसी दिनचर्या को गुरु आज्ञा मानकर साधना का रूप दे दिया था क्योंकि गुरु आज्ञा पालन ही तो साधना कहलाती है। मैं स्पष्ट समझ रहा था कि वे मेरी परीक्षा ले रहे हैं किन्तु दूसरी ओर निश्चिंत भी था कि जब मुझे यह साधना सिद्ध हो जाएगी तो पूरे जीवनभर की उपलब्धि एक ही क्षण में प्राप्त हो जाएगी।

यदि हम सामान्य और व्यवहारिक दृष्टि से भी देखें तो पूरे–पूरे जीवन भर परिश्रम करके क्या अर्जित कर पाते हैं दूसरी ओर यदि इसी जीवन का उपयोग किसी श्रेष्ठ गुरु के मिल जाने पर कुछ वर्ष उनकी आज्ञानुसार चल कर पूर्ण समर्पण करते हुये सम्पन्न कर लेते हैं तो... कोई भी एक साधना सिद्ध होने पर इतना अधिक धन, वैभव, कायाकल्प हो जाता है जो कि अकल्पनीय ही होता है। किसी भी यक्षिणी, अप्सरा या लक्ष्मी की एक सिद्धि द्वारा ही पूरे के पूरे जीवन को संवारा जा सकता है।

दूसरी ओर आध्यात्मिक रूप से भी कुण्डलिनी जागरण, ध्यान, धारणा, समाधि द्वारा ऐसा कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो अनिर्वनीय होता है। यदि सौभाग्य से कोई विलक्षण साधना हाथ लग गई तब तो उससे देवता गण भी ईर्ष्या करते हैं... और सुनयना की साधना ऐसी ही विलक्षण साधनाओं के अन्तर्गत आती है, क्योंकि वह प्रसन्न होने पर अपने साधक के साथ मित्रवत व्यवहार तो करती ही है, साथ ही उसे विविध प्रकार की ऐसी दुर्लभ वस्तुएँ भी लाकर देती है। सुनयना अप्सरा खेचरी विद्या की प्रवीण होने के कारण अपने सिद्ध साधक को भी यह विद्या प्राप्त करा सकती है।

स्वामी चैतन्यानंद जी के साथ मुझे दो वर्ष से ऊपर समय हो जाने के पश्चात् दीपावली का पर्व आया... और उन्होंने मुझे

इस दिन प्रातः से ही मौन रहने व फलों के अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण न करने की आज्ञा देकर एकांत में रहने को कहा। दो वर्ष तक उनके साथ रहते हुए मैं तत्क्षण समझ गया कि आज मेरे सौभाग्य का दिन आ गया है और अवश्य ही दीपावली वह सिद्ध मुहूर्त है जिस दिन इस धन व यौवन प्रदायक अप्सरा की साधना सम्पन्न की जाती है।

दिवस बीता, सायं हुई और सायंकाल के बीत जाने के पश्चात् उन्होंने मुझे अपने पास बुला कर छह विशिष्ट सामग्रियाँ देकर उन्हें एक विशेष क्रम से अपने समक्ष रखकर श्वेत हकीक माला से एक गोपनीय मंत्र जपने की आज्ञा दी। उन छह सामग्रियों में एक हकीक पत्थर, एक गोमती चक्र, एक मूंगा रत्न, एक पुखराज के समान पीला रत्न, एक चिरमी का दाना तथा एक सिद्धि फल था और उन्हें इस क्रम में अपने समक्ष पीले वस्त्र पर कुंकुम से रेखाएं खींच कर उनके मध्य स्थापित करना था।

गोमती चक्र	पीला रत्न	सिद्धि फल
चिरमी का दाना	मूंगा रत्न	हकीक पत्थर

इस प्रकार से यंत्र रचना कर मुझे जिस मंत्र का जप सफेद हकीक की माला से करना था वह मंत्र था—

मंत्र

।। ॐ ह्लौं अप्सरा लक्ष्म्यै आगच्छ आगच्छ ह्लौं नमः।।

मंत्र–जप के उपरांत सभी सामग्रियों को माला सहित विसर्जित कर देने की आज्ञा भी उन्होंने दी थी। कदाचित् उन्हें भी अनुमान नहीं था कि मुझे यह साधना इतनी शीघ्रता से प्रथम बार में ही सिद्ध हो जाएगी, किन्तु शायद मेरे पूर्व जन्म के पुण्य, मेरी अपने गुरु के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण का भाव, एकनिष्ठता एवं उचित मुहूर्त के मेल होने के कारण यह घटना सम्भव हुई।

अप्सरा की साधना का सर्वोत्तम स्वरूप प्रेमिका ही होता है जिसमें वह अपने स्पर्श, हंसी–मजाक, नृत्य, हाव–भाव से मनोरंजन करते हुये साधक को एक प्रिय मित्र की भांति उचित सलाह भी देती है और आवश्यकता पड़ने पर यथायोग्य धन देकर हित चिन्तन भी करती है। दीपावली की रात्रि तो इसका सिद्ध सफल मुहूर्त है ही, अन्य किसी शुक्रवार को भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, जिसमें साधक को यह अपनी भावना, तीव्रता एवं पूर्व जन्म गत संस्कारों के अनुपात में सफलता मिलती ही है। वास्तव में साधना तो कोई भी असफल होती ही नहीं, प्रत्येक बार हम साधना के द्वारा सफलता की एक सीढ़ी तो चढ़ते ही हैं। अंतर केवल इतना है कि किसी को दो–चार सीढ़ी चढ़कर ही सफलता प्राप्त हो जाती है, किसी को दस या बारह सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ जाती हैं।

साधना सामग्री– 450/–

ऐसे होता है
मन पर नियंत्रण

निर्जन गंगा तट। संन्यासी निखिल उन दिनों धीरे–धीरे सारी मूलभूत आवश्यकताओं के प्रति वीतराग होते जा रहे थे कपड़े छोड़ दिये, लंगोट धारण कर ली, हाथ का कमण्डल भी फेंक दिया घर से तो सम्बन्ध तोड़ ही दिया था, घर वालों को तो पता ही नहीं था, कि निखिलजी कहाँ है? जूते पहिनना छोड़ दिया था, निर्जन हिमालय की उपत्यका में, भीषण गर्मी में भी पैदल नंगे पाँव घूमते, धीरे–धीरे प्यास और भूख सहने की आदत डाल रहे थे।

ऐसे ही दिनों में मन पर नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए पाँच दिनों तक कुछ भी खाया नहीं, मधुकरी वृत्ति से भी कुछ नहीं, पर छठे रोज भूख असह्य हो उठी, तब उन्होंने एक ब्राह्मण के घर से भिक्षा में सिर्फ आटा प्राप्त कर गंगा के तट पर जाकर कुछ कंडे और लकड़ियाँ एकत्र कर उन्हें जला दीं और जो आटा लाये थे, उसकी एक ही मोटी सी रोटी बनाकर अंगारों पर सेंकने लगे।

पर छः दिन से लगी भूख इतनी असह्य थी कि मन अधसिकी रोटी ही खाने को उतावला हो रहा था, उन्होंने मन को डांटा, पर भूख थी, अधसिकी रोटी का ही एक कौर तोड़ कर मुंह में डालने लगे।

पर तभी अन्तर्मन ने कहा, ऐसी भी क्या इन्द्रियों की गुलामी? और कौर नीचे रख दिया, तब तक रोटी काफी कुछ सिक गई थी, और मन खाने को उतावली कर रहा था।

संन्यासी ने फिर मन को हटकारा, पर भूख तो भूख थी, मन मान ही नहीं रहा था, हठात निखिलजी ने वह सिकी हुई रोटी उठाकर बहती हुई गंगा में फेंक दी।

और बोले, मन से–अब क्या करेगा? अब फिर तीन रोज बाद ही मधुकरी की याचना करना।

और संन्यासी बिना कुछ खाये ही गन्तव्य पर पहुँच कर साधनारत हो गये।

योग शास्त्र में आसनों को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, क्योंकि एक ओर जहां ये आसन आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी-जागरण और ध्यान-प्रक्रिया की पूर्णता में सहायक है, वहीं दूसरी ओर पूरे संसार के लोगों ने यह स्वीकार किया है कि स्वास्थ्य को संतुलित बनाये रखने के लिए आसनों की उपयोगिता निर्विवाद रूप से स्वीकार की जा सकती है।

इसी क्रम में इस बार वज्रासन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी दी जा रही है जो साधकों के लिए प्रस्तुत है--

भारतीय योगशास्त्रियों ने यह स्वीकार किया है, कि जिस प्रकार से जीवन को संतुलित करने के लिए पद्मासन की उपयोगिता है, उसी प्रकार शरीर को सुदृढ़ करने और ध्यान एकाग्र करने में वज्रासन सबसे अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी है, इसीलिए इसे 'देवताओं का आसन' कहा गया है।

आसनों के बारे में यह भ्रम है कि आसन केवल पुरुषों के लिए ही उपयोगी है, यह गलत है। पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध, आसन तो सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है, और प्रत्येक व्यक्ति इन आसनों का उपयोग करके अपने शरीर को सन्तुलित एवं स्वस्थ बनाये रख सकता है।

जो मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हैं, जिनके जीवन में परेशानियाँ ज्यादा हों, उनके लिए तो यह आसन विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि कुछ समय तक इस प्रकार के आसन में बैठने पर मानसिक वृत्तियाँ एकाग्र हो जाती हैं, और उसे आनन्द की अनुभूति होने लगती है, धीरे-धीरे उसके मानस में आने वाले व्यर्थ के विचार समाप्त हो जाते हैं, सारा ध्यान एक ही बिन्दु पर एकाग्र हो जाता है।

वस्तुत: इस आसन में दोनों जांघों के आंतरिक भाग को दोनों पिण्डलियों से मिलाकर मुड़े हुए घुटनों को आगे और पैरों के तलवों को पीछे रखकर बैठने से वज्रासन बनता है, इस बात का ध्यान रहे कि ये एड़ियाँ नितम्बों से कुछ आगे निकली हुई हों, और दोनों एड़ियों को मिलाकर नितम्बों को इन पर टिकाकर बैठने से ही सही वज्रासन बनता है।

इस प्रकार बैठकर अपने दाहिने हाथ को दाहिने घुटने पर तथा बायां हाथ बायें घुटने पर रखकर दृष्टि को स्थिर रखते हुए बैठना चाहिए।

वस्तुत: यह आसन अत्यन्त सरल है, और इसमें कुछ भी कठिनाई प्रतीत नहीं होती, परन्तु इस बात का ध्यान रहना चाहिए, कि हमें यह आसन कम से कम एक घण्टे तक का अभ्यासयुक्त बनना है, अर्थात् वज्रासन में जो साधक एक घण्टे तक बैठा रहता है, वही पूर्ण सफल कहलाता है।

लाभ

1. इसका सबसे बड़ा लाभ भस्त्रिका, कुम्भक, रेचक, सूर्य भेदन आदि प्राणायाम करने में अनुकूलता प्राप्ति है, अर्थात् वज्रासन लगाकर यदि इस प्रकार के प्राणायाम किये जाय तो शीघ्र और निश्चित सफलता प्राप्त होती है।
2. वज्रासन से प्राणों का उत्थान होता है, और कुण्डलिनी जागरण में विशेष रूप से सहायता मिलती है।
3. इस प्रकार के आसन के अभ्यास से पेट के समस्त प्रकार के रोग समाप्त हो जाते हैं।
4. कुछ लोगों को जंघाओं या पैरों में दर्द रहता हो, कुछ लोगों के पैरों में नाड़ियां फूल जाती हैं, जिससे उन्हें तकलीफ होती है, इस प्रकार के रोग में भी यह आसन बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।
5. कुछ समय तक वज्रासन लगाकर बैठने से गैस से संबंधित रोग समाप्त हो जाते हैं, और पेट हलका रहता है।
6. पेट के अन्दर यदि मल जमा होता है, या थोड़ा-थोड़ा दर्द बना रहता है तो इस प्रकार का आसन करने से वह दर्द समाप्त हो जाता है।

वस्तुतः यह आसन अत्यन्त ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है, यह ठीक वैसा ही आसन है, जिस प्रकार से मुसलमान लोग नमाज पढ़ते वक्त बैठते हैं।

प्रत्येक साधक या गृहस्थ को इस प्रकार के आसन का अभ्यास नित्य करना चाहिए और जब यह अभ्यास एक घण्टे का हो जाता है तो इसमें सिद्धि प्राप्त होने लगती है।

राधा अष्टमी 14.09.21

एक गोपनीय कथ्य....
आप स्वयं जांच कर लीजिये कि

राधा-कृष्ण के चरण चिह्न

इन चिह्नों में कितने चिह्न आपकी हथेली में हैं

प्रत्येक मनुष्य के हाथ में एवं पैर के नीचे नाना प्रकार की रेखाएं व चिन्ह होते हैं, जिन्हें देखकर हस्तरेखाविद् एवं ज्योतिषी गण उसके भूत-भविष्य का आंकलन करते हैं।

समस्त अवतार श्री कृष्ण के ही अंतर्युक्त हैं, माधुर्य, भक्ति, रस तत्त्व आदि तथा जितनी भी लीलाएं हैं, वे श्री कृष्ण में वर्तमान है। वे ही परमेश्वर हैं।

श्रीकृष्ण जब मनुष्य शरीर धारण कर इस पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए, उस समय उनके शरीर की आकृति कैसी थी, यह प्राचीन धर्म ग्रंथों व चित्रों में उद्धृत है।

'मत्स्य पुराण' के अनुसार श्री कृष्ण के चरण चौदह अंगुल परिमित दीर्घ व छः अंगुल परिमित विस्तृत था। राधा और श्रीकृष्ण दोनों के चरणों में उन्नीस चिन्ह थे। कृष्ण के दक्षिण चरण व राधा के वाम चरण में ग्यारह चिन्ह थे, और कृष्ण के वाम चरण व राधा के दक्षिण चरण में आठ चिन्ह थे।

श्री कृष्ण के दक्षिण चरण के नीचे निम्न चिन्ह थे-

1. यव, 2. चक्र, 3. पद्म, 4. उर्ध्व रेखा, 5. अंकुश, 6. छत्र, 7. ध्वज, 8. वज्र, 9. स्वस्तिक, 10. जम्बू फल, 11. अष्टकोण।

श्री कृष्ण के वाम चरण के नीचे चिन्ह इस प्रकार थे-

1. शंख, 2. अम्बर, 3. धनु, 4. गोस्पद, 5. कलश, 6. त्रिकोण, 7. अर्द्धचन्द्र, 8. मत्स्य।

राधा के दक्षिण चरण के नीचे निम्न चिन्ह थे -

1. शंख, 2. पर्वत, 3. गदा, 4. वेदी, 5. रथ, 6. कुंतल, 7. शक्ति, 8. मत्स्य।

राधा के वाम चरण के नीचे निम्न चिन्ह थे -

1. यव, 2. चक्र, 3. कमल, 4. उर्ध्व रेखा, 5. अंकुश, 6. ध्वज, 7. छत्र, 8. वलय, 9. वल्ली, 10. पुष्प, 11. अर्द्धचन्द्र।

श्री कृष्ण के चरण के नीचे कहां कौन सा चिन्ह था, यह 'पद्म पुराण' में लिखा हुआ है। उनके दक्षिण चरण के मध्य में है ध्वजा। शरणागत भक्तों को अभय दान करने के लिए उन्होंने अपने चरण में राष्ट्र शक्ति नियंता लक्षण स्वरूप ध्वजा चिह्न धारण किया। बीच के अंगुल के अग्रभाग से तीन अंगुल नीचे ध्वजा के ठीक ऊपर है पद्म। पद के नीचे पद्म रूपी सौभाग्य सूचक चिह्न रहने से व्यक्ति बहुत ही धनी होता है। भक्त गण के मन रूपी भ्रमर को मोहने के लिए भगवान ने अपने चरण में पद्म चिन्ह धारण किया। 'पद्म पुराण' में उल्लेख है -

मध्ये ध्वजा तु विज्ञेया पद्म यवे गुल यानतः।
वज्र हे दक्षिणे पाश्वे अकुंशवे तरग्रतः।।

पद्म के दक्षिण में है वज्र तथा उसके ऊपर में है अंकुश। पाप रूपी पर्वत को चूर्ण करने के लिए वज्र, अंकुश चिह्न भगवान ने भक्तों के मदान्मल इन्द्रिय रूपी हाथी को वशीकरण करने के लिए धारण किया।

इसके बाद अंगूठे के नीचे है 'यव' और पीछे है 'स्वस्तिक' चिन्ह। सर्वसम्पदा लाभ प्राप्ति के लिए यव चिन्ह एवं शरणागतों के शुभ सूचक स्वस्तिक उन्हें मंगल प्रदान करने लिए भगवान ने धारण किया।

स्वस्तिक के संबंध में 'स्कन्द पुराण' के कार्तिक

प्रसंग में लिखा है - 'जो भगवान केशव के सामने मिट्टी अथवा विविध धातु द्वारा किंचित मात्र सर्वतोभद्र प्रभृत्ति मण्डल रचना करते हैं, वे एक शत कल्प काल तक स्वर्गवास करते हैं। जो शालिग्राम विग्रह के सामने विशेषकर कार्तिक महीने में शुभ स्वस्तिक की रचना करते हैं, वे सात पुश्त तक कुल पवित्र करते हैं। जो नारी प्रतिदिन भगवान केशव के सामने इसकी रचना करती है, वह सात जन्म तक कभी भी वैधव्य यंत्रणा नहीं पाती, वह कभी भी पति, पुत्र व धन नहीं खोती।'

इस स्वस्तिक चिन्ह के निर्माण का नियम है; विष्णु पूजक मंदिर के मध्य ईशान, वायु, नैर्ऋत्य व अग्नि इन चार कोणों के चार चतुष्कोण को सोलह भाग कर सादा, पीत, रक्त व कृष्ण रंग के चूर्ण द्वारा लेपन करें।

अंगूठे व बीच के अंगुल के मध्य भाग से चरण के मध्य तक भक्तों के उर्ध्व लोक प्राप्ति की सूचना करने के लिए भगवान ने उर्ध्व रेखा धारण की।

भक्तों को पूर्व, ईशान, उत्तर, वायु, पश्चिम, नैर्ऋत्य, दक्षिण, अग्नि आदि आठ दिशाओं से कोई विपदा नहीं आए तथा शरणागतों को अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व इन अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति हो, इसके लिए भगवान ने अष्टकोण चिन्ह धारण किया।

अणु के समान लघु होने से नाम अणिमा हुआ, अणिमा के द्वारा शरीर इतना छोटा हो जाता है, कि उसे पत्थर के अंदर प्रवेश कराया जा सकता है। अत्यंत हल्का होने से नाम लघिमा हुआ, लघिमा सिद्धि प्राप्त मनुष्य इतना हल्का हो जाता है, कि सूर्य किरण धारण कर ऊपर उठ सकता है। अत्यंत विशाल होने की सिद्धि का नाम है महिमा, महिमा सिद्ध व्यक्ति अपने शरीर को पहाड़ के समान अत्यंत विशाल बना सकता है। जिस सिद्धि के अनुसार इच्छानुसार जो चाहे, प्राप्त किया जा सके, उसका नाम है प्राप्ति। जिस सिद्धि द्वारा भूत-भौतिक की सृष्टि आदि किया जाय, उसका नाम ईशित्व है।

जिस सिद्धि द्वारा भूत-भौतिक को वशीभूत

स्वस्तिक चिन्ह के निर्माण का नियम है;
विष्णु पूजक मंदिर के मध्य ईशान, वायु, नैर्ऋत्य व अग्नि

प्लक्ष, शाल्मलि, कुश,
क्रौंच, शाक, पुष्कर - ये सप्तद्वीप हैं।

शरणागतों को अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व इन अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति हो, इसके लिए भगवान ने अष्टकोण चिन्ह धारण किया।

'श्री राधायै स्वाहा' मंत्र की ब्रह्मा,
विष्णु आदि भी उपासना करते रहे हैं।

किया जा सकता है, उसका नाम वशित्व है। जिस सिद्धि द्वारा समस्त इच्छाओं को पूर्ण किया जाय, उसका नाम प्रकाम्य है।

जिस सिद्धि द्वारा संकल्प अनुसार उसी समान कार्य किया जाय, उसे गरिमा कहते है, गरिमा सिद्ध व्यक्ति दग्ध बीज से भी अंकुर उत्पादन कर सकता है।

अपने शरणागत भक्तों की रक्षा के लिए उन्होंने छत्र चिन्ह धारण किया। उनकी छत्रछाया के नीचे रहने पर जीव सब तरह के क्लेश व दुःख से मुक्ति प्राप्त करते हैं। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश - ये पंच क्लेश हैं।

छत्र के ऊपर है चक्र और नीचे है जम्बू फल। चक्र का कार्य है छेदन, विनाश, भ्रमण व धराशायी करना। यह चक्र प्राचीन भारत का एक युद्ध अस्त्र था।

भगवान अपने चरण में जम्बू फल चिन्ह धारण कर दर्शाते हैं, कि उनका चरण जम्बू द्वीप वासी के लिए एक मात्र उपास्य है। जम्बू द्वीप सप्त द्वीपों में अन्यतम है, भारतवर्ष। नील पर्वत के दक्षिण व निषध के उत्तर अवस्थित सुदर्शन नामक जम्बू वृक्ष से द्वीप का नाम हुआ जम्बू द्वीप। प्रक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रोंच, शाक, पुष्कर - ये सप्तद्वीप हैं।

श्री कृष्ण के वाम चरण की अंगुलियों के अग्रभाग से चार अंगुल नीचे इन्द्रधनुष है अर्थात् शत्रु धनु तथा उसके अधोभाग में द्विखुर युक्त गोस्पद चिन्ह है। उनके चरण में शरणागतों का भवसागर गोस्पद तुल्य है।

चरण के उपयुक्त शोभा बढ़ाने के लिए उपयुक्त स्थान पर कलश चिन्ह है। उनका चरण त्रिगुण प्रकृति का है। उर्ध्व, मध्य और अध - ये त्रिलोक के आश्रय हैं। विविध जीव, देव और नर के लिए उनके चरण ही एक मात्र आराध्य हैं। इसलिए उन्होंने अपने चरण के तल में त्रिकोण चिन्ह धारण किया। उनके चरण से अमृत पाने का उपाय बतलाने के लिए उन्होंने पद के नीचे अमृत कलश चिन्ह धारण किया।

इन सभी चिन्हों के ऊपर अम्बर चिन्ह तथा बिल्कुल नीचे मत्स्य चिन्ह है। अम्बर चिन्ह में एक बाह्य मण्डल और एक अंतर्मण्डल चिन्ह रहता है। अम्बर अर्थात् आकाश के समान उसका चरण सर्वव्यापी होने पर निर्लिप्त है। कामध्वज मत्स्य चिन्ह से मालूम होता है, कि उनके चरण ही सब तरह की कामना पूर्ण करने में समर्थ हैं। अंगूठे के नीचे शंख चिन्ह धारण करने का अर्थ है, कि वे अपने भक्तों का सदा सर्वदा मंगल करते हैं।

राधा का पूजन छोड़कर श्री कृष्ण की अर्चना करने का अधिकार नहीं है। राधा श्रीकृष्ण की प्राण अधिष्ठात्री देवी हैं। उन्हें छोड़कर श्री कृष्ण क्षण भर के लिए भी जीवन धारण नहीं कर सकते। 'श्री राधायै स्वाहा' मंत्र की ब्रह्मा, विष्णु आदि भी उपासना करते रहे हैं।

राधा के वाम चरण के अंगुष्ठ मूल में यव, उसके निम्न भाग में चक्र, उसके निम्न भाग में वलय; तर्जनी और अंगुष्ठ से आरंभ होकर अर्द्धचरण पर्यन्त उर्ध्व रेखा; मध्यमा के नीचे कमल, कमल के नीचे पताका, सहध्वज; कनिष्ठा के नीचे अंकुश; अर्द्ध चन्द्र के ऊपर वल्ली एवं फूल - ये 11 चिह्न हैं।

भक्तों को पूर्व, ईशान, उत्तर, वायु, पश्चिम, नैऋत्य, दक्षिण, अग्नि आदि आठ दिशाओं से कोई विपदा नहीं आए तथा शरणागतों को अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व इन अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति हो, इसके लिए भगवान ने अष्टकोण चिन्ह धारण किया।

राधा के दक्षिण चरण के अंगुष्ठ मूल में शंख, कनिष्ठा के नीचे वेदी, उसके नीचे कुन्तल, तर्जनी तथा मध्यमा के नीचे पर्वत, नीचे मत्स्य उपविभाग में रथ एवं रथ के उभय पार्श्व में शक्ति व गदा - ये 8 चिन्ह हैं। इस प्रकार राधा के दोनों चरणों के चिन्ह 19 हैं।

राधा-कृष्ण के बायें और दक्षिण चरण के 11 चिन्हों के मध्य 6 चिन्ह उन दोनों के दक्षिण व वाम चरण के 8 चिन्हों के मध्य 2 चिन्ह दोनों के चरणों में विद्यमान हैं। वे हैं - 1. ध्वजा, 2. अंकुश, 3. यव, 4. उर्ध्व रेखा, 5. छत्र, 6. चक्र।

1. मत्स्य और 2. शंख।

सत-चित्-आनन्द, इस विविध गुण के कारण ही श्री कृष्ण विग्रह को आनन्द स्वरूप माना गया। परमार्थिक उन्नति के लिए श्रवण व कीर्तन के माध्यम से राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है।

कर्मणा जायतु जंतुः कर्म्मणैव प्रलीयते।
सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्म्मणैवाभि पद्यते।।

जीव कर्म द्वारा ही जन्म ग्रहण करता है, कर्म द्वारा ही मृत्यु प्राप्त करता है एवं कर्म द्वारा ही सुख, दुःख, भय एवं कुशलता प्राप्त करता है।

पूर्व शरीर का वियोग या विस्मृति को 'मृत्यु' कहा जाता है एवं अपूर्व शरीर सहित संयोग या वर्तमान शरीर में अभिनिवेश को 'जन्म' कहा जाता है।

जिसने भी जन्म लिया है, उसकी मृत्यु होती है; किन्तु मृत्यु होने पर वह पुनः जन्म लेगा, यह प्रमाणित नहीं। जितने समय तक जीव का शरीर से संबंध रहेगा, उतने समय तक सुख व दुःख से वह निवृत्त नहीं होगा।

शरीर त्रिविध है। अन्नमय कोषात्मक पंच भौतिक शरीर को स्थूल शरीर कहा जाता है। प्राण, मन और विज्ञान इस त्रिकोणात्मक सप्तदशा वाले शरीर को सूक्ष्म शरीर कहा जाता है। आनन्दमय कोषात्मक अविद्या रूप वाले शरीर का नाम कारण शरीर है। किन्तु स्थूल या सूक्ष्म द्विवधि शरीर को ही स्वीकार कर अविद्या को उसका मूल कारण माना जाता है।

मृत्यु दो प्रकार की होती है - काल मृत्यु व अकाल मृत्यु। पूर्ण आयु प्राप्त मनुष्य की मृत्यु काल मृत्यु है तथा उससे भिन्न सर्व प्रकार की मृत्यु अकाल मृत्यु है।

व्याधि स्वरूप निर्णय एवं यंत्रणा को कम या समाप्त कर देना वैद्य के सामर्थ्य में है, किन्तु वैद्य काल मृत्यु का निवारण नहीं कर सकता। विविध व्याधि, सर्प, व्याघ्र, कुंभी, दस्यु व शत्रु समान बहुप्राणी, नाना प्रकार के विष तथा नाना प्रकार के अभिचारिक कर्म - ये सभी मृत्यु के द्वार हैं। जब विभिन्न कारणों से मानव मृत्यु के सम्मुख होता है, तो धन्वन्तरी भी उसे बचा नहीं पाते हैं। औषधि, तपस्या, दान, माता-पिता व बंधु-बान्धव कोई भी काल मृत्यु से मनुष्य को बचाने में समर्थ नहीं होता है। रसायन, तपस्या, जप और योग सिद्ध महात्मागण अकाल मृत्यु का उपशमन तो कर सकते हैं, किन्तु काल मृत्यु का वे भी निवारण नहीं कर सकते।

मृत्यु कैसे होती है

जब मृत्यु का समय होता है, तब उसके क्लेश की परिसीमा नहीं होती है।

मनुष्य जितने समय तक अर्थोपार्जन करने में सक्षम रहता है, उतने समय तक उसके स्त्री-पुत्र व परिवार के अन्य सदस्य उसके प्रति अनुरक्त रहते हैं। किन्तु वार्द्धक्य व जराग्रस्त होकर उसका शरीर जब जर्जर हो जाता है, तब उसे अक्षम मान कर उसकी अवज्ञा करनी शुरु हो जाती है। ऐसी अवस्था में भी मनुष्य में वैराग्य नहीं आता है। इसके पूर्व उसने जिन स्वजनों का पोषण किया था, उन्हीं का पोष्य बन वह उसी गृह में वास करता है, उसका शरीर क्रमश: रोग ग्रस्त हो मृत्यु की ओर बढ़ता जाता है।

जब मृत्यु का समय होता है, तब उसके क्लेश की परिसीमा नहीं होती है।

जब उसके शरीर की प्राण वायु निकलने को होती है, तब उसके नेत्र बाहर निकलने लगते हैं, उसे श्वास लेने में कष्ट होता है तथा वायु संचार की सभी नाड़ियां कफरुद्ध हो जाती हैं।

- इससे श्वास लेने व खाँसी आने पर बहुत कष्ट होता है और उसके कण्ठ से घर्र-घर्र की आवाज होती है।

  सभी मनुष्यों का मृत्यु कष्ट समान नहीं होता है। मृत्यु शैय्या पर मनुष्य शोकाकुल हो माता-पिता व भगवान को पुकारता है, किन्तु अधिकतर मनुष्य ऐसी अवस्था में कुछ भी बोल नहीं पाते हैं।

- ऐसे समय में उसकी अतृप्त भोग वासना, प्रिय भोग वस्तु उसे दु:ख प्रदान करती है।

  मृत्यु के समय मनुष्य चारों ओर अंधकार ही देखता है, वह पृथ्वी को आकाश तथा आकाश को पृथ्वी के रूप में देखता है तथा कभी-कभी वह अपने को महासमुद्र में डूबता-उतराता महसूस करता है।

- ऐसे समय में वह भयभीत हो मूर्च्छित हो जाता है।

  मृत्यु पथगामी मनुष्य का मुख सूख जाता है और वह बार-बार जल पीना चाहता है, वह बिस्तर पर छटपटा कर करवटें बदलता है, बार-बार मूर्च्छित होता है, अपने हाथों व पैरों को फेंकता रहता है, कभी खाट पर सोने की इच्छा करता है, तो कभी जमीन पर सोने की इच्छा करता है, वह उसी अवस्था में मूत्र व विष्ठा का त्याग कर देता है।

- ऐसे समय में वह चिन्ता करता रहता है, कि उसकी समस्त सम्पत्ति कौन प्राप्त करेगा, इन्हें व अपने परिवार जनों को छोड़ कर वह कहाँ जायेगा?

  मन के दु:ख से आकुल हो अश्रुमोचन करता हुआ वह बेहोश हो जाता है और एक समय उसकी मृत्यु हो जाती है।

स्थूल शरीर का नाश अर्थात् स्व कारण से पंच भूत में लय हो जाना ही मृत्यु है।

प्राकृतिक नियम के अनुसार पदार्थ का ध्वंस अवश्यम्भावी है, इसका विरोध करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है।

श्री वासुदेव ने एक बार कंस को कहा था -

मृत्यु जन्मवतां वीर देहेन सह जायते।
अद्य वा स्यात्शतान्ते वा मृत्युवे प्राणिनां ध्रुव:।।

अर्थात् 'हे वीर! जन्मधारी जीव के शरीर के संग ही मृत्यु अनभिव्यक्ताकार में उत्पन्न होता है, अत: अभी हो या सौ वर्ष बाद हो, प्राणी मात्र की मृत्यु ध्रुव सत्य है।'

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- जो प्रेम की उच्चतम पराकाष्ठा को दर्शाता है वह गुरु शिष्य का संबंध है। शिष्य किसी स्वार्थ वश गुरु से नहीं जुड़ता। गुरु के प्रति उसकी भावना में कहीं कोई स्वार्थ का तत्व नहीं होता। अगर होता है तो केवल निश्छल प्रेम तत्व, समर्पण तत्व जैसे कि राधा का कृष्ण के प्रति था, मीरा का कृष्ण के प्रति था।
- शिष्य सभी कुछ तो गुरु से प्राप्त करता है - भौतिक स्तर पर भी तथा अध्यात्मिक स्तर पर भी। परंतु उसके मन में किसी प्रकार की कोई आकांक्षा नहीं होती - न तो भौतिक सफलता की, न ही सिद्धि या साधनाओं की।
- ऐसा इसलिए नहीं कि शिष्य ध्येय रहित होता है अपितु इसीलिए कि उसे ज्ञात होता है कि गुरु तो माँ समान है जो कि स्वयं ही उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देंगे या उसके जीवन को यथोचित मार्गदर्शन दे देंगे। फिर व्यर्थ में कामना करने की क्या आवश्यकता ?
- एक माँ अबोध बालक के हाथ में चाकू नहीं थमा देती क्योंकि उसे ज्ञात है कि बालक स्वयं की हानि कर बैठेगा। इसी प्रकार सद्गुरुदेव भी सिद्धि रूपी दुधारी तलवार को शिष्य को जब तक हस्तगत नहीं करने देते जब तक कि उन्हें विश्वास न हो जाए कि शिष्य में अब उतना संयम, उतना सामर्थ्य आ गया है कि वह शक्ति को संभाल सके। एक वास्तविक शिष्य इस बात को समझता है तथा वह परिणाम की परवाह किए बगैर साधनाएं करता रहता है क्योंकि वह जानता है कि जब उसमें पात्रता होगी तो सद्गुरुदेव तत्क्षण सभी सिद्धियां उसमें उड़ेल देंगे।
- हर कार्य करते समय, साधना सम्पन्न करते समय, हर मंत्र जप या यज्ञ करते समय शिष्य अनुभव करता है कि सद्गुरुदेव उसके समीप ही कहीं तथा सूक्ष्म रूप से उसका मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा उसकी त्रुटियों को सुधार रहे हैं। यही निरंतर भावना वास्तविक गुरु पूजा है, गुरु वंदना है, गुरु आराधना है तथा जो शिष्य इस भावना के साथ अग्रसर होता है तो असफलता उसको स्पर्श भी नहीं कर सकती।
- गुरु के चित्र लगाना, भजन गाना, गुरु के नारे लगाना, पूर्ण समर्पण नहीं है, ये गुरु के प्रति शिष्य की भावना के चिह्न मात्र हैं। वास्तविक गुरु पूजन तो है गुरु द्वारा बताए ज्ञान को जीवित जाग्रत रखना, गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चलना तथा औरों को भी उस पर चलने के लिए प्रेरित करना।

- प्रत्येक व्यक्ति जब जन्म लेता है तो शूद्र के रूप में होता है, इसलिए कि उसको ज्ञान नहीं होता। उसको इस बात का ज्ञान नहीं होता कि मैं क्या हूँ और जब गुरु के पास में आता है, तब गुरु उसको एक नया संस्कार देते हैं। उसको यह समझाते हैं कि यह उचित है, यह अनुचित है और आज से तुम मेरी जाति के हो, मेरे गोत्र के हो, मेरे नाम के हो, मेरे ही पुत्र हो।
- हमारा पूरा शरीर अपने आप में शूद्रमय है और शूद्रमय शरीर ब्राह्मणमय शरीर बने यही जीवन का धर्म, यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
- इसी शरीर को भगवान का देवालय कहा है मंदिर कहा है। ये भगवान का मंदिर है। इसलिए 'शरीर शुद्धं रक्षेत' शरीर को शुद्ध और पवित्र बनाए रखना आवश्यक है, इसलिए आवश्यक है, कि हमें हर क्षण यह ध्यान रहे कि अन्दर मूल मंदिर में भगवान बैठे हुए हैं या जिनको हमने गुरु कहा है।
- गुरु है वही शिव हैं। शिव यानी कल्याण करने वाला, जो हमारा कल्याण कर सकें। जो इसमें भेद मानता है, वह अधम है। गुरु और शिव में भेद रहता है, जब तक हम शूद्र रहते हैं, तब तक भेद रहता है। और एक क्षण ऐसा आता हैं, जब साक्षात् उस शिवत्व का, उस कल्याण रूप का दर्शन करने लग जाते हैं।
- शिष्य को गुरु के हाथ, गुरु के पैर, गुरु की आंख, गुरु का नेत्र, गुरु का मस्तिष्क कहा गया है। क्योंकि गुरु अपने आपमें कोई साकार बिम्ब नहीं है, निराकार को एक मूर्ति का आकार दिया गया है। ये सारे शिष्य मिलकर के एक गुरुत्वमय बनता है, एक आकार बनता है।
- तर्क वितर्क की एक स्टेज है और तर्क वितर्क से अगली स्टेज शिष्यत्व की तब बनती है जब गुरु जो करता है वैसा नहीं करें जो गुरु कहे वैसा करें। दोनों में अंतर है। जो करे गुरु, वैसा आप करेंगे तब गड़बड़ हो जाएगी।
- इसलिए मैं जो करता हूँ वह तुम मत देखो उसका अनुसरण तुम मत करो। जो मैं कहूं उसका तुम अनुसरण करो।
- जब आप गुरु के शरीर से गुरु के आत्म से गुरु के पांव से घिसेंगे अपने आपको, एकाकार होंगे, आपमें भी सुगन्ध व्याप्त होगी। जब सुगन्ध व्याप्त होगी, तो ऐसी खुमारी आयेगी, एक मस्ती आयेगी। फिर काम करते हुए थकेंगे नहीं आप। फिर आपको यह लगेगा कि मेरा शरीर, मेरा समय नष्ट होता जा रहा है, मैं और क्या काम करूँ, कैसे बढ़ाऊं इस चेतना को, इस ज्ञान को कैसे फैलाऊं।
- अगर तुम जीवन में आनन्द प्राप्त करना चाहते हो, तो समर्पित होने की क्रिया सीखनी पड़ेगी, अपने प्राणों को गुरु के प्राणों में समावेश करने की क्रिया सीखनी ही पड़ेगी, अपने आप को भुलाना पड़ेगा।

नवरात्रि पर

नवरात्रि साधना सिद्धि प्रयोग

आदि शक्ति भगवती दुर्गा के सम्बन्ध में सर्वाधिक ग्रन्थों की रचना हुई है, पूरे भारतवर्ष में ऐसा कोई प्रदेश नहीं होगा, जहां किसी न किसी रूप में मां दुर्गा का आह्वान नवरात्रि के अवसर पर नहीं किया जाता हो, यह पर्व तो शक्ति, साधना, सौभाग्य का महापर्व है, जहां साधक सब कुछ भूल कर मां दुर्गा की स्तुति में, भक्ति में, पूजा में अपने आपको लीन कर देता है, शरीर और मन दोनों के कष्टों का पूर्ण रूप से निवारण मां के चरणों की पूजा में ही निहित है।

वेदोक्त ग्रन्थों में और उसके पश्चात की रचनाओं में जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, होली के सम्बन्ध में बहुत कम वर्णन दिया हुआ है उन्हीं महान ग्रन्थों में शारदीय नवरात्रि के सम्बन्ध में अत्यन्त विस्तार से विधान दिया हुआ है, **क्योंकि मां दुर्गा तो आद्या शक्ति हैं,** विष्णु की पालन शक्ति, ब्रह्मा की सृजन शक्ति और रुद्र की संहार शक्ति हैं, शक्ति का प्रत्येक तत्व इसी महाशक्ति से उत्पन्न हुआ अंश है, इसीलिए शारदीय नवरात्रि को शक्ति पर्व कहा गया है, और विशेष पूजा का विधान है।

शारदीय नवरात्रि के सम्बध में लिखा है, कि–

शरद्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्य ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः।।
सर्व बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य समन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

अर्थात् शरदकालीन इस महान नवरात्रि पूजन का महत्व अत्यन्त महान है, इस महापूजा से साधक सब बाधाओं से विमुक्त हो जाता है और धन-धान्य, सौभाग्य की प्राप्ति होती है, मनुष्य के भविष्य को उज्ज्वल करने वाली इस महापूजा के सम्बन्ध में कोई संशय नहीं हैं

नवरात्रि का फल तो पूर्ण रूप से गुरु-सामीप्य में साधना करने से ही प्राप्त होता है, क्योंकि गुरु तो शक्ति के साक्षात् स्रोत होते हैं और पूजा में, साधना में, सद्गुरुदेव अपना अंश साधक को प्रदान करते हैं, देवी रहस्य तन्त्र में लिखा है, कि–

तांत्रोक्त नवरात्रि स्यात् गुरोरं व च साधकः।
स सिद्ध सफल पूर्ण दुर्लभः प्राप्यते क्षणः।।
गुरौ सिद्धि गुरो पूर्ण शक्ति पीठस्तथै व च।
यस्य साधक सौभाग्य पूर्ण सिद्धं न संशयः।।

अर्थात् दुर्लभ योगों से सम्पन्न 'सिद्धेश्वरी नवरात्रि' यदि साधक के जीवन में सौभाग्य से प्राप्त हो जाय और यदि उसे सिद्ध गुरु का सम्पर्क-साहचर्य प्राप्त हो जाय, तो इससे बड़ा सौभाग्यशाली साधक हो ही नहीं सकता, गुरु ही सिद्धि है, गुरु ही पूर्ण है और जहां गुरु का निवास है, साधक के लिए वही शक्ति पीठ है, यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर, साधक गुरु के समीप बैठ कर, साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह सौभाग्यशाली है और साधना सम्पन्न करने पर वह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं।

अश्विन शुक्ल 1 गुरुवार 07.10.21 को नवरात्रि का प्रथम दिवस है। इस दिन घट स्थापना कर माँ दुर्गा का आवाहन किया जाता है। उस दिन शक्ति से सम्बन्धित सभी प्रयोग किये जाते हैं। शत्रु बाधा, शत्रु विवाद-विजय प्रयोग सम्पन्न करने का यह दिवस है।

अश्विन शुक्ल 2, शुक्रवार 08.10.21 को सौन्दर्य सिद्धि, भौतिक सिद्धि और कार्य सिद्धि दिवस है। इस दिन कार्य सिद्धि से सम्बन्धित विशेष प्रयोग करने चाहिए। जिससे रुके हुये कार्य इत्यादि सम्पन्न हो।

अश्विन शुक्ल 3, शनिवार 09.10.21 यह दुर्गा सिद्धि दिवस महाकाली सिद्धि दिवस भी है, इस दिन प्रातः शत्रु बाधा, शत्रु स्तम्भन, शत्रु पर विजय एवं अपने स्वयं के विकारों पर विजय प्राप्ति की साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए।

अश्विन शुक्ल 4, चतुर्थी तिथि का क्षय है अतः 9.10.21 शनिवार शाम को यह साधना भी करें, इस दिवस का उपयोग कुण्डलिनी जागरण हेतु किया जाता है। कुण्डलिनी जागरण यानि कि भीतर की जागृति, आत्म जागृति होने पर ही साधक शिवत्व को प्राप्त कर सकता है और इस दिन अपने अन्दर की पूर्ण चेतना उत्पन्न कर आन्तरिक चेतना जागरण का दिवस है।

दुर्लभ योगों से सम्पन्न 'सिद्धेश्वरी नवरात्रि' यदि साधक के जीवन में सौभाग्य से प्राप्त हो जाय और यदि उसे सिद्ध गुरु का सम्पर्क-साहचर्य प्राप्त हो जाय, तो इससे बड़ा सौभाग्यशाली साधक हो ही नहीं सकता, गुरु ही सिद्धि है, गुरु ही पूर्ण है और जहां गुरु का निवास है, साधक के लिए वही शक्ति पीठ है, यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर, साधक गुरु के समीप बैठ कर, साधना सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह सौभाग्यशाली है और साधना सम्पन्न करने पर वह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं।

अश्विन शुक्ल 5, रविवार को उपांग ललिता दिवस है जो जीवन को क्रियाशक्ति सिद्धिदिलाने की देवी है। इस दिन क्रिया योग जिससे शरीर का अणु-अणु चैतन्य हो जाता है और व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से अपने जीवन के कार्य सम्पन्न करने में समर्थ रहता है। दूसरों के आधीन नहीं रहता, ऐसी उपांगललिता साधना इस दिन सम्पन्न करते हैं।

अश्विन शुक्ल 6, सोमवार 11.10.21, यह महालक्ष्मी सिद्धि दिवस है। इस दिन व्यापार, आकस्मिक धन-लाभ, व्यापार में वृद्धि नया व्यापार एवं व्यापार में विस्तार से सम्बन्धित साधना सिद्धि हेतु प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। इस दिन साधक लक्ष्मी साधनाएं भी सम्पन्न कर सकता है।

अश्विन शुक्ल 7 मंगलवार 12.10.21, यह नवरात्रि दिवस है और विशेष बात यह है कि सरस्वती सिद्धि दिवस भी है। इस दिन वाणी, ज्ञान, प्रभाव, बुद्धि से सम्बन्धित सिद्धि प्राप्त करने का दिवस है। अपने बालकों को भी इस दिन विशेष प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न कराना चाहिए।

अश्विन नवरात्रि 8 बुधवार 13.10.21, इस दिन यशप्राप्ति, उन्नति, प्रशंसा, सहयोग हेतु साधना प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। धन का जितना महत्व है उससे अधिक महत्व व्यक्ति के यश, सम्मान एवं कीर्ति का है। अत: इस दिन का विशेष महत्व माना गया है।

अश्विन शुक्ल 9,गुरुवार 14.10.21, यह यज्ञ दिवस भी है इस दिन नवरात्रि में सम्पन्न की गई सभी साधनाओं की पूर्ण सफलता हेतु यज्ञ में आहुतियां प्रदान की जाती हैं। यह मूल रूप से सर्वमनोकामनापूर्ति दिवस है। इस दिन प्रात: विशेष मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न कर यज्ञ, आरती, ब्राह्मण भोजन सम्पन्न करना चाहिए।

सिद्धि दिवस में विधि-विधान सहित पूजन सम्पन्न कर, साधक अपना जीवन नये ढंग से प्राप्त कर सकता है।

नवरात्रि साधना हेतु जो अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न किये जाने हैं, उस हेतु विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता रहती है और ये 10 दुर्लभ वस्तुएं निम्न प्रकार से हैं-

1. ताम्र पत्र पर अंकित दुर्गा यंत्र, 2. प्राणप्रतिष्ठित दुर्गा चित्र, 3. 11 कमल बीज, 4. उपांग ललिता सिद्धि क्रिया चक्र, 5. सरस्वती गुटिका, 6. सौन्दर्य मुद्रिका, 7. शत्रु नाश हेतु तांत्रोक्त नारियल, 8. लक्ष्मी शंख, 9. अष्टकीर्ति साफल्य, 10. योगशक्ति माला।

साधना विधान

ये सभी सामग्री एक विशेष पैकेट रूप में बना दी गई हैं, जिससे आप अपने घर में विधि-विधान सहित पूजन, साधना सम्पन्न कर सकें।

इसके अतिरिक्त साधना में आवश्यक सामान्य सामग्री जैसे आसन, जलपात्र, ताम्र पात्र, थाली, कुंकुंम, चावल, केसर, पुष्प, फूलमाला, नारियल, मौली, अबीर गुलाल, अगरबत्ती, धूप, घी का दीपक, फल, प्रसाद इत्यादि की व्यवस्था अवश्य ही कर लें और सभी वस्तुओं को पूर्ण रूप से प्रयोग में लाते

हुए, पूजा विधान सम्पन्न करें।

नवरात्रि साधना के प्रथम दिन प्रात: जल्दी उठकर अपना पूजा स्थान पूर्ण रूप से साफ करें, जल से स्थान को धो दें और फिर शुद्ध आसन बिछा कर पूजा प्रारंभ करें, सभी सामग्री अपने पास रखें, जिससे साधना प्रारंभ होने के पश्चात् उठना न पड़े, अब अपने सामने एक बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर गुरु यंत्र स्थापित करें, सर्वप्रथम गुरु ध्यान करें, गुरु आज्ञा व आशीर्वाद मानसिक रूप से प्राप्त करें, जिससे पूरी नवरात्रि निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके, अब बाजोट के मध्य में एक चावल की ढेरी पर बड़ा जल पात्र रखें, उस पर नारियल स्थापित करें तथा अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें ''मैं (अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र) शारदीय नवरात्रि पूजन अर्चन कर्म सम्पन्न कर रहा हूँ,'' अब इस कलश को एक दूसरे बाजोट पर स्थापित कर दें तथा गणपति पूजन करें।

अब अपने सामने सर्वप्रथम दुर्गा यंत्र स्थापित कर दें, साथ ही दुर्गा चित्र अपने सामने तस्वीर रूप में लगा दें तथा पूजन सामग्री से पूजन करें, पुष्प चढ़ाएं और अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करें–

मंत्र

।। ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्य दर्प निसूदिनी
पूजां गृहाण सुमुखि त्रिपुरे शंकरप्रिये।।

प्रत्येक दिवस का मंत्र जप अनुष्ठान अलग-अलग है और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त योग शक्ति माला से मंत्र जप प्रति दिन सम्पन्न करना है।

नीचे जो मंत्र दिये जा रहे हैं, वे विशेष मंत्र है उपरोक्त माला से एकाग्र चित्त होकर भक्ति भाव से मंत्र जप प्रतिदिन सम्पन्न करना है।

अश्विन शुक्ल - 1

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

अश्विन शुक्ल - 2

।। ॐ ह्रीं नम: भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा।।

अश्विन शुक्ल - 3

।। ॐ क्रीं दुं दुर्गायै नम:।।

अश्विन शुक्ल - 4

।। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं कत्यायन्यै नमः।।

अश्विन शुक्ल - 5

।। क्लीं उपांगललिता देवी विद्महे कामेश्वरी धीमहि ।।

अश्विन शुक्ल - 6

।। ऐं ह्रीं आद्यलक्ष्मीं स्वयंभुवै ह्रीं ज्यैष्ठायै नमः।।

अश्विन शुक्ल - 7

।। ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं सरस्वत्यै नमः।।

अश्विन शुक्ल - 8

।। ॐ श्रीं स्ह क्ल्हीं श्रीं सर्व कीर्ति सर्व साम्राज्यां नमः।।

अश्विन शुक्ल - 9

।। ॐ ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्ट ग्रहान हुं फट स्वाहा।।

इस प्रकार इन नौ दिनों में प्रतिदिन विशेष मंत्र की कम से कम 5 माला मन्त्र जप सम्पन्न करनी है, गणपति पूजन, दुर्गा आरती सम्पन्न करना है, नित्य नैवेद्य, फल और पुष्प अलग लायें, जिस दिन जो प्रसाद चढ़ाएं, वह प्रसाद उसी दिन ग्रहण कर लें।

नवम दिवस को फल तथा नारियल को देवी को अर्पण किया जाता है। इस प्रकार पूर्ण पूजा विधान सम्पन्न होने पर अपनी श्रद्धा अनुसार ब्राह्मण भोजन, नौ कुंवारी कन्याओं को भोजन कराना चाहिए और उन्हें यथायोग्य दक्षिणा देनी चाहिए। पूर्ण प्रयोग अनुष्ठान सम्पन्न हो जाने के पश्चात् यन्त्र तथा माला के अतिरिक्त सभी सामग्री जल समर्पण कर देनी चाहिए।

उपरोक्त पूजा विधान सम्पन्न करने से साधक मां भगवती की पूर्ण कृपा प्राप्त करता है, उसका जीवन, उसका ज्ञान, उसका प्रभाव, उसका सौन्दर्य, श्रेष्ठता में परिवर्तित हो जाता है, मां की कृपा जब प्रारम्भ होने लगती है, तो उसका कोई अन्त नहीं है, अपने चित्त को पूर्ण रूप से खोल कर मां के सम्मुख अपने आपको समर्पित कर देना है।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते।।

साधना सामग्री- 720/-

श्री दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री।।1।।
जय अम्बे गौरी.....

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको।।2।।
जय अम्बे गौरी.....

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर सजै।।3।।
जय अम्बे गौरी.....

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।।4।।
जय अम्बे गौरी.....

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।।5।।
जय अम्बे गौरी.....

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती।।6।।
जय अम्बे गौरी.....

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।7।।
जय अम्बे गौरी.....

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
जय अम्बे गौरी.....

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत लाल मृदंगा और बाजत डमरू।।9।।
जय अम्बे गौरी.....

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता।।10।।
जय अम्बे गौरी.....

भुजा आठ अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
जय अम्बे गौरी.....

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) माल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।।12।।
जय अम्बे गौरी.....

(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।।3।।
जय अम्बे गौरी.....

06.10.21

• सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या

पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजलि

श्राद्ध विधान

आश्विन महीने की प्रतिपदा से अमावस्या तक के दिन श्राद्ध दिवस कहलाते हैं, धर्मग्रंथों में यह मान्यता है कि एक पीढ़ी पहले के पूर्वजों के प्रति हम श्रद्धानत हों, उन्हें स्मरण करें और उनके प्रति कृतज्ञ बनें। इसका महत्व इस दृष्टि से भी है कि यहां जीवित व्यक्तियों में परस्पर स्नेह अपनत्व और आदर की भावना है, वहीं अपने मृतक पूर्वजों के प्रति हम श्रद्धानत रहते हैं और उन्हें सम्मान प्रदान करते हैं, श्राद्ध के दिन हम शुद्ध पवित्र होकर भोजन बनावें और यथायोग्य एक ब्राह्मण या एक से अधिक ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन करावें यदि यह संभव न हो तो कुंवारी कन्याओं को बुलाकर भोजन करावें और पूर्वजों के प्रति श्रद्धांजली व्यक्त करें कि हम आपको भूले नहीं हैं, हमारे शरीर में आपका रक्त प्रवाहित है और आपकी ही कृपा से हम पृथ्वी पर जन्म लेकर सुख भोग सके। इसके लिए हम आज के दिन आपके प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हैं।

वर्तमान में श्राद्ध का, पितृ पक्ष का अर्थ मात्र इतना ही समझा जाता है कि ये वर्ष के कुछ ऐसे दिन होते हैं जबकि कोई मंगल कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता है और मृत आत्मायें इस धरा पर उतर आती हैं, जो इसका बहुत ही सीमित अर्थ है। यह इतनी सामान्य घटना नहीं है वरन् इसका रहस्य तो ज्योतिष के ग्रंथों से मिलता है। पितृ पक्ष के काल में सूर्य इस प्रकार स्थित होता है, जिससे इन क्षणों में किए गए श्राद्धकर्म द्धारा पितर वर्ग को पूरे वर्षभर के लिए तृप्ति मिल जाती है और फिर एक सद्‌गृहस्थ को पूरे वर्ष नित्य श्राद्ध के विधान की पालन करने की आवश्यकता शेष नहीं रहती, यद्यपि ऐसा कोई बंधन भी नहीं है।

परंतु उचित ज्ञान के अभाव के साथ-साथ वर्तमान में भावनात्मक रूप से भी इतनी कमी आ गई है, जिससे व्यक्ति अपने पितरों के प्रति कर्तव्य का निर्वाह करने में अपने आपको असमर्थ पाता है। किन्तु यह भी एक सत्यता है कि जिस घर में आध्यात्मिकता, परम्पराओं का पालन, गुरु अथवा पितृ वर्ग के प्रति असम्मान का भाव होता है वहां मनोमालिन्य, दीनता और आपस में कलह जैसी बातें बनी रहती हैं, भले ही आज के युग में कोई इस तथ्य को स्वीकार करे अथवा न स्वीकार करे।

यह सृष्टि व्यक्ति के आँखों के समक्ष जितनी दिखाई पड़ती है, अपने अस्तित्व में केवल उतनी ही नहीं है। सूक्ष्म जगत में अनेकानेक भेद छुपे हैं, जिन्हें तर्क और बुद्धि से नहीं अपितु चेतना, साधना और प्रज्ञा से ही अनुभव किया जा सकता है।

श्राद्ध का अर्थ केवल ब्राह्मण को भोजन कराना मात्र ही नहीं होता, यह तो श्रद्धा व्यक्त करने का सबसे स्थूल रूप है और जिस प्रकार शास्त्रों में श्राद्ध कर्म करने के योग्य ब्राह्मणों के वर्णन मिलते हैं, उसे जिन लक्षणों से युक्त होने की आज्ञा मिलती है उसके आधार पर तो खेदपूर्वक यही कहना पड़ेगा कि हम श्राद्ध नहीं करते भोज कराते हैं। भोज की तुष्टि से पितरों का कल्याण नहीं हो सकता, उल्टे दोष ही लगता है।

यद्यपि परिवार के मृत सदस्य प्रत्येक अमावस्या को ही संतुष्टि प्राप्त करने के लिए उपस्थित होते हैं, किन्तु पितृपक्ष में तो वे पूरे पन्द्रह दिन तक वायु रूप में अपने वंशजों के द्वार पर खड़े ही रहते हैं। यदि उस काल में भी उन्हें अपने वंशजों से तर्पण आदि नहीं प्राप्त होता तो वे पितृपक्ष बीत जाने के बाद भी प्रतीक्षा करते रहते है। और जब तक सूर्य का संक्रमण वृश्चिक राशि में नहीं हो जाता तब तक वे घोर पीड़ा के साथ प्रतीक्षारत रहते हैं तथा अंत में हताश-निराश वापस लौट जाते हैं जिसका प्रभाव परिवार पर अच्छा नहीं पड़ता है।

सूक्ष्म जगत में अनेकानेक भेद छुपे हैं, जिन्हें तर्क और बुद्धि से नहीं अपितु चेतना, साधना और प्रज्ञा से ही अनुभव किया जा सकता है।

श्राद्ध का अर्थ केवल ब्राह्मण को भोजन कराना मात्र ही नहीं होता, यह तो श्रद्धा व्यक्त करने का सबसे स्थूल रूप है

भोज की तुष्टि से पितरों का कल्याण नहीं हो सकता, उल्टे दोष ही लगता है।

यहाँ एक बात और भी उल्लेखनीय है कि यह सदैव आवश्यक नहीं कि परिवार के मृत सदस्य प्रेत योनि में ही हों, वे प्रेत योनि में न जाते हुए भी जन्म और मरण के बीच एक विचित्र सी अतृप्तावस्था में रह जाते हैं। जो प्रेत योनि में चले जाते हैं, वे परिवार के सदस्यों द्वारा उनके मुक्ति के उपाय न करने पर भयंकर उत्पात मचाकर रख देते हैं।

शास्त्रों में ऐसी अनेक स्थितियों के लिए पृथक-पृथक विधान रचे गए हैं, सपिंडीकरण जैसी विधियां बनाई गई हैं, मृत सदस्य को पितृवर्ग में सम्मिलित किए जाने के लिए उपाय वर्णित किए गए हैं, प्रेत योनि से मुक्ति दिलाने के उपाय कहे गए हैं, किन्तु शास्त्रों के ज्ञाता और पूर्ण रूप से विधि-विधान पूर्वक उन विधियों को सम्पादित कराने वाले विद्वान अब रह ही कितने गए हैं? यह भी एक विडम्बना है कि जहाँ कोई श्रद्धालु व्यक्ति अपने पूर्वजों की तृप्ति हेतु शास्त्रोक्त क्रियाएँ सम्पन्न कराना चाहता है, वहाँ उसे केवल भोजन ग्रहण करने वाले ब्राह्मण ही मिलते है, जो हड़बड़ी में कुछ खाकर, कुछ बांधकर अगले घर की राह देखते हैं। जबकि शास्त्रों में वर्णन है कि श्राद्ध हेतु जो ब्राह्मण भोजन ग्रहण करें वह एक दिन एक ही स्थान पर भोजन ग्रहण करें। इसके अतिरिक्त महानगरों में अब ऐसा सुलभ नहीं रह गया है कि साधक ऐसे ब्राह्मण वर्ग की खोज करने निकले और वह उसे प्राप्त हो जाए। अत: ऐसी परिस्थिति में उचित यही रह गया है कि साधक स्वयं ही अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने पितृवर्ग को संतुष्टि प्रदान करें और ऋण से मुक्त हो सके। जिस कार्य को कर्मकांड के रूप में किया जा सकता है उसी कार्य को साधना के रूप में भी किया जा सकता है। साधना और कर्मकांड में कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं होता। कर्मकांड के ज्ञाता विशिष्ट होते हैं जबकि साधना की पद्धति सरल और सबके लिए होती है।

ऐसी ही साधनाओं में एक प्रमुख साधना है जो श्राद्ध पद्धति के स्थान पर आश्विन माह की अमावस्या को सम्पन्न की जाती है। यह पितृ विसर्जन अमावस्या के नाम से भी जानी जाती है और इस दिन कोई भी साधक अपने पूर्वजों (पिता, पितामह, प्रपितामह) के प्रति सम्मान व्यक्त कर सकता है। बहुधा व्यक्ति को इस बात की जानकारी नहीं होती कि उसके परिवार में कोई सदस्य भारतीय पंचांग की दृष्टि से किस तिथि में मृत्यु को प्राप्त हुआ और ऐसी स्थिति में उचित रहता है कि साधक पितृ विसर्जन अमावस्या को ही यह साधना सम्पन्न करें।

इसके लिए आवश्यक है कि साधक के पास सोमप यंत्र हो जो एक ताम्रपत्र पर अंकित हो और दिव्य पितृ मंत्रों से चैतन्य किया गया हो। ऐसे यंत्र पर अपने परिवार की पिछली तीन पीढ़ियों तक का तर्पण भलीभांति किया जा सकता है। पितृ विसर्जन अमावस्या अर्थात् दिनाँक 06.10.2021 को प्रात: शुद्ध श्वेत वस्त्र पहन पूर्वाभिमुख होकर बैठें। यदि संभव हो तो घर के बीचों-बीच खुले स्थान पर बैठे और सामने श्वेत वस्त्र पर इस यंत्र को स्थापित कर दें। यंत्र के समक्ष अपने जिन-जिन पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करना हो उनकी उपस्थिति के प्रतीक के रूप में उतने ही लघु नारियल स्थापित करें, सुगंधित अगरबत्ती लगाएं व यंत्र पर चंदन का टीका लगाएं। इसके उपरांत पितृरेश्वर माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।। ॐ सर्व पितृ देवताभ्यो नम: ।।

मंत्र जप के उपरांत समस्त सामग्री को आसन व वस्त्र सहित किसी सद्ब्राह्मण को दक्षिणा के साथ दान में दे दें। यदि ऐसा करने में कोई बाधा हो तो सम्पूर्ण सामग्री को किसी वटवृक्ष के नीचे रख दें। ऐसा करने से साधक को सम्पूर्ण श्राद्ध कर्म करने से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है, और निश्चय ही पितृवर्ग की तृप्ति द्वारा उसके जीवन में सुख-संतोष का आगमन होता है।

साधना सामग्री - 510/-
(यंत्र, माला एवं 5 लघु नारियल)

लोभ और कामनाओं पर विजय प्राप्त करने वाला

महापुरुष होता है

पाण्डव और कौरव युद्ध की तैयारियों में संलग्न थे परन्तु युधिष्ठिर मन ही मन दु:खी थे। वे धन और राज्य के लिए युद्ध नहीं करना चाहते थे। शांति चाहते थे। वे सोचते कि यदि जीवन निर्वाह हेतु कौरव पाँच गाँव भी दे दें तो युद्ध क्यों व्यर्थ में हो। क्यों रक्तपात हो। लेकिन लोग शांन्ति एवं धैर्य शील व्यक्ति को कमजोर समझ लेते हैं और अभिमान में डूबा दुर्योधन ऐसा ही समझ रहा था।

फिर भी युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से अपनी इच्छा प्रकट कर दी, उन्होंने कहा कि युद्ध से लाखों निरपराध लोग मारे जायेंगे। धरती रक्तरंजित होगी अत: आप दुर्योधन को समझायें कि वह हमें पांच गाँव दे दे तो युद्ध टाला जा सकता है। तब श्रीकृष्ण ने कहा कि धर्मराज, मैं दुर्योधन को जानता हूँ वह आपके प्रस्ताव को कदापि स्वीकार नहीं करेगा फिर भी मैं आपका शांति का सन्देश लेकर हस्तिनापुर जाऊंगा और दुर्योधन को समझाने का प्रयास करूंगा।

यह जानकर, युद्ध न चाहने वालों के हृदय में एक आशा की किरण जागी।

दुर्योधन को जब मालूम हुआ कि श्रीकृष्ण शांति का सन्देश लेकर हस्तिनापुर आ रहे हैं, तो वह प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि श्रीकृष्ण रागरंग के प्रेमी हैं वह उन्हें रागरंग में फंसाकर अपनी मुट्ठी में कर लेगा।

दुर्योधन ने श्रीकृष्ण के स्वागत सत्कार में नगर को खूब सजाया। मार्गों को तोरण द्वार एवं वंदनवारों से सुसज्जित किया। उनके निवास के लिए सुन्दर भवन की व्यवस्था की, उनकी सेवा के लिए सुन्दर स्त्रियों का प्रबंध किया। खाने हेतु भांति-भांति के व्यंजनों की व्यवस्था की। उसने सोचा वह इन साधनों से श्रीकृष्ण के मन को अपनी मुट्ठी में कर लेगा।

श्रीकृष्ण का रथ जब हस्तिनापुर के नगर द्वार पर पहुंचा तो दुर्योधन ने अपने मंत्रियों के साथ उनकी अगवानी की और जयघोष के साथ एवं सुगंधित पुष्पमालाओं से उनका भव्य स्वागत किया।

दुर्योधन श्रीकृष्ण को अपने साथ लेकर राजभवन की ओर चल पड़ा साथ ही मंत्रीगण एवं अन्य देशों के राजा भी थे।

राजमार्ग सुगंधित पुष्पों एवं वन्दनवारों से सजाया गया था। वातावरण में सुगंध ही सुगंध थी और मधुर स्वरों में स्वागत गान हो रहे थे। सुन्दर स्त्रियाँ फूलों की वर्षा कर रही थी, दुर्योधन श्रृंगार, सौन्दर्य एवं विलास के साधनों के मध्य होता हुआ श्रीकृष्ण को राजभवन ले गया एवं वहां निवेदन किया कि वासुदेव आपके आतिथ्य के लिए हमने सुन्दर भवन का निर्माण कराया है। आप वहां चलकर विश्राम करें। वहाँ सभी प्रकार की व्यवस्था है। आपको किंचित मात्र भी असुविधा नहीं होगी। दास-दासियां चौबीसों घंटे आपकी

सेवा में उपस्थित रहेंगे।

दुर्योधन की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया–दुर्योधन, तुमने मेरा जो स्वागत सत्कार किया है, उसके लिए मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ पर मैं हस्तिनापुर में विदुर के घर को छोड़कर और कहीं नहीं ठहरूंगा।

दुर्योधन ने बहुत अनुनय-विनय की पर श्रीकृष्ण के मन पर रंच मात्र भी उसका प्रभाव नहीं पड़ा। श्रीकृष्ण दुर्योधन के सुन्दर भवन और उसके द्वारा व्यवस्था की गई सारी विलासपूर्ण सामग्रियों को छोड़कर उन विदुर के घर जा पहुंचे जो भक्त और चरित्रनिष्ठ होते हुये भी उपेक्षित थे और दुर्योधन हाथ मलता रह गया। उसके द्वारा एकत्रित की गई विलासी जीवन की सारी व्यवस्था धरी की धरी रह गई। उसे क्या पता था कि जो महापुरुष होते हैं या जो सत्य, धर्म, न्याय के मार्ग के पथिक होते हैं उन्हें इन सामग्रियों से बहलाया नहीं जा सकता फिर श्रीकृष्ण तो साक्षात् परब्रह्म हैं।

सद्गुरुदेव का जीवन कितना सादगीपूर्ण था, यह बात तो वही लोग जानते हैं जिन्होंने उनके साथ कुछ क्षण बिताये हैं। यदि हमें सत्य, धर्म के मार्ग पर चलना है अपने जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाकर कुछ प्राप्त करना है तो सद्गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलना ही एकमात्र रास्ता है सादगीपूर्ण जीवन एवं उच्च विचारों का चिंतन, दूसरों के प्रति दया, करुणा का भाव एवं उच्च चरित्र ही हमें हमारे लक्ष्य तक पहुंचा सकता है।

आज भी लोग अपने धन के मद में चूर हैं और इसी अहंकार में दूसरे का अपमान करने में किंचित मात्र भी संकोच नहीं करते। उन्हें यह ज्ञान नहीं होता कि अगले पल क्या होने वाला है एवं इस धन-सम्पदा, पद-प्रतिष्ठा में से एक कण मात्र भी उनके साथ नहीं जायेगा।

वह सद्गुरुदेव का नाम तो लेते हैं लेकिन उनके जीवन से कोई प्रेरणा नहीं लेते। उनके वचनों को सुनते तो हैं लेकिन अपने जीवन में उतारते नहीं।

सद्गुरुदेव कहते हैं, कि तुम्हें सिर्फ मन को शुद्ध एवं निर्मल करने की आवश्यकता है, शेष कार्य तो मैं करता ही हूँ।

जब एक व्यक्ति अपना चेहरा दर्पण में देखता है और उसे अपना चेहरा दर्पण में दिखाई नहीं देता है, तो वह दर्पण पर लगी धूल को साफ कपड़े से पोंछ देता है और तब उसे अपना चेहरा स्पष्ट दिखाई देने लगता है। दर्पण में जो प्रतिबिम्ब दिखाई दिया, वह केवल उस पर लगी धूल को हटा देने से सम्भव हुआ, दर्पण वही था, चेहरा वही था, न तो नेत्रों ने दर्पण पर कोई चमत्कार किया, न ही दर्पण ने चेहरे पर कोई चमत्कार किया और न ही कपड़े द्वारा दर्पण को पोंछ देने से बिम्ब जाग्रत हो गया, सिर्फ धूल साफ करने से, उसे दर्पण ने वही प्रतिबिम्ब दिखाया जो उसके पीछे छिपा हुआ था। ठीक उसी प्रकार आज मनुष्य अपनी शुद्ध अन्तरात्मा से पहिचान इसलिए नहीं कर पा रहा है, क्योंकि बुद्धि पर वासना, अहंकार, लोभ, स्वयंसिद्धता, अभिमान, धन, श्रेष्ठता, सुन्दरता रूपी धूल की परतें जमी हुई हैं। अतः हमें गुरु मंत्र रूपी अस्त्र से इन परतों को काटकर दूर फेंकना है जिससे हम अन्तरात्मा में विराजमान सद्गुरुदेव से साक्षात्कार करा सकें।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – सप्ताह के प्रारम्भ के दिन सुखद रहेंगे। कोशिश करें नौकरी भी मिल सकती है। कम्प्यूटर वर्क के व्यापार में आगे बढ़ सकते हैं। सेहत का ध्यान रखें, शत्रु मजाक उड़ायेंगे। आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं रहेगी। धार्मिक यात्रा हो सकती है। जमीन के कारोबार में धनप्राप्ति सम्भव है। घरेलू समस्याओं में उलझ सकते हैं, कोई छुपा राज खुल सकता है। कोई भी गैरकानूनी कार्य न करें। किसी का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। नौकरी में पदोन्नति का योग है, उच्चाधिकारी वर्ग संतुष्ट रहेगा। प्यार में सफलता मिलेगी। आखिरी सप्ताह अनुकूल नहीं है। वाहन चालन में सावधानी बरतें। गृहस्थ में तनाव रहेगा। अपने ही धोखा दे सकते हैं। माह के आखिरी दिन पति-पत्नी में गलतफहमी दूर होगी। आप गृहस्थ सुख प्राप्ति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27

वृष –माह का प्रारम्भ श्रेष्ठ है, समय आपके पक्ष में आयेगा। प्रयास सफल होंगे। विदेश जाने का योग है। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। शत्रुओं से सावधान रहें। किसी अंजान से मुलाकात जीवनचर्या में बदलाव लायेगी, संतान का सहयोग मिलेगा। किसी से राह चलते उलझें नहीं। इस समय वाहन न खरीदें। वाहन चालन में भी सावधानी रखें। कोई गलत कार्यों में फंसा सकता है। आखिरी सप्ताह में मिले-जुले परिणाम रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। सभी का सहयोग प्राप्त होगा। जमीन-जायदाद के मामले मिल-बैठ कर सुलझा सकेंगे। आकस्मिक धनप्राप्ति हो सकती है। आप नवार्ण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1, 2, 3, 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मिथुन – माह का प्रथम सप्ताह श्रेष्ठ है। व्यापार में उन्नति होगी। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शत्रु को जवाब देने में सक्षम होंगे। मंजिल तक पहुँचेंगे। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। काम के प्रति लापरवाही न बरतें। नशें से दूर रहें। वाहन चलान में सावधानी रखें। आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। ऋण से मुक्ति मिलेगी। माह के मध्य में असंतोष रहेगा। शत्रु पक्ष परेशान करेंगे। अपनों का सहयोग नहीं मिलेगा, कारोबार में नुकसान हो सकता है। किसी उच्च अधिकारी का सहयोग मिलेगा। लक्ष्य के प्रति सजग रहेंगे, गलत सोहबत से दूर रहें। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में लगेगा। कहीं बाहर जाने का प्रोग्राम बन सकता है। आप पूर्ण सफलता दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 3, 4, 5, 12, 13, 21, 22

कर्क – माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। कोई परेशानी हो सकती है, कोई भी गैरकानूनी कार्य न करें। शत्रुओं से सावधान रहें। कोई भी कार्य सोच-समझकर करें। व्यापार के सिलसिले में यात्रा हो सकती है। अपने आप पर भरोसा रखें। वाणी मे मधुरता एवं संयम रखें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। वाद-विवाद से बचें। परिवार के साथ अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना बन सकती है। जीवनसाथी से सुख एवं सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। आप आलस्य से दूर रहें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। अचानक कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। माह के अंत में किसी बीमारी की शिकायत हो सकती है। किसी भी व्यापारिक अनुबंध के पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें। आप रोग निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24, 25

सिंह – माह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, तीर्थ यात्रा भी हो सकती है। छोटी-छोटी बातों पर परेशान न हो। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। विदेश यात्रा हो सकती है। अचानक भाग्य जागरण हो सकता है। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी परन्तु मानसिक चिंतायें घेरे रहेंगी। स्वास्थ्य खराब रहेगा। विद्यार्थियों के लिए उत्तम समय है। भाईयों में सहयोग रहेगा। तीसरे सप्ताह में किसी दुविधा में फंस सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाओं से उदासी रहेगी। आखिरी सप्ताह में अटके रुपये प्राप्त होंगे। अन्य स्रोतों से धन प्राप्त होगा। यात्रा से फायदा होगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। भाग्य जागरण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27

कन्या – प्रारम्भ सफलतादायक रहेगा। मनोवांछित सफलता मिलेगी। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। किसी छोटी सी बात के कारण मानसिक अशांति होगी। आकस्मिक धन लाभा हो सकता है। माह के मध्य में स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आर्थिक स्थिति पर ध्यान दें। भाईयों में मतभेद दूर होगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचिपूर्वक लगेगा। तीसरे सप्ताह में सोचे अनुसार कार्य न होने से टेंशन होगा। गलतियां बार-बार न दोहरायें। किसी राह चलते व्यक्ति से बहस से बचें। किसी गैर कानूनी कार्य में शक के दायरे में

आ सकते हैं। इस समय शांति से एवं सोच-समझ कर निर्णय लें। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। यात्रा से लाभ होगा। भुवनेश्वरी साधना करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 10, 11, 18, 20, 28, 29, 30

तुला - प्रथम सप्ताह का प्रारम्भ शुभ रहेगा। मानसिक परेशानी दूर होगी। आपके अच्छे व्यवहार की सभी कद्र करेंगे। जीवनसाथी का प्यारभरा सहयोग मिलेगा। सफलता से खुशी मिलेगी। दूसरे सप्ताह में घर में झगड़े का वातावरण हो सकता है। किसी कार्य में लापरवाही न करें। नशीले पदार्थों का सेवन न करें। यात्रा से लाभ होगा। ज्यादा लालच में न पड़ें। नौकरीपेशा लोगों को ऑफिस में अशांति का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य थोड़ा खराब हो सकता हे। समय का सदुपयोग करें। प्यार में सफलता मिलेगी। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय है। धीरे-धीरे परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। आखिरी सप्ताह में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। अटके हुये कार्य मित्रों के सहयोग से पूरे होंगे। भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 12, 13, 21, 22

वृश्चिक - प्रारम्भ के 3-4 दिन प्रतिकूल हैं। किसी से उलझें नहीं, शत्रु पक्ष हावी रहेगा। किसी और की गलती आप पर थोपी जा सकती है, कोई भी कार्य सतर्कता से करें। इसके बाद परिस्थितियां स्वयं बदलेगी। विद्यार्थियों को उत्तम परिणाम की प्राप्ति होगी। सबसे सम्बन्ध मधुर होंगे। प्रगति का समय है। परिश्रम से ही सफलता मिलेगी। सफलता में परिवार का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में यात्रा करने से बचें। कोर्ट के मामलों में सतर्क रहें। अपने आप पर भरोसा रखें। नौकरीपेशा लोगों के लिए लाभ का समय है। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात जीवन के लिए दिशा प्रदान करेगी। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व सावधानी रखें। अड़चनें आने पर स्वयं पर भरोसा रखें। मधुर व्यवहार से आप सफलता पा लेंगे। खर्चों पर काबू रखें। गुरु हृदय धारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24, 25

धनु - प्रारम्भ शुभ है। किसी व्यक्ति से मुलाकात व्यापार में सहयोग करेगी। आय के स्रोत बढ़ेंगे। विरोधियों से मुकाबला कर लेंगे। रोजमर्रा के जीवन में सावधान रहें। महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। दूसरों की भलाई से स्वयं भी परेशानी में पड़ सकते हैं। भाग्योन्नति होगी, रोजगार में बढ़ोतरी होगी। माह के मध्य में कोई परेशानी अचानक आ सकती है, लापरवाही न करें। खर्च की प्रवृत्ति पर अंकुश लगायें। साझेदारी के कार्य में लाभ होगा, प्रोपर्टी के कार्य में कमाई होगी। समय आपके पक्ष में है। चौथे सप्ताह में कार्यों में रुकावटें आ सकती हैं। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेगा। नये वाहन की खरीदारी हो सकती है, कोई शुभ सूचना भी मिलेगी। जमीन का सौदा सम्भव है, आकस्मिक धनप्राप्ति के अवसर हैं। आप तारा दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 8, 9, 16, 17, 18, 25, 26, 27

मकर - माह का प्रारम्भ संतोषप्रद है। अपनी मेहनत से कार्य पूर्ण होंगे। प्रारम्भ का समय अच्छा है। आय के स्रोत खुलेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शत्रु मार्ग में रोड़ा अटकायेंगे। लापरवाही नुकसानदेह हो सकती है। पुराना विवाद सुलझेगा। रुके कार्य पूरे होंगे। किसी

सर्वार्थ सिद्धि योग -	सितम्बर-1, 3, 11, 13, 17, 18, 21, 23, 27, 30
रवि योग -	सितम्बर-10, 11, 15, 16, 19, 28

पर अत्यधिक विश्वास न करें। मानसिक चिंतायें बढ़ेंगी। जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। मित्रों पर भी पूर्ण विश्वास न करें। उधार दिये पैसे वसूल कर सकेंगे। मनोवांछित सफलता मिलेगी। छोटी सी बात लड़ाई-झगड़े का कारण बन सकती है, सावधान रहें। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें, लापरवाही न करें। आखिरी सप्ताह अनुकूल नहीं है। व्यापार में नुकसान हो सकता है, बुद्धि विवेक से निर्णय लें। पैतृक पूंजी मिलने की सम्भावना है। आप महाकाली साधना करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 10, 11, 18, 19, 20, 29, 30

कुम्भ - माह का प्रथम सप्ताह सुखप्रद रहेगा। काम का बोझ रहने पर भी आप कार्यों को सक्षमता से निभायेंगे, आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। कार्यों में अड़चने आयेगी, अहंकार से दूर रहें। कोई अनहोनी घटना हो सकती है। गरीबों की मदद करेंगे। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। वाणी में मिठास रखें। माह के मध्य में कोई महत्वपूर्ण कागजात खोने से परेशानी में पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। मेहनत से ही सफलता पाई जा सकती है। विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होगी। आप अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क हैं और मेहनत से पा लेंगे। आखिरी सप्ताह व्यापार में उन्नति देगा। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। आर्थिक परेशानियां दूर होगी, आखिरी तारीखों में टेंशन हो सकती है। आप इस समय भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 3, 4, 5, 12 13, 21, 22

मीन - माह का प्रथम सप्ताह कष्टकारी है। किसी भी प्रकार के गलत कार्यों से बचें। वाहन की खरीददारी हो सकती है। दूसरे का भला करके सन्तुष्टि मिलेगी। किसी भी निर्णय को सोच-विचार कर लें। वाहन तेज गति से न चलायें। माह के मध्य में थोड़ा अनुकूल समय होगा। विद्यार्थियों को उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। कोई व्यक्ति आप को सहयोग देगा। पति-पत्नी में मधुरता का वातावरण रहेगा। परिवार में भी सभी से प्रेमभाव रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में स्थिति सुधरेगी। मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है। नवीन व्यक्ति से सम्पर्क बढ़ेगा। संयम बरतें, लड़ाई-झगड़े की स्थिति से बचें। आखिरी सप्ताह में महत्वपूर्ण कार्य में अड़चनें आयेगी। आप सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24, 25

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03.09.21	शुक्रवार	अजा एकादशी
09.09.21	गुरुवार	हरितालिका तृतीया
11.09.21	शनिवार	ऋषि पंचमी
12.09.21	रविवार	सूर्य षष्ठी
13.09.21	सोमवार	संतान सप्तमी
14.09.21	मंगलवार	राधा अष्टमी/अष्ट लक्ष्मी जयंती
17.09.21	शुक्रवार	भुवनेश्वरी जयंती/पदमा एकादशी
19.09.21	रविवार	अनन्त चतुर्दशी
21.09.21	मंगलवार	पितृ पक्ष श्राद्ध प्रा.

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रात: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर-5, 12, 19)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (सितम्बर-6, 13, 20)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (सितम्बर-7, 14)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (सितम्बर-1, 8, 15)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (सितम्बर-2, 9, 16)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (सितम्बर-3, 10, 17)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (सितम्बर-4, 11, 18)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर-26)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (सितम्बर-27)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (सितम्बर-21, 28)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (सितम्बर-22, 29)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (सितम्बर-23, 30)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (सितम्बर-24)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (सितम्बर-25)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

सितम्बर-21

11. प्रातः पूजन में निखिल स्तवन के 10 श्लोकों का पाठ करें।
12. भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं जल की परिक्रमा कर जल आँखों में लगायें।
13. आज भगवान शिव के मन्दिर में दीपक लगायें।
14. आज महालक्ष्मी की कोई भी साधना सम्पन्न करें।
15. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-

    ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।
16. पूजन के बाद दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
17. आज भुवनेश्वरी जयंती है। ॐ ह्रीं ॐ का 51 बार उच्चारण करके जाएं
18. किसी असहाय को उड़द दाल व तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
19. आज अनन्त चतुर्दशी पर भगवान विष्णु का पूजन करें।
20. शिव मन्दिर में सफेद पुष्प चढ़ायें।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु गीता का पाठ करें।
22. आज ॐ श्रीं ॐ मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
23. केले के या पीपल के पेड़ में जल अर्पण करें।
24. आज गणेश जी के मन्दिर में लड्डुओं का भोग लगायें।
25. भैरव मन्दिर में प्रसाद चढ़ाकर बांटें।
26. प्रातःकालीन वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
27. रोग निवारण गुटिका (न्यौ. 150/-) स्थापित कर ॐ नमः शिवाय का 5 मिनट जप कर धारण करें।
28. सित. पत्रिका में दी गई लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।
29. प्रातःकाल पूजन में घी का दीपक लगायें।
30. किसी ब्राह्मण को अन्न दान करें।

अक्टूबर-21

1. प्रातः बगलामुखी गुटिका (न्यौ. 150/-) स्थापित कर 'ह्लीं' मंत्र का 51 बार जप करके धारण करे, शत्रु परास्त होंगे।
2. दाल, चावल, घी, नमक दक्षिणा सहित दान करें।
3. प्रातः 51 बार सूर्य मंत्र का जप करें-

   ।। ॐ ह्रीं घृणिं सूर्य आदित्य श्रीं।।
4. शिव मन्दिर में आरती करें, किसी गरीब को भोजन करायें।
5. आज बगलामुखी मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
6. आज सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या है, श्राद्ध कर्म के बाद ब्राह्मण को भोजन करायें, गाय को रोटी खिलायें।
7. आज शरद नवरात्रि प्रारम्भ है, प्रातः कलश स्थापन कर मां दुर्गा की पूजन आरती करें।
8. किसी दुर्गा मन्दिर में तीन लाल पुष्प चढ़ायें।
9. प्रातः शनि यंत्र (न्यौछा. 240/-) का पूजन कर पीपल के पेड़ की जड़ में दबा दें।
10. शिष्योपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।

ज्वालामालिनी

प्रयोग

ज्वालामालिनी जो शिव की ऊर्जा शक्ति है, पूर्ण शक्तिशालिनी है और जिसको समस्त देवी-देवता भी नमन करते हैं।

ऐसी देवी की साधना करने के लिए उच्चकोटि के ऋषि एवं तांत्रिक भी प्रयासरत रहते हैं। यह एक अत्यन्त ही दुर्लभ एवं गुप्त साधना है, जिसको सिद्ध करना अत्यन्त दुष्कर है किन्तु इस साधना को सम्पन्न करने पर, उस साधक को इस दैवी-शक्ति का कुछ अंश तो प्राप्त होता ही है और वह अंश मात्र ही साधक को सुखमय जीवन प्रदान करने में पूर्णतः

ज्वालामालिनी तंत्र साधना का प्रभाव अपने-आप में अचूक होता ही है और जब कोई साधक साधना सम्पन्न करता है, तो उसे उस देवी या देवता की ऊर्जा शक्ति प्राप्त होती ही है। उसका प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता। आवश्यकता है, तो श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की......

साधना विधान

साधक नवरात्रि में अथवा किसी भी शनिवार की रात्रि को इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है और उसे एक बार ही नहीं अपितु बार-बार सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधना सामग्री को पहले से ही साधक एकत्र करके रख लें, जिसमें कुंकुम, अक्षत, घी का दीपक, पुष्पहार तथा ज्वालामालिनी यंत्र, गुरु चित्र तथा ज्वाला माला की आवश्यकता होतीहै। इस साधना में साधक का मुख उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए तथा उसे पीले आसन का प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार इस सामग्री को एकत्र कर साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, पीली धोती पहन कर और ऊपर से गुरु चादर ओढ़ कर पूजा स्थान में वीरासन अथवा सिद्धासन में बैठ जाएं और अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर, उस पर 'ज्वालमालिनी यंत्र' और गुरु चित्र को स्थापित कर, फिर घी का दीपक प्रज्वलित कर कुंकुम, अक्षत, पुष्प से उनका पूजन करें। पूजन पश्चात् हाथ में जल लेकर संकल्प करें और अपना नाम तथा गोत्र का उच्चारण करें, जिस कार्य के लिए साधना कर रहे हैं, उसे बोलकर जल जमीन पर छोड़ दें।

तत्पश्चात् ज्वाला माला से गुरु मंत्र की 4 माला जप करें और फिर ज्वाला माला से ही निम्न मंत्र की 5 माला जप सम्पन्न करें-

मंत्र : ।। ॐ ज्रं ज्रं ज्वाला मालिन्यै फट्।।

मंत्र-जप पूर्ण करने के पश्चात् 11 दिन तक उस माला को धारण करके रखें और इसके पश्चात् उस यंत्र एवं माला को जल में विसर्जित करें।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर इसका तीक्ष्ण प्रभाव साधक को प्राप्त होता ही है, इसके द्वारा शत्रु स्तम्भित हो जाता है, साथ ही साथ साधक की प्रत्येक इच्छा भी पूर्ण होने लग जाती है, और यही नहीं अपितु क्रोध पर भी पूर्ण नियंत्रण करने के लिए यह श्रेष्ठ साधना है।

साधना सामग्री- 450/-

क्षेत्रपाल साधना

विजया दशमी

15.10.21

अपने व्यक्तित्व को विजेता का व्यक्तित्व बनाइए

यूं तो हर साधना पर्व का एक विशेष महत्व और चैतन्यता होती है किन्तु कुछ पर्व ऐसे होते हैं जो विशिष्टतम होते हैं। विजयादशमी का पर्व एक ऐसा ही पर्व है जिसकी चैतन्यता अपने-आप में अनिर्वचनीय है

किसी भी पर्व पर कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, किन्तु प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव की ओर से किसी भी पर्व के लिए जो साधना प्राप्त होती है, उसके पीछे उन्हीं का गूढ़ चिन्तन छिपा होता है और इस वर्ष इस महत्वपूर्ण पर्व विजयादशमी के लिए जो साधना प्राप्त हुई है, वह है पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा ही प्राप्त क्षेत्रपाल साधना।

यह अपने व्यक्तित्व में क्षेत्रपाल के समान तेज, बल, पौरुष प्राप्त करने की भी साधना है। यही विजयादशमी पर्व की मूल भावना भी है कि हम आन्तरिक और बाह्य रूप इस प्रकार पुष्ट हों जिससे चतुर्दिक ख्याति-लाभ, सुख-लाभ, आरोग्य-लाभ आदि प्राप्त कर सकें।

जब तक व्यक्तित्व में तेज नहीं समाता है तब तक व्यक्ति साधनाओं तथा भौतिक जीवन किसी में भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता और तेजस्विता की साधनाएं सम्पूर्ण वर्ष भर नहीं की जा सकती, उनका संयोजन तो विजयादशमी जैसे पर्व से करना होता है।

अत: आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक साधक कोई ऐसी साधना सम्पन्न करे जिससे उसे विशेष चैतन्यता और बल की प्राप्ति हो सके। क्षेत्रपाल साधना, शास्त्रों में इसी प्रकार की साधना वर्णित की गई है और इस साधना के लिए विजयादशमी के पर्व में कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं करना है अपितु अपने ढंग से परम्परागत पूजन करते हुए एक ऐसा लघु प्रयोग भी सम्पन्न कर लेना है जो भविष्य की दृष्टि से अत्यन्त फलप्रद सिद्ध होता है।

साधना विधान

रात्रि में दस बजे के पश्चात् ;और उचित होगा कि 12 बजे के आसपास इस साधना को प्रारम्भ करें। वस्त्र, आसन आदि का रंग लाल रहे, दक्षिण मुख अथवा पश्चिम मुख होकर अपने सामने एक लाल वस्त्र पर ही चावलों की ढेरी बनाकर क्षेत्रपाल यंत्र स्थापित करे। यह यंत्र इस साधना के लिए इस प्रकार से मंत्र सिद्ध एवं चैतन्य किया जाता है जिससे इसी यंत्र पर क्षेत्रपाल के साथ-साथ दस दिक्पालों की साधना सम्पन्न कर लेने से साधक को समस्त दिशाओं से तेजस्विता और तेजस्विता से भी अधिक ऐसी निर्विघ्नता प्राप्त होने लगती है जो उसके जीवन के लिए अत्यन्त सहायक होती है।

साधक अपने आसन पर बैठकर आचमन आदि से अपने को शुद्ध कर निम्न प्रकार से न्यास करें।

	कर न्यास	अंगन्यास
क्षां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
क्षीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
क्षूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
क्षैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
क्षौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
क्षः	करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

उपरोक्त ढंग से न्यास करने के पश्चात् भगवान श्री क्षेत्रपाल की उपस्थिति की भावना करते हुए उन्हें यंत्र के रूप में दस दिक्पालों सहित स्थापित करने की कामना करते हुए यंत्र पर सिन्दूर का टीका लगाएं तथा फल एवं पुष्प से पूजन कर घी का दीपक लगाएं। इसी यंत्र के चारों ओर दस लघु नारियलों के रूप में दस दिक्पालों - इन्द्र, अग्नि, यम, वायु, ईशान, ब्रह्मा, निर्ऋति, वरुण, कुबेर एवं गणपति की स्थापना करें। इन दसों लघु नारियलों का पूजन केवल कुंकुम-अक्षत से करें तथा निम्न प्रकार से ध्यान करें-

**भाज्ञच्चण्ड-जटा-धरं त्रिनयनं नीलाञ्जनाद्रि-प्रभम्
दोर्दण्डात्त-गदा-कपालमरुण-स्रग-वस्त्रोज्ज्वलम्
घण्टा-मेखल-घर्घर-ध्वनि-मिलज्झंकार-भीमं विभुम्
वन्देऽहं सित-सर्प-कुण्डल-धरं श्री क्षेत्रपालं सदा**

भगवान श्री क्षेत्रपाल का ध्यान करने के उपरान्त निष्कम्प भाव से **रुधिरा माला** द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। इस सम्पूर्ण काल में घी का दीपक अवश्य जलाए रखें। सुगन्धित द्रव्य व अगरबत्ती आदि की कोई आवश्यकता नहीं है।

मंत्र

॥ॐ श्रीं हुं श्रियै नमः॥

मंत्र-जप समाप्त होने के उपरान्त भगवान श्री क्षेत्रपाल से पुनः हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि वे अपनी समस्त शक्तियों के साथ साधक के शरीर में स्थापित हों एवं उसे बल आदि से पूरित करें। मंत्र-जप के उपरान्त यंत्र, माला एवं समस्त लघु नारियलों को लाल वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दें।

भगवान श्री क्षेत्रपाल की एक अन्य विशेषता यह भी है कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व के पोषक होने के साथ-साथ उसके घर और स्थान के भी रक्षात्मक देव होते हैं, जिस प्रकार से भगवान श्री भैरव की आराधना से साधक का जीवन सुखी एवं निर्विघ्न होता है, वही प्रभाव क्षेत्रपाल साधना से भी होता है।

साधना सामग्री-600/-

पाप शमन प्रयोग

पापाकुंशा एकादशी–16.10.21

साधक साधना करता है और जब साधक को सफलता नहीं मिलती तो वह निराश हो जाता है।

वह नहीं समझ पाता कि **ऐसा क्यों हो रहा है**

सफलता में अड़चनें आती हैं, उसके जीवन में अनुकूलता प्राप्त नहीं होती।

इसके अनेक कारण होते हैं, **जिसमें से एक कारण है साधक के पूर्व जन्मकृत पाप–दोष, जिनकी वजह से ही अड़चने आती हैं।**

इसलिए जब अड़चनें आयें, सफलता न मिले तो प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस साधना को अवश्य सम्पन्न करे, ऐसा करने से दोष समाप्त हो जाते हैं और आगे जीवन में सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

पापाकुंशा यंत्र
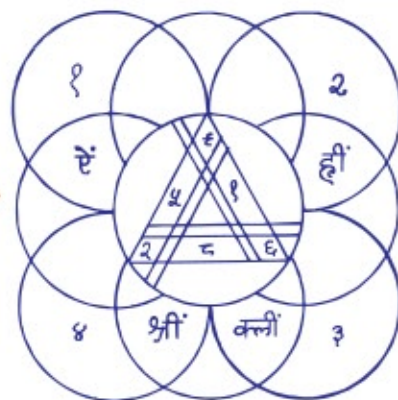
साधना विधान

- यह प्रयोग पापाकुंशा एकादशी 16.10.21 को या किसी भी सोमवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।
- सफेद आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं गुरु चादर ओढलें।
- बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर ऊपर दिये गये सर्वपाप नाशक यंत्र को केसर या अष्ट गंध से बनायें एवं उस पर पारद शिवलिंग स्थापित कर दें।
- शिवलिंग का पूजन करें सम्भव हो तो, बिल्व पत्र चढ़ायें एवं तीन दोष निवारक रुद्राक्ष चढ़ायें।
- फिर वैजयंती माला से नित्य 5 माला मंत्र जप ग्यारह दिनों तक करें। यदि सम्भव हो तो साधक 21 दिन तक करें।
- मंत्र जप पूरा होने पर सभी सामग्री जल में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से पूर्व संचित पाप समाप्त होते हैं और भविष्य में सफलता के अवसर बढ जाते हैं।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ॐ हुं सर्व पापात्मने सर्व दोष निवृतये हुं हुं हुं ॐ फट्।।

सामग्री- 450/-

किसी भी शुक्रवार से

अमृतं कुरू देवेशि !

कर्ण पिशाचिनी साधना

पिशाचिनी शब्द से डरने की
आवश्यकता नहीं है
यह अत्यन्त सरल, सहज
और सौम्य साधना है
जिसे कोई भी सम्पन्न कर सकता है।
यह कोई उग्र साधना नहीं है।
पिशाचिनी तो एक वर्ग का नाम है
जैसे गन्धर्व, किन्नर, देवता आदि
वर्ग हैं और ये वर्ग मनुष्य के लिए
ज्यादा सहायक हैं,
ज्यादा उपयोगी हैं
और मित्रवत व्यवहार
करने वाले होते हैं।
इसका कोई विपरीत प्रभाव नहीं होता।

किसी भी अप्सरा, यक्षिणी आदि की साधनाएँ तो प्रत्येक साधक सिद्ध करने के लिए लालायित रहता है, पर 'कर्ण पिशाचिनी साधना' को सम्पन्न करने से पहले वह साधक एक प्रकार की झिझक या डर महसूस करने लगता है, इसका कारण यह है, कि वह कर्ण पिशाचिनी साधना से पूर्णरूप से परिचित नहीं होता पर, इस शब्द को सुनते ही प्रत्येक व्यक्ति या साधक भयभीत हो उठता है, जिसके फलस्वरूप वह इस महत्वपूर्ण साधना से वंचित रह जाता है, जो उसके जीवन को सम्पन्नता प्रदान करने की एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण साधना है, जिस साधना को सिद्ध कर व्यक्ति श्री, वैभव, ऐश्वर्य, यश, मान, प्रतिष्ठा, सुख-सम्पन्नता सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

तुम्हारा नाम रमेश है, तुम्हारे तीन भाई हैं, तुम शीला नाम की लड़की से प्यार करते हो, तुम उससे पिछले माह शादी की बात.... लेकिन....

आखिर कौन सी विद्या है जिसके कारण किसी के जीवन में घटी घटना को इतनी स्पष्टता के साथ बताया जा सकता है?

समाज में फैली गलत भ्रांतियों के कारण ही बहुत कम लोग इस साधना से परिचित हो सके हैं, और जो इस साधना से परिचित हैं, उन्होंने इसे उजागर नहीं किया, क्योंकि इससे उनके हितों पर आघात पहुँचता था।

कर्ण पिशाचिनी के नाम मात्र से ही व्यक्ति इसके स्वरूप का गलत अंकन अपने मष्तिष्क में बैठाकर इस दुर्लभ साधना को करने से पहले ही आशंकित एवं भयभीत हो जाता है। वह घबराने लगता है कि कहीं इस साधना को सम्पन्न कर वह किसी मुसीबत या परेशानी में न फंस जाए या गलत ढंग से इसे सम्पन्न कर इसका बुरा प्रभाव सामने आने पर वह किसी विपत्ति में न पड़ जाए।

सबसे पहले आपके मन में इस भ्रम को दूर करना आवश्यक हो गया है, जिससे कि आप इसके गूढ़ अर्थ को भली प्रकार से जानकर इस साधना का लाभ उठा सकें।

कर्ण पिशाचिनी एक जाति है, जिस प्रकार समाज में या ब्रह्माण्ड में अनेकों वर्ग हैं, जैसे-ब्राह्मण, क्षत्रिय, राक्षस, देवता आदि उसी प्रकार पिशाचिनी भी एक वर्ग है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि पिशाचिनी किसी भूत-प्रेत का नाम नहीं, अपितु एक वर्ग विशेष का नाम है, और इसकी साधना सम्पन्न करने पर किसी भी प्रकार का नुकसान या बुरा प्रभाव साधक पर नहीं पड़ता।

यह एक गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने या किसी के भी भूतकाल को स्पष्ट कर सकता है।

भारत में ऐसे सैकड़ों साधु-संन्यासी हैं, जो किसी अनजान व्यक्ति को देखते ही उसके भूतकाल की घटनाओं को ज्यों का त्यों स्पष्ट कर देते हैं, जिसे लोग 'चमत्कार' कहने लगते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है यह चमत्कार न होकर एक प्रकार की 'कर्ण पिशाचिनी सिद्धि' होती है, जिसे सिद्ध कर ये साधु-संन्यासी चमत्कार दिखाते फिरते हैं।

भारतीय शास्त्रों एवं ग्रंथों को यदि टटोलकर देखा जाय, तो हमें यह ज्ञात होगा कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि और देवताओं ने इस साधना को अपने जीवन में विशिष्ट स्थान दिया है। राम, कृष्ण, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद आदि ने इस विशिष्ट एवं गोपनीय साधना को सम्पन्न कर अपने व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान की है। इस साधना को सिद्ध करके ही अपने जीवन की उन कमियों को, जो उनकी सफलता में बाधक बनकर खड़ी हुई थीं, दूर कर अपने जीवन को सम्पन्न एवं सफल बना सके।

कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध होने पर वह अदृश्य रूप में तुरन्त प्रकट होकर साधक के कानों में धीरे से उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दे जाती है।

कर्ण पिशाचिनी साधना व्यक्ति को उसके भूतकाल से परिचित कराने वाली सिद्धि है। इस सिद्धि के माध्यम से व्यक्ति अपने भूतकाल यहाँ तक कि पूर्वजन्म के पाप-दोष से भी अवगत होकर अपने जीवन की उन सभी समस्याओं, बाधाओं एवं विपत्तियों का अन्त कर सकता है, जिस कारणवश वह इस जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहा है, जैसे जमीन-जायदाद का मामला हो या फिर गड़ा हुआ धन अथवा किसी ने कुछ कर रखा हो या कोई दुश्मन हो, जो प्रत्येक कार्य में व्याघात उत्पन्न कर रहा हो इन सब तथ्यों से अवगत होकर व्यक्ति इस सिद्धि के माध्यम से उन परेशानियों और विपत्तियों से छुटकारा पा सकता है, जिस कारण वह दु:खी, तनावग्रस्त एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रहा है।

यदि किसी व्यक्ति का व्यापार नहीं चल रहा हो, या वह दु:खी, पीड़ित, चिन्ताग्रस्त एवं रोगग्रस्त हो अथवा शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से अस्वस्थ, अशांत एवं निर्धन हो, तो जल्दी ही इसका कारण उस व्यक्ति की समझ में नहीं आता, जबकि यह उसके पूर्व जन्मकृत दोषों का ही प्रतिफल होता है, जिस कारण उसे इस प्रकार का दु:खी एवं कष्टप्रद जीवन व्यतीत करना पड़ता है, किन्तु इन सब समस्याओं से मुक्ति वह इस कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करके ही प्राप्त कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति, साधक या शिष्य इस दुर्लभ साधना को सम्पन्न कर लेता है, तो वह कर्ण पिशाचिनी उस साधक के कान में उसके होठों से उच्चरित सभी प्रश्नों के उत्तर दे देती है, जो कि उसे स्पष्टता से सुनाई देते हैं, किन्तु वह आवाज केवल मात्र उसी साधक को सुनाई पड़ती है, जिसने उसे सिद्ध कर रखा हो, उसके अत्यंत निकट बैठे व्यक्ति को भी वह आवाज सुनाई नहीं देती।

इस साधना के द्वारा व्यक्ति अपने ही

जीवन व्यतीत कर रहे थे, और इस साधना से प्राप्त लाभ से वे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से सुखी एवं सम्पन्ता युक्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जिस मानसिक तनाव, पीड़ा, दु:ख, निराशा का कारण उन्हें समझ नहीं आता था, कि किस कारण वे इस अभाव युक्त, रोगग्रस्त एवं चिन्ता युक्त जीवन को जी रहे हैं? उन कारणों की वजह और उन परेशानियों का हल उन्हें इस कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करने पर प्राप्त हुआ, जिस सिद्धि का लाभ उठाकर वे आज पूर्णत: सुखी एवं सम्पन्न तथा स्वस्थ जीवन को जीने में कामयाब हो सके।

ऐसी ही है यह कर्ण पिशाचिनी साधना जिसका वर्णन हमें 'मंत्र महोदधि' और 'मंत्र महार्णव' जैसे ग्रंथों में स्पष्टता से मिलता है।

नहीं, किसी अन्य व्यक्ति के भूतकाल की छोटी से छोटी घटना के बारे में भी स्पष्टता और प्रामाणिकता से बता सकता है, और यह कर्ण पिशाचिनी साधना को सिद्ध करने पर ही ज्ञात हो सकता है।

साधक मन में कर्ण पिशाचिनी का ध्यान कर सामने वाले व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर सही एवं सटीक देकर उसे प्रभावित कर सकता है, क्योंकि उसे इस साधना के द्वारा ऐसी शक्ति मिल जाती है, जिस शक्ति के माध्यम से वह सामने वाले व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने लगता है, अत: वह व्यक्ति उसकी भविष्यवाणियों पर भी पूर्णरूप से विश्वास करने लग जाता है, जबकि यह सिद्धि केवल भूतकाल से सम्बन्धित घटनाओं की ही जानकारी दे सकती है, भविष्यकाल की नहीं।

वर्तमान युग में जब 'चमत्कार' ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्णरूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है।

आज के आधुनिक युग में भी कई व्यक्तियों ने इस विशिष्ट एवं गोपनीय साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में लाभ प्राप्त किये हैं। इस साधना को सम्पन्न करके उन्होंने अपने पूर्व जन्मकृत दोषों का समाप्तिकरण किया, जिस कारणवश वे एक दु:खी एवं कष्टप्रद

साधना प्रयोग

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है। साधक शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाएं और अपने सामने 'गुरु चित्र' के साथ-साथ 'कर्ण पिशाचिनी यंत्र' को भी स्थापित कर दे, और कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ा दें, फिर इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर गुरुदेव से प्रार्थना करे, कि मैं अमुक साधना सिद्ध करना चाहता हूँ, आप मुझे इसके लिए अपना आशीर्वाद प्रदान करें, जिससे कि मैं इस प्रयोग को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकूँ, ऐसा बोलकर उस जल को जमीन पर छोड़ दें, और श्रद्धापूर्वक व पूर्ण विश्वास के साथ इस साधना को सम्पन्न करें। इस साधना में किसी दिशा विशेष का इतना महत्व नहीं है। यह साधना रात्रि में 9 बजे के बाद प्रारम्भ करनी चाहिए तो ज्यादा उचित रहता है।

साधक गुरु चित्र के सामने तेल का दीपक प्रज्वलित करे (याद रहे कि दीपक तेल का ही होना आवश्यक है) इस के पश्चात् हकीक माला से 4 माला गुरु मंत्र की तथा निम्न मंत्र की 31 माला प्रतिदिन 8 दिन तक जप करे–

मंत्र

।। ॐ ईं कर्ण पिशाचिन्यै फट्।।

यह केवल 8 दिनों का प्रयोग है। देखने में आया है कि यह साधना पहली बार में भी सिद्ध हो सकती है, अपितु 5 या 8 बार में इसे सम्पन्न करने पर तो यह सिद्धि साधक को प्राप्त होती ही है। आठ दिन साधना करने के बाद रात्रि में कर्ण पिशाचिनी यंत्र तथा हकीक माला को लाल वस्त्र में लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें।

यह साधना सिद्ध होने पर वह व्यक्ति जब भी किसी व्यक्ति को देखता है तो मन ही मन इस मंत्र का 11 बार उच्चारण कर सम्बन्धित प्रश्न पूछे तो उसके कानों में उस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है पर पास बैठे हुए व्यक्ति को उसकी आवाज सुनाई नहीं देती सिर्फ साधक ही उसे स्पष्ट सुन सकता है।

वस्तुत: यह प्रयोग आज के युग में अद्वितीय चमत्कारिक सिद्धि प्रयोग है।

इस विशिष्ट एवं दुर्लभ साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन में धन-धान्य, यश, कीर्ति, वैभव, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, सुख-सम्पत्ति सभी कुछ प्राप्त कर सकता है, क्योंकि कर्ण पिशाचिनी उसे उसके भूतकाल से सम्बन्धित सभी घटनाओं व पूर्व जन्मकृत दोषों के बारे में सब कुछ बता देती है, जिन समस्याओं का समाधान कर वह व्यक्ति सुखी, स्वस्थ एवं चिन्तामुक्त जीवन का निर्माण कर पाता है।

साधना सामग्री: 330/-

प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है कि उसकी सन्तान योग्य और प्रखर हो तथा अपने जीवन में उन्नति कर उस स्थान तक पहुंच सके जो उनकी कामना व स्वप्न है।

एक प्रकार से माता-पिता अपने जीवन की जिन अभिलाषाओं को पूर्ण नहीं कर पाते हैं उन्हीं की पूर्ति अपने वंशजों के माध्यम से करना चाहते हैं और अपने जीवन के स्वप्न को अपनी सन्तानों के माध्यम से साकार करना चाहते हैं।

उनकी ममता, स्नेह और अपनत्व उन्हें उद्वेलित करता रहता है किस प्रकार से इसके लिए उचित उपाय प्राप्त किया जाय। अच्छे से अच्छे विद्यालय में प्रवेश, शिक्षा की सुविधाएं, अध्यापकों व ट्यूशन का अतिरिक्त प्रबन्ध तथा स्वयं को उनके साथ संलग्न रखना, उनके इसी प्रयास के रूप होते हैं, किन्तु आवश्यक नहीं कि इतने से ही निश्चिन्त हुआ जा सके और बालक को प्रखरता की ओर उन्मुख किया जा सके क्योंकि जिस चेतना के द्वारा बालक ज्ञान प्राप्त करता है,प्रखरता अर्जित करता है उसका केन्द्र बिन्दु बाह्य रूप से नहीं वरन् आन्तरिक रूप से शिशु के मस्तिष्क में ही होता है जो सद्गुरु के स्पर्श एवं दीक्षा द्वारा जाग्रत किया जा सकता है।

सद्गुरु के इसी कृपा स्पर्श का मूर्त स्वरूप है...

सरस्वती दीक्षा तथा ज्ञान दीक्षा

सरस्वती दीक्षा के माध्यम से जहां शिशु में ज्ञान चेतना का जागरण होता है वहीं ज्ञान दीक्षा के माध्यम से इसी जीवन के तथा पूर्व जन्मों के अनेक मत, दोष, पाप समाप्त होकर प्रखरता आने की ऐसी क्रिया प्रारम्भ होती है जिसके फलस्वरूप शिशु को फिर पग-पग पर बाधाओं एवं अड़चनों का सामना नहीं करना पड़ता।

ऐसे बालक जो किसी मन्दता के कारण तीव्रता से न बढ़ पा रहे हों या जिन्हें चार-पांच वर्ष का हो जाने के बाद भी पर्याप्त चैतन्यता न आ पाई हो अथवा किसी ऐसे दोष के कारण गर्भ में उसका पूर्ण मानसिक विकास न हो पाया हो, उनके लिए तो ऐसे उपाय नितांत आवश्यक हो जाते हैं। यह एक सुस्थापित सत्य है कि बालक का पूर्ण मानसिक विकास नौ माह के पूर्ण गर्भ धारण के पश्चात ही सम्भव हो पाता है। जबकि इसका आजकल प्रतिवाद भी देखने को मिलता है। ऐसी समस्त स्थितियों में जबकि बालक का मानसिक विकास ऐसे कारणों से अवरुद्ध हो जाता है तब दीक्षात्मक उपाय ही सफलता की प्रामाणिक कसौटी सिद्ध होता है।

ऐसी विशेष दीक्षाओं में सद्गुरुदेव जब कृपा कर विशेष शक्तिपात करते हैं और गोपनीय बीज मंत्र का जप बताते हैं, जिससे बालक में ज्ञान-प्रतिभा का विस्फोट होता ही है। वह किसी भी विषय को मात्र एक बार पढ़कर ही कण्ठस्थ करने की क्रिया में निष्णात हो जाता है। एक

तुम जानना चाहते हो, गुरु किसे कहते हैं तो सुनो गुरु एक प्रेम है।

एक श्रद्धा पूर्ण रूप से नमन होने की क्रिया है, एक समर्पण है जो तुम देखकर सीख सकते हो। गुरु पूर्ण रूप से उन्मुक्त और विसर्जित हो जाने की क्रिया है। पूरी तरह से डूबकर एकाकार हो जाने की क्रिया है।

–पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

प्रकार से देखा जाय तो सरस्वती का उसके कण्ठ में वास हो जाता है और सरस्वती उसके जीवन में पूर्ण कृपालू हो जाती है। मां भगवती सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त शिशु आगे चलकर धन, मान, सम्मान सभी कुछ प्राप्त करने का अधिकारी बन ही जाता है। विगत वर्ष में अनेक अभिभावकों ने अपनी सन्तानों को सरस्वती दीक्षा व ज्ञान दीक्षा दिलवायी ओर उसके सफल परिणामों से अब हमको सूचित भी कर रहे हैं। ऐसे समस्त बालक बुद्धि प्रतिभा से सम्पन्न होने के साथ–साथ निरोगिता की प्राप्ति करने में भी सफल रहे हैं क्योंकि जिस बीज मंत्र का समाहिती–करण उसके शरीर में कराया जाता है वह जीवन में सभी प्रकार के दुर्भाग्यों को समाप्त करने में सहायक होता है।

इस प्रकार की गोपनीय क्रिया जो वास्तव में तिब्बत के लामाओं की गुह्य पद्धति है, इस दीक्षा के माध्यम से प्रदान करना पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा है। बालकों के सर्वांगीण विकास एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह भी निश्चित किया गया है कि उन्हें यह दीक्षा इस विशेष दिवस पर प्रदान की जाए जिससे अधिक से अधिक बालकों को इसका लाभ मिल सके।

अत: इस शुभ अवसर पर गुरुदेव की आज्ञा से आप अपनी संतान को यह दीक्षा अवश्य दिलवायें।

यह इसलिए आवश्यक है कि बालक अपनी संस्कृति से परिचित होते हुए पूर्ण पवित्रता, तेजस्विता एवं निर्मलता के साथ प्रखरता प्राप्त कर सके एवं ज्ञानवान बनने की ओर अग्रसर हो।

व्यक्ति के जीवन और उसके भाग्य को समझने के लिए सूर्य रेखा या विद्या रेखा का बहुत अधिक महत्व है।

प्रत्येक व्यक्ति की यह सामान्य इच्छा होती है, कि वह जीवन में कुछ ऐसा कार्य करे, जिससे समाज में उसकी सराहना हो। लोग उसके विचारों का आदर करें और उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी अक्षय कीर्ति बनी रहे। इन सबके अध्ययन के लिए सूर्य रेखा का सहारा लेना अत्यन्त आवश्यक है। स्पष्ट, गहरी और निर्दोष सूर्य रेखा ही मानव को ऊंचा उठाने में सहायक होती है।

प्रतिभा एवं जीवन में सफलता की सूचिका

सूर्य रेखा

सूर्य रेखा के विभिन्न उद्गम

1. उद्गम : शुक्र पर्वत से

शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर यह रेखा जब सूर्य पर्वत पर पहुंचती है, तो अत्यन्त अनुकूल मानी जाती है। हथेली में ऐसी रेखा वाला व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है। जीवन में पत्नी के अलावा अन्य कई स्त्रियों से सम्पर्क रहता है और उनसे धन-लाभ करता है अथवा ऐसे व्यक्ति को ससुराल से विशेष धन प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विवाह के उपरांत ही होता है और अधिकतर ऐसे लोगों के भाग्योदय प्रेमिका के माध्यम से देखे गए हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति गोद ले लिए जाते हैं, जिससे उन्हें धन लाभ होता है।

2. उद्गम : जीवन रेखा का समाप्ति स्थान से

ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के कलाकार तथा भावुक होते हैं। साथ ही कला के माध्यम से धन संचय करते हैं। उनका भाग्य अपने आप में उज्ज्वल होता है। स्वभाव से ये व्यक्ति रसिक, मिलनसार तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाले होते हैं।

3. उद्गम : मंगल पर्वत से

मंगल पर्वत से आरम्भ होकर यह रेखा हृदय रेखा को काटती हुई जब सूर्य पर्वत पर पहुंचती है, तो व्यक्ति को मिलिट्री अथवा पुलिस विभाग में उच्च पद तक पहुंचाती है। ऐसा व्य्रति अपने कार्यों से राज्य स्तरीय सफलता प्राप्त करता है। धीरे-धीरे स्व परिश्रम से वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है।

4. उद्गम : मस्तिष्क रेखा से

ऐसे व्यक्ति बुद्धिजीवी होते हैं। इसके अन्तर्गत उच्च कोटि के वैज्ञानिक, तार्किक एवं दार्शनिक व्यक्ति होते हैं। ये जीवन में चाहे किसी प्रकार का कार्य प्रारम्भ करें, इन्हें पूरी सफलता मिलती है और प्रत्येक क्षेत्र में वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग करते हैं। इनके कार्य अपने आप में महत्वपूर्ण होते हैं। जीवन के 28वें वर्ष से इनका भाग्योदय होता है तथा समाज में इनको विशेष सम्मान व यश प्राप्त होता है।

5. उद्गम : हृदय रेखा से

ये व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं। यद्यपि यह बात सही है कि इनका प्रारम्भिक जीवन जरूरत से ज्यादा कष्टमय होता है, परन्तु अपने प्रयत्नों से ये इतनी अधिक प्रगति कर लेते हैं कि लोग दांतों तले उंगली दबाते हैं। जीवन के 15 वर्षों बाद इनका सम्मान और यश अत्यन्त उच्च स्तर का हो जाता है। इनके कार्य चमत्कारपूर्ण ढंग से सम्पन्न होते हैं तथा जीवन में और मृत्यु के बाद भी इन्हें अक्षुण्ण यश मिलता है। परन्तु यदि यह रेखा मार्ग में ही टूट जाती है, तो जीवन में बदनामी का भी सामना करना पड़ता है।

- यदि दोनों हाथों में सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
- यदि सूर्य रेखा बिना कहीं से कटे हुए अपनी पूरी लम्बाई लिए हुए हो, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।
- छोटी सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन में परिश्रम एवं संघर्ष के बाद ही सफलता देने में सहायक होती है।

6. उद्‌गम : हर्षल क्षेत्र में

ऐसे व्यक्ति को जीवन में बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। न तो उसे जीवन में व्यवस्थित ढंग से शिक्षा मिलती है और न उसे जीवन में ऊंचा उठने में कोई सहायता देता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में जो भी उन्नति करते हैं, अपने प्रयत्नों से ही कर पाते हैं। फिर भी आगे चलकर ये व्यक्ति न्यायाधीश, बैरिस्टर या प्रमुख शिक्षा-शास्त्री बन जाते हैं। जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करते हैं तथा विदेश में प्रेम सम्बन्ध के कारण बदनामी भी सहन करनी पड़ती है।

7. उद्‌गम : चन्द्र पर्वत से

ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विवाह के बाद ही होता है। विवाह के बाद ये व्यक्ति आश्चर्यजनक रूप से प्रगति करते हैं। अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं, तथा अपने लक्ष्य तक पहुंचने की योग्यता जुटा लेते हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, सहृदय एवं रसिक होते हैं। शान-शौकत, दिखावा आदि इनको प्रिय होते हैं। ये अपने चारों ओर आडम्बर फैलाए रहते हैं।

8. उद्‌गम : मणिबन्ध से

ऐसे व्यक्तियों के जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, कीर्ति आदि का कोई प्रभाव नहीं रहता। ये व्यक्ति सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले तथा धर्म में पूरी आस्था रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के व्यापारी एवं सफल साहित्यकार होते हैं।

9. उद्‌गम : अनामिका के मूल से

यदि ऐसी रेखा स्पष्ट एवं लालिमा लिए हुए भी हो तो उस व्यक्ति का बचपन अत्यन्त सुखी होता है। उसके जीवन में धन, ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं रहती। जीवन में ऐसे लोगों को अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता, थोड़े से परिश्रम से ही सफलता मिलती रहती है। ऐसे व्यक्ति ऊंचे स्तर के व्यापारी होते हैं, परन्तु इनका सम्बन्ध निम्न स्तर के व्यक्तियों से अधिक होता है, जिससे इनका समाज में सम्मान कुछ कम ही होता है। परन्तु ये न तो समाज की परवाह करते हैं, न ही अपने ऊपर किसी प्रकार का अंकुश मानते हैं।

10. उद्‌गम : राहु क्षेत्र से

ऐसे व्यक्ति चतुर तथा उत्साही होते हैं। बात की मूल में ये तुरन्त पहुंच जाते हैं। सामने वाले व्यक्ति के चेहरे के भावों को देखकर ही उसके मन के भावों को पहिचान लेते हैं। जीवन में ये स्वतंत्र प्रकृति से बने रहते हैं। एक बार जो भी निर्णय ले लेते हैं, उस पर पूरा अमल करते हैं। ये श्रेष्ठ मित्र होते हैं।

11. उद्‌गम : हथेली के मध्य भाग से

ऐसे व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होते हैं, उनको जीवन में कई बार आकस्मिक धन लाभ होता है। समाज में भौतिक दृष्टि से इनके जीवन में कोई कमी नहीं होती, हर प्रकार से ये व्यक्ति सफल और सुखी कहे जाते हैं।

12. उद्‌गम : बुध पर्वत से

ऐसा कम ही व्यक्तियों के हाथ में देखने को मिलता है, परन्तु ऐसे व्यक्ति सफल अभिनेता होते हैं तथा अपनी कला के माध्यम से अतुल धन व यश प्राप्त करते हैं।

सूर्य रेखा से सम्बन्धित अन्य तथ्य

1. लम्बी, स्पष्ट और सीधी रेखा व्यक्ति को यश, मान, प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक होती है।
2. यदि दोनों हाथों में यह रेखा स्पष्ट हो, तो व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।
3. यदि वह रेखा बिना कहीं से कटे हुए अपनी पूरी लम्बाई लिए हुए हो, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।
4. छोटी सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन में परिश्रम एवं संघर्ष के

- यदि शनि पर्वत से कोई रेखा निकलकर सूर्य रेखा को काटे, तो व्यक्ति के जीवन में आर्थिक अभाव होता है।
- यदि हृदय रेखा से निकलकर कोई रेखा त्रिशूलवत बन कर सूर्य रेखा का स्पर्श करे, तो ऐसा व्यक्ति स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त करता है।
- यदि रेखा के अंत में द्वीप हो, तो वह व्यक्ति जीवनभर बीमारियों में ही घिरा रहता है।

बाद ही सफलता देने में सहायक होती है।

5. सूर्य रेखा जिस जगह से कट जाती है, आयु के उस भाग में वह व्यक्ति अपना व्यापार अथवा कार्य बदल लेता है।
6. यदि हथेली गहरी और सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का सही रूप से उपयोग नहीं हो पाता।
7. यदि रेखा पतली, फीकी हो, तो भी वह व्यक्ति अपनी कला का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाता।
8. यदि सूर्य रेखा के मार्ग में द्वीप का चिह्न हो, तो वह जीवन में दिवालिया होता है तथा उसको समाज में अपयश मिलता है।
9. यदि हथेली में बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और सूर्य रेखा गहरी हो, तो उस व्यक्ति के सम्बन्ध अत्यन्त ऊंचे स्तर के व्यक्तियों से होते हैं।
10. यदि सूर्य रेखा पर तारे का चिह्न हो, तो व्यक्ति अपनी कला से विश्वव्यापी सफलता प्राप्त करता है।
11. हथेली में जिस स्थान पर सूर्य रेखा सबसे अधिक गहरी हो, तो आयु के उस भाग में व्यक्ति को विशेष धन लाभ कराती है।
12. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति पर बिन्दु का चिह्न हो, तो उसे जीवन में बहुत अधिक कष्ट उठाना पड़ता है और अंत में ही उसे सफलता मिलती है।
13. यदि सूर्य रेखा पतली हो, परन्तु स्पष्ट व सीधी हो तो व्यक्ति समृद्धिवान होता है।
14. यदि रेखा के अंत में नक्षत्र का चिह्न हो, तो उसे जीवन में राष्ट्रव्यापी सम्मान मिलता है।
15. यदि रेखा के प्रारम्भ एवं अंत में नक्षत्र का चिह्न हो, तो उसे जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।
16. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति कई छोटी-छोटी रेखाओं से हो, तो उसे जीवन में असफलता ही मिलती है।
17. यदि सूर्य रेखा की समाप्ति किसी तिरछी रेखा से हो, तो वह जीवन में भली प्रकार से प्रगति नहीं कर पाता।
18. यदि सूर्य रेखा के अंत में क्रास का चिह्न हो, तो व्यक्ति का अंत अत्यन्त दु:खमय होता है।
19. यदि सूर्य रेखा कई जगह से टूटी हो, तो व्यक्ति प्रतिभावान तो होता है, परन्तु प्रतिभा के माध्यम से उसे श्रेष्ठ धन लाभ अथवा उच्च सम्मान नहीं प्राप्त हो पाता।
20. सूर्य रेखा का न होना, बेकार का जीवन है।
21. यदि सूर्य रेखा पर वर्ग का चिह्न हो, तो उसे जीवन में कई बार अपमान सहन करना पड़ता है।
22. यदि इस रेखा पर चतुर्भुज का चिह्न हो, तो उसे शुरू में बहुत असफलता मिलती है पर अंत में सफल होता है।
23. यदि विवाह रेखा के द्वारा सूर्य रेखा कटी हुई हो, तो उसका गृहस्थ जीवन पूर्ण दुखमय होता है।
24. यदि इस रेखा के साथ कई और सहायक रेखाएं भी दिखाई दें, तो वह जीवन में आश्चर्यजनक प्रगति करता है।
25. यदि इस रेखा को तीन-चार रेखाएं काटती हों, तो वह जीवन में किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकता।
26. यदि शनि पर्वत से कोई रेखा निकलकर सूर्य रेखा को काटे, तो व्यक्ति के जीवन में आर्थिक अभाव होता है।
27. यदि हृदय रेखा से निकलकर कोई रेखा त्रिशूलवत बन कर सूर्य रेखा का स्पर्श करे, तो ऐसा व्यक्ति स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त करता है।
28. यदि रेखा के अंत में द्वीप हो, तो वह व्यक्ति जीवनभर बीमारियों में ही घिरा रहता है।
29. यदि अनामिका उंगली टेढ़ी-मेढ़ी हो, परंतु सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो उसे अपराधपूर्ण कार्यों से यश मिलता है।
30. यदि यह रेखा बार-बार टूट कर आगे बढ़ रही हो, तो वह अपने आलस्य के कारण सफल नहीं हो पाता।

(पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'बृहद हस्त रेखा' से साभार)

Dhanada Yakshini Sadhana

• Any Wednesday

The Divine key to wealth

Can you imagine life without wealth ? Sure the greedy craving for money has been criticised by all ancient texts, but the same texts state that one should have enough to lead a happy contented life. the texts go on to state that poverty is the worst curse and wealth is a boon that makes life happier, comfortable and easier. Earning enough wealth is not enough. One should also have the inclination to spend it in a proper manner. If all one's wealth goes waste in useless activities then wealth could prove to be more of a curse than a boon.

Everyone tries his or her best to acquire more and more wealth. But more important than acquiring wealth is making it flow continuously into one's life or giving it a permanence. Our Rishis prescribed that wealth should come from good means otherwise it goes waste in activities like gambling, womanising and drinking. It is easy to take to the wrong path and try to earn as much as one can in a short time but such quickly acquired gains are never permanent.

One should be able to earn in a manner that the work that one does also satisfies the soul. One should feel an inner joy. And if you have a feeling of guilt then know it that you are not getting wealth from the right means.

True wealth means being able to get it from a proper source, spend it in a right manner for creative purposes and for beautifying life. If used correctly wealth could make life a paradise and bring to one true joy of living. The very ancient Sadhana of Dhanada Yakshini is a ritual that makes this very thing possible in one's life. The ritual if tried with full faith makes new and righteous sources of wealth open up on their own and also bestows one with wisdom to spend the wealth in the right manner.

This Sadhana must be tried on a **Wednesday**.

Early morning have a bath and wear red clothes. Sit on a ret mat facing south. Cover a wooden seat with red cloth. On it place a picture of Sadgurudev and Lord Ganpati. Worship them by offering vermilion, red flowers and rice grains.

On a mound of rice grains in a plate place a **Rati Priya Dhanada Yantra**. Behind the Yantra or under it place the **Kamadev Gutika**. Then around the Yantra place **ten Lakshmi Sayujya Shakti Tantrokt Phals**. Take water in the right palm and speak thus-*I* (speak your name) ***am performing this Sadhana for the fulfilment of my wish to have wealth in life and may Gurudev and Lord Ganpati bestow success on me.***

Let the water flow to the floor. Offer rice grains and vermilion on the Yantra and the two Phals. Light a ghee lamp and incense. Then chant one round of Guru Manra. After this pray to the ten forms of **Dhanada Lakshmi** chanting thus. While chanting each Mantra offer vermilion and rice grains on a **Tantrokt Phal**.

Om Lakshmyei Namah, Om Padmaayei Namah, Om Padmaalayaayei Namah, Om Shriyei Namah, Om Hari Priyaayei Namah, Om Taaraayei Namah, Om Kamalaayei Namah, Om Chanchalaayei Namah, Om Abjaayei Namah, Om Lolaayei Namah.]

Thereafter chant five rounds of this Mantra with a **Rakta Varnniya rosary**.

Dham Shreem Hreem Rati Priye Swaahaa.

Do this daily for twenty one days. After the Sadhana drop the **Tantrokt Phals**. **Yantra** and **rosary** in a river or pond. This is a Sadhana that could bring about a wonderful transformation in your life and make you rich and prosperous beyond your imagination provided that it is done with full faith and devotion.

Sadhana articles- 600/-

Medha Sadhana

• **Any Thursday**
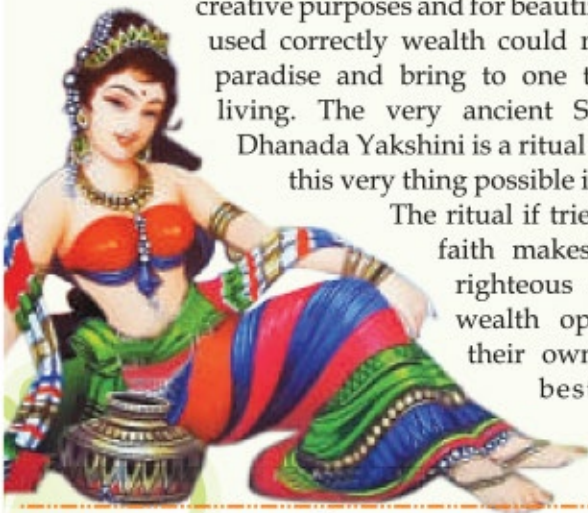
ENSURE TOTAL SUCCESS

This Sadhana comes as a boon and helps one develops and hone the skills that cound make one unparalleled in one's field. Try it and ensure success for yourself in this world.

Medha-a word denoting intelligence, wisdom and perfect acumen. Generally we relate intelligence only with studies. But it is a fact that to be successful in any field it is necessary to be quick in one's thinking and resourceful when it comes to generating new plans and ideas.

Saraswati the Goddess of learning is called Medhaa in the ancient texts and in Jain literature. Still there is a bit of difference in Saraswati Sadhana and Medha Sadhana. The former only brings gain of knowledge while the latter also makes one perfect and practical in every day life.

A person who has perfected Medha Sadhana need not be expert in Vedic knowledge or knowledge of the scriptures but he sure shall be able to excel in the field that he has chosen in his life. Medha Sadhana is a Sadhana that bestows intelligence, presence of mind, ability to make successful plans in seconds and achieve the desired success in them.

One might be a chartered accountant, engineer, doctor, politician, high ranking officer, teacher, journalist or in any other vocation this Sadhana comes as a boon and helps one develop and hone the skills that could make one unparalleled in one's field. For students desirous of good results in competitions too this Sadhana comes as a divine gift. It can help develop greater perspective, deep insight and power of concentration and the capability of working hard for hours without tiring out.

This amazing Sadhana can be tried on any **Thrusday** early in the morning. Rise early and have a bath. Wear pure white clothes and sit facing the east on a white mat. In a copper plate draw an eight petalled lotus with vermilion.

Then take **eight Gomati Chakras** and place one on each of the petals of the lotus. Offer vermilion, rice grains, flower petals on each Chakra. Then light a ghee lamp. In the centre of the lotus place a **Medhaa Yantra**.

Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then take water in the right palm and pledge thus- I (speak your name) am accomplishing this Medha Sadhana for success in this (name your field) sphere. May Goddess Saraswati bestow success upon me.

Let the water flow to the floor. Then with a **Kamalgatta rosary** chant 21 rounds of the following Mantra.

Om Ayeim Shreem Ayeim
Kamalvaasineyi Namah.

After the completion of the Sadhana drop all the articles in a river or pond.

This is a very wonderful boon from our Rishis who devised such rituals for the good of the common man. In fact children and young people should be encouraged to try this Sadhana for through it they could make very fast and amazing progress in their studies or sphere of work.

Another speciality of this particular Sadhana is that the powers of Saraswati (Goddess of learning and intelligence) and Lakshmi (the goddess of wealth) have been combined so that the Sadhak could progress not just academically but also materially. It is because our Rishis never wished the future generations who engaged in academic pursuits to be deprived of financial success. If tried with full faith and devotion and without any doubts this Sadhana could bring about a miraculous change in your thinking, your outlook any your approach to your work.

Sadhana Articles - 570/-

28 अगस्त 2021

गुरु शिष्य मिलन समारोह, भरूच

शिविर स्थल

मोढेश्वरी हॉल, श्रावण चौकड़ी रोड,
मटरिया तालाब के पास, भरुच

आयोजक मण्डल - 9825523924, 7990863387, 9558807927, 9879533475, 9898032172, 9978822007

29 अगस्त 2021

गुरु शिष्य मिलन समारोह, मुम्बई

शिविर स्थल

शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्री बल्लभदास मार्ग,
निअर गुरुकृपा होटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), मुम्बई

आयोजक मण्डल - 9967163865, 9768076888, 9867621153, 9869802170

30 अगस्त 2021

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

शिविर स्थल

गोविन्द विहार, फोगला आश्रम के सामने वाली गली, स्वामी हरिगोविन्दजी का लीला पाण्डाल-424, रमन रेती, वृन्दावन, मथुरा

आयोजक मण्डल—इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, रेवती रमनजी -9118484311 (वृन्दावन), शिवराम मीणाजी (महवा, राजस्थान)-9680714296, मदनमोहन शर्मा(मथुरा)-7906101467, अमितसिंह-9999708486, सत्यनारायण शर्मा (जयपुर)-9352010718, वासुदेव ठाकरे (विदर्भ, महाराष्ट्र), जुगलेशजी, अजयसिंह (लखनऊ), भोलेसिंह (लखीमपुर), शैलेंद्रसिंह (कानपुर), पुष्पेंद्रसिंह (मुरादाबाद), अनुराग शर्मा (अलीगढ़)-79999130379, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार महुआ (राजस्थान)-8058420359, 9530269440, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बलदेव(मथुरा)-प्रह्लाद पाण्डेय-8909848289, मुकेश पाण्डेय-8410435857, भूपेंद्रसिंह 9917671898, दिनेश सिकरवार 8218632167, कन्हैयालाल शर्मा, हरीशचंद्र वर्मा, देवदत्त शर्मा, पद्मादेवी शर्मा, भावना अग्रवाल, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार आगरा के समस्त गुरुभाई एवं गुरुबहन-8449226170, 7395070760, 9411206768, 9219487246, 9012909006, 9997536192, 7906017166, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार गंगापुरसिटी के समस्त गुरुभाई एवं गुरुबहन-8094777961, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार जयपुर के समस्त गुरुभाई एवं गुरुबहन-दामोदर शर्मा, रघु शर्मा, पूरणमल सैनी, गोपाल कुमावत, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)- राजेंद्र वैष्णव, फतेहपुर सिकरी (आगरा)- हरीशचंद्रजी, मुकेशचंद्र, पहिदा निखिल, सुरेंद्र पंडित, अभीटावा- लक्ष्मीनारायण परिहार, संजयकुमार परिहार, राजीवकुमार गुप्ता, डॉ. रामनरेश तिवारी, जितेनसिंह यादव, चंद्रभानसिंह, उदयीमानसिंह, रामविलास राठौर, मंजू पांडे, मनोरमा कश्यप, दिल्ली- बालवीरजी, आर.आर.गुप्ता, रवि यादव, रामआशीष सास्वत, बीणाशर्मा, गुरुग्राम- अमित बर्माजी, अलीगढ़- राजीव शर्मा, बबलू शर्मा, फिरोजाबाद-नितेश अग्रवाल, मेरठ-योगेश कुमार, कासगंज-अमितकुमार, ग्वालियर-रीना शर्मा, कायमगंज-अरुण शाक्य, नारायणपाल, भाईलाल, सुनीलपाल, कानपुर- महेंद्रसिंह यादव 9450227356, जयनयन मिश्रा, श्रीकांत गुप्ता, शैलेश सचान(गुड्डू), कैलाशनाथ वर्मा, चंद्रमाल पांडे, रामनिवास पाल, उमेश सोनी, हरीकिशन सोनी, नीलेशसिंह गौर, औरैया- आनंद यादव, कानपुर देहात- श्यामसिंह यादव, दबियापुर-तरुणसिंह यादव, बबेरू-सोनूजी, लखनऊ -नीलमसिंह, सतीश टंडन, रेनू टंडन, बी.के. शुक्ला, पंकज दुबे, संतोष नायक, जयंत मिश्रा, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार लखीमपुर के समस्त गुरुभाई एवं गुरुबहन, इलाहाबाद- सूर्यनारायण दुबे, अतीन्द्रसिंह, डॉ. गयाप्रसाद यादव, सदानंद राय, अजीत श्रीवास्तव, अविरल त्रिपाठी, सिद्धनारायण त्रिपाठी, मिर्जापुर- अनिल जयसवाल, वाराणसी-अजय जयसवाल, गुड्डू पांडे, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, सोनू दुबे, दिनेश सेठ, लल्लन शर्मा, रामाधार विश्वकर्मा, विनोद सेठ, मुगलसराय-सुनील सेठ, भोनू यादव, जयदेव घोष, शिव जयसवाल, मनोजपांडे, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार लालघाट एवं आजमगढ़-दुर्गाप्रसादमौर्य, विंध्यवासिनी राय, डॉ. एम.पी. चौरसिया, व्यास मिश्रा, डॉ. रामविशुन सिंह, आनंद तिवारी, रविशंकर यादव, रवि उपाध्याय, विंध्याचल पांडेय, डॉ. अनिरुद्ध पटेल, अनिल यादव, अजय राय, संतोष राय, संतोष मौर्य, राधेश्याम दुबे, डॉ. राजू पांडे, डॉ. शशांक, दयाशंकर तिवारी, हेमंत दुबे (बबलू), जयरामयादव, दिग्विजयनाथ दुबे, गोरखपुर- के.के. शुक्ला, फैजाबाद-आशीष मौर्य, अन्तर्राष्ट्रीय सि. सा. परिवार झारखंड-अनूप चेल (बुंडू), प्रमोद साहू(गोमिया), हरेंद्र महतो(रांची), टाटानगर- नीरज श्रीवास्तव, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार मध्यप्रदेश, खलघाट-डॉ. बाघसिंह पवार, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार मध्यप्रदेश- डॉ. सुभाष पटेल, श्रीरामभंवर गुप्ता, संतोष चक्रवर्ती, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार विदर्भ क्षेत्र के समस्त गुरुभाई एवं गुरुबहन

5 September 2021

GURU SISYA MILAN SAMAROH, BANGLORE

Address

Shri Yathiraja, Ramanuja Trust, No. 198, Sampige Road, Maileshwaram, BANGLORE - 560003

Contact No. : 8210257911, 9199409003, 96321 72538, 8660106621, 8762684986, 8660271419, 8123466062, 9342659091, 8884611220

19 सितम्बर 2021

गुरु शिष्य मिलन समारोह, रांची

शिविर स्थल

एकलव्य बैंक्विट हॉल, कटहल मोड़ और दलादली के बीच,
रिंची हॉस्पिटल से आगे सहदेव पेट्रोल पंप के नजदीक, रांची

अन्तर्राष्ट्रीय सि. सा. परिवार रांची के समस्त गुरु भाई एवं बहन-8210257911, 9199409003, 9304318211, 778300920, 9771602958, 8405800226, 9955079388, 9162155183, 9471736495, 8340654354, 9308382126, 9431359428, 6205232451, 977830188, 9771354572, 9304337091, 9162744266, 9031289958, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बुंडू के समस्त गुरु भाई एवं बहन-7717732131, 9771333701, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार तमाड़ के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार टाटानगर के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9234395840, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार विष्णुगढ के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9135939696, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार गोमिया के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9835393422, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार भूमरा पहाड़ क्षेत्र एवं चतरो चट्टा के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9430337501, 9771680648, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार फुसरो के समस्त गुरु भाई एवं बहन-8210176388, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार सिजुआ के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9835121114, 7004283749, अन्तर्राष्ट्रीय सि. सा. परिवार रजरप्पा के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बोकारो के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 8789219358, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार धनबाद के समस्त गुरु भाई एवं बहन-787094501, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बाघमारा एवं मधुबन के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार गुमला के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9113320509, 6201118390

नवार्ण दीक्षा

नवार्ण मंत्र मात्र अपने भीतर विराट शक्तियों को समेटे हुए है।

जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव के मुख से निकली अग्नि एकाकार होकर विराट् शक्ति पुंज बन गई और उसने दुर्गा महाकाली का रूप धारण कर लिया

इसी प्रकार शक्ति के सभी मंत्रों का पुंजीभूत स्वरूप **'नवार्ण मंत्र'** है, इसके प्रत्येक अक्षर में शक्ति के एक-एक रूप का विवेचन है, नवार्ण मंत्र जपने मात्र से शक्ति जाग्रत होती है, शरीर में ऊष्मा व्याप्त होने लगती है, रोम-रोम जाग्रत होने लगता है। ऐसे महामंत्र की साधना दीक्षा जब गुरुकृपा से प्राप्त होती है तो शक्ति का आह्वान होता ही है।

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।

योजना केवल 13, 14 एवं 15 अगस्त इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 August, 2021
Posting Date : 21-22 August, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : सितम्बर एवं अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
10 सितम्बर
08 अक्टूबर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
11-12 सितम्बर
09-10 अक्टूबर

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002